सुप्रभात
रांची, बुधवार
17.01.2024
नगर संस्करण । पेज : 12

धरती आबा की ऊर्जावान भूमि से प्रकाशित लोकप्रिय दैनिक

खबर मन्त्र

सबकी बात सबके साथ

khabarmantra.net पौष, शुक्ल पक्ष, षष्ठी/ सप्तमी संवत 2080 मूल्य : ₹ 3 । वर्ष : 11 । अंक : 185

06 श्रीराम मंदिर सांस्कृतिक पुनर्जागरण का अमृतकाल

न्यूज डायरी

भारत सेमीफाइनल में इटली को 5-1 से रौंदा

रांची। एफआइएच महिला हॉकी ओलंपिक क्वालीफायर 2024 में भारत ने इटली को 5-1 से हराकर सेमीफाइनल में जगह बना ली। पहले सेमीफाइनल में भारत का मुकाबला अब गुरुवार को जर्मनी से होगा। दूसरे सेफा में जापान की भिड़ंत अमेरिका से होगी। मंगलवार को भारत की ओर से उदिता ने दो, दीपिका, सलीमा टेटे और नवनीत ने एक-एक गोल दागे। पहले ही मिनट में उदिता के गोल से भारत ने बढ़त बना ली थी। (खेल पेज भी देखें)

कोलकाता से रांची आ रही बस से 18 लाख लूटे

रांची। कोलकाता से रांची आ रही शिवम बस में अपराधियों ने लूटपाट मचायी है। विरोध करने पर यात्रियों को जख्मी कर दिया है। हथियार के बल पर सब्जी व्यवसायियों से 18 लाख रुपये लूट लिये। घटना दशमफॉल थाना क्षेत्र में घटी है।

तट रक्षक बल ने 181 तीर्थयात्रियों को बचाया

काकद्वीप। भारतीय तट रक्षक बल (आईसीजी) ने मंगलवार को पश्चिम बंगाल के 24 परगना जिले में सागर द्वीप के पास काकद्वीप के नामखाना में नाव में फंसे लगभग 181 तीर्थयात्रियों को जलाशय से बाहर निकाल लिया है।

पश्चिम सिंहभूम में पांच किलो का आइइडी मिला

पश्चिम सिंहभूम। जिले में चल रहे नक्सल विरोधी अभियान में मंगलवार को गोइलकेरा थाना क्षेत्र के वनग्राम लेमसाडीह और बामियाबुरु जंगली इलाकों में सुरक्षाबलों ने एक पांच किलो का आईईडी बरामद किया। बाद में बम को उसी स्थान पर बम निरोधक दस्ता की मदद से नष्ट किया गया।

94 लाख गरीब परिवारों को मिलेंगे दो-दो लाख

पटना। नीतीश कुमार की अध्यक्षता में मंगलवार मंत्रिमंडल की बैठक में राज्य सरकार ने लोकसभा चुनाव के मद्देनजर बड़ा दाव खेला है। बिहार सरकार गरीबी रेखा से नीचे रह रहे 94 लाख परिवारों में एक-एक सदस्य को दो लाख रुपये अनुदान देगी।

सूर्यकुंड मेला जा रहे दो युवकों की हादसे में मौत

गिरिडीह। बगोदर थाना इलाके के जीटी रोड स्थित संतरुप्पी मोड़ में मंगलवार दोपहर सूर्यकुंड मेला जा रहे बाइक सवार दो युवकों की मौत हो गयी। मृतक डोंडलो का अजय कुमार (20) और सन्नी कुमार (19) शामिल हैं। वे बाइक से घर से हजारीबाग-बरकट्ठा के सूर्यकुंड मेला देखने जा रहे थे।

जम्मू में सीमा के पास से पाक नागरिक पकड़ाया

श्रीनगर/बारामूला। जम्मू में अंतरराष्ट्रीय सीमा के पास से सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) ने मंगलवार को एक पाकिस्तानी नागरिक को गिरफ्तार किया है। इस बारे में अधिकारियों ने बताया कि पाकिस्तानी नागरिक को मकवाल के पास धर दबोचा।

गहना आभूषण
सोना (बिक्री) : 58,900 रु./10 ग्राम
चांदी : 75,000 रु./प्रति किलो

तीसरी आंख

इडी के नाम पर हमें डरायें नहीं, हम लड़नेवाले लोग हैं : झामुमो

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। प्रवर्तन निदेशालय (इडी) के प्रति झामुमो का हमलावर रवैया जारी है। मंगलवार को झामुमो नेता सुप्रियो भट्टाचार्य ने इडी पर कई गंभीर आरोप लगाये। साथ ही इडी को सलाह दी कि उसे पारदर्शी होना चाहिए। उन्होंने आरोप लगाया कि झारखंड में लोकसभा चुनाव को प्रभावित करने के लिए भाजपा, केंद्रीय एजेंसियों का इस्तेमाल कर हमें डराने की कोशिश कर रही है। इडी के नाम पर डराया जा रहा है, मगर हमलोग डरनेवाले नहीं, लड़ने वाले लोग हैं। कहा कि सीएम के नाम आठवां समन का जिक्र मीडिया में आया, लेकिन सवाल है कि जब भी इडी समन जारी करती है तो नोटिस का मजमून कैसे पब्लिक डोमेन में आ जाता है। सुप्रियो ने कहा कि ऐसे में हमें इडी के खिलाफ राजनीतिक लड़ाई लड़ने को विवश किया जा रहा है।

भाजपा-इडी की साजिश से लोग आक्रोशित : झामुमो नेता ने कहा, इसका मतलब है कि इडी राज्य सरकार को बदनाम करने और कामकाज को रोकने के लिए ऐसा काम कर रही है। इससे लोगों में आक्रोश है। (शेष पेज 11 पर)

क्या बोले पार्टी नेता सुप्रियो भट्टाचार्य

- अब लोग भी आक्रोशित हो रहे हैं
- इडी को पारदर्शी होना होगा
- इडी एक पार्टी के रूप में काम कर रही है
- हमें भी अब राजनीतिक लड़ाई लड़नी होगी
- नोटिस का मजमून पहले कैसे बाहर आ जाता है

पत्रकार वार्ता करते झामुमो नेता सुप्रियो भट्टाचार्य।

बंधु के बयान को कांग्रेस का सपोर्ट

इडी के खिलाफ कांग्रेस नेता बंधु तिर्की के विवादित बयान पर राजनीतिक बयानबाजी शुरू हो गयी है। कांग्रेस ने बंधु तिर्की का समर्थन किया है। हालांकि प्रदेश उपाध्यक्ष काली चरण मुंडा ने बंधु के बयान पर टिप्पणी नहीं की। वहीं प्रदेश कांग्रेस के महासचिव सुरेश बैठा सह खूंटी जिला प्रभारी ने बंधु के बयान का समर्थन किया है। सुरेश बैठा ने बंधु के बयान पर कहा कि बंधु आंदोलनकारी नेता रहे हैं और सभी जाति और धर्म के अलावा आदिवासी मूलवासी के हितों को भली-भांति जानते हैं। ऐसे मुख्यमंत्री को बार-बार ईडी के द्वारा समन किया जाना उचित नहीं है।

चुनाव से पहले दलों को डराने का काम

उन्होंने कहा कि लोकसभा चुनाव से पहले राजनीतिक दलों को केंद्रीय एजेंसियां के माध्यम से डराया जा रहा है। केंद्रीय एजेंसियों की कार्रवाई यह बता रही है कि पहले धर्म के नाम पर, फिर संप्रदाय के नाम पर, उसके बाद इडी की कार्रवाई के नाम पर डराया जा रहा है। उन्होंने कहा कि राजस्थान और छत्तीसगढ़ में चुनाव आचार संहिता लागू होने के बाद इडी की कार्रवाई चलती रही, जिसका फायदा भाजपा को मिला।

अब चुनाव में भाजपा को जनता सबक सिखायेगी

उन्होंने कहा कि प्रदेश की जनता भाजपा की चाल समझ गयी है। चुनाव में उसे सबक सिखायेगी। इडी सिर्फ यहां भ्रम की स्थिति पैदा कर, विशेष राजनीतिक दल को फायदा पहुंचाने में लगी हुई है। सुप्रियो ने कहा, 14 जनवरी को इडी ने समन जारी किया, जबकि इस दिन सीएम काफी व्यस्त रहते है। यह जानते हुए भी इडी ने समन जारी किया। पूछा कि इडी जानकारी दे कि किसके पास से क्या बरामद हुआ है।

राम राज्य का अर्थ है सबको विकास का समान मौका देना : मोदी

जनता का एक-एक पैसा उनकी भलाई में लगे

एजेंसी

नयी दिल्ली। अयोध्या में श्रीराम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा से पहले 11 दिवसीय अनुष्ठान कर रहे पर चल रहे पीएम मोदी ने रामराज की कर व्यवस्था और सुशासन का हवाला देते हुए कहा कि कर व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए जिसमें जनता द्वारा दिये गये एक-एक पैसा उनकी भलाई में लगे। उनकी सरकार पिछले करीब 10 वर्षों से यही काम कर रही है। आज पूरा देश राममय है, उनकी भक्ति में सराबोर है, क्योंकि 22 जनवरी को अयोध्या में बहुप्रतीक्षित राममंदिर बनने जा रहा है। ऐसे माहौल में हमारे लिए यह जानना बहुत जरूरी है कि प्रभु श्रीराम का जीवन भक्ति के दायरे से कहीं ज्यादा है। प्रभु श्री राम शासन चलाने के उदाहरण थे। वे सुशासन के ऐसे प्रतीक थे, जो आज भी संस्थाओं के लिए प्रेरणा हैं, उक्त बातें पीएम मोदी ने मंगलवार को आंध्र प्रदेश के पलासमुद्रम में कही।

श्री राम ने सामाजिक जीवन की सीख दी : पीएम ने कहा कि प्रभु श्री राम ने इस बात की सीख दी है कि सामाजिक जीवन कैसे जीना है और देश का शासन कैसे चलाना है। वे मर्यादा पुरुषोत्तम थे और उन्होंने इस बात को स्थापित किया है। मोदी ने कहा कि देश में पुरानी सरकारों ने प्रोजेक्ट्स को अटकाने का किया, जिससे देश के साथ-साथ आम नागरिकों का भी नुकसान हुआ। पर आज परिस्थिति बदल चुकी है। बीते 10 वर्षों में हमारी सरकार ने लागत का ध्यान रखा है और योजनाओं को समय पर पूरा करने पर जोर दिया है। पीएम मोदी ने कहा कि पिछले 10 वर्षों में हमारी सरकार ने गरीबों, किसानों, महिलाओं और युवाओं को केंद्र में रखकर योजनाएं बनायी जिसकी वजह से हाशिए पर पड़ा यह वर्ग सशक्त हुआ। हमने इन लोगों को ध्यान में रखकर ही योजनाएं बनायी और उन्हें कार्यान्वित कराया।

लोकतंत्र में प्रजा ही राजा

पीएम मोदी ने केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड की सीमा शुल्क, अप्रत्यक्ष कर एवं नारकोटिक्स राष्ट्रीय अकादमी के यहां नव निर्मित परिसर का शुभारंभ करने के मौके पर कहा कि लोकतंत्र में राजा प्रजा होती है और सरकार प्रजा की सेवा का काम करती है। सरकार को पर्याप्त राजस्व मिलती रहे इसमें इस संस्थान की बहुत बड़ी भूमिका है। प्रभु श्रीराम सुशासन के ऐसे प्रतीक हैं जो इस संस्थान के लिए प्रेरणादायक बन सकते हैं। रामराज ऐसा लोकतंत्र था जहां हर नागरिक की आवाज सुनी जाती थी। रामराज निवासी के लिए कहा गया है कि अपना मस्तष्क ऊंचा रखो, धर्म को जानो, तुम रामराज के वासी हो। रामराज सुशासन के चार खंभों पर खडा था जहां बिना भय के हर कोई सर ऊंचा करके चलता था। जहां कमजोर की सुरक्षा होती थी और कर्तव्य सर्वोपरि था।

हजारीबाग, रामगढ़ में अंसारी के ठिकानों पर इडी का छापा

चर्चित कोयला कारोबारी इजहार अंसारी गिरफ्तार

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची/हजारीबाग। झारखंड के जाने-माने कोयला कारोबारी मोहम्मद इजहार अंसारी को प्रवर्तन निदेशालय (इडी) ने गिरफ्तार कर लिया है। इडी की टीम मंगलवार को सुबह से दिन भर हजारीबाग और रामगढ़ में उनके ठिकानों पर छापेमारी कर रही थी। छामारी के बाद देर शाम इडी की टीम ने उन्हें गिरफ्तार कर ली। गिरफ्तारी के बाद जांच अधिकारी उन्हें ले कर रांची आ गयी।

लाखों कैश व दस्तावेज मिले : जानकारी के अनुसार इजहार अंसारी के ठिकानों से 13 लाख नकदी के अलावा विभिन्न शेल कंपनियों और निवेश से संबंधित दस्तावेज मिले हैं। जांच टीम के अधिकारी इनके सत्यापन में लगे हैं। रामगढ़ के कुजू ओपी क्षेत्र में भी इजहार की फैक्ट्री व एक अन्य ठिकाना में भी छापेमारी की गयी थी। पूर्व में भेजे गये समन की अवहेलना कर रहे थे और पूछताछ में उपस्थित नहीं हो रहे थे। अब इडी उसे रिमांड पर लेकर पूछताछ करेगी। उनके पेलावल स्थित आवास पर इडी ने सुबह 6:30 बजे दस्तक दी थी। इस दौरान सीआरपीएफ ने पूरे घर को सुरक्षा घेरा में ले लिया था। उनपर आरोप है कि उन्होंने फर्जी कंपनियों के नाम पर कोयला कंपनियों से रियायती दर पर कोयला उठाया और उसे खुले बाजार में बेच दिया। पहले भी इडी ने उनके घर छापेमारी की थी और समन कर उन्हें रांची कार्यालय बुलाया था। पिछले तीन मार्च को घर से तीन करोड़ से अधिक की नकदी बरामद की थी। (शेष पेज 11 पर)

इडी ऑफिस नहीं पहुंचे पिंटू, दूसरा समन संभव

वहीं इडी के समन पर सीएम के प्रेस सलाहकार अभिषेक श्रीवास्तव उर्फ पिंटू मंगलवार को इडी दफ्तर नहीं पहुचे। इडी ने उन्हें पूछताछ के लिए समन भेज कर बुलाया था। तीन जनवरी को इडी ने साहिबगंज में हुए 1250 करोड़ के अवैध खनन मामले में झारखंड और बंगाल में एक दर्जन ठिकानों पर एक साथ छापेमारी की थी। इसी के बाद इडी ने पिंटू को समन जारी कर 16 जनवरी को पूछताछ के लिए बुलाया था। वहीं आर्किटेक्ट विनोद कुमार सिंह भी सोमवार को इडी दफ्तर नहीं पहुंचे थे। उन्होंने पत्र भेज कर समय मांगी है।

हाइकोर्ट ने केंद्र से पूछा अपील में क्यों हुई देरी

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। जिमखाना क्लब की जमीन पर बन रहे न्यूक्लियस मॉल को लेकर एकल पीठ के आदेश के खिलाफ यूनियन ऑफ इंडिया की ओर से कैप्टन सुष्मिता बनर्जी की अपील /(एलपीए) की सुनवाई झारखंड हाई कोर्ट में सोमवार को हुई। मामले में हाई कोर्ट के न्यायमूर्ति सुजीत नारायण प्रसाद की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने केंद्र सरकार से स्पष्टीकरण मांगा है। कोर्ट ने शपथ दायर कर पूछा है कि अपील दायर करने में क्यों देरी हुई। प्रतिवादी चैलिश रियल स्टेट की ओर से अधिवक्ता सुमित गड़ोदिया, अर्पण मिश्रा ने पक्ष रखा। मामले की अगली सुनवाई फरवरी माह के तीसरे सप्ताह में होगी।

दरअसल, मामले में हाइकोर्ट के न्यायमूर्ति रंगन मुखोपाध्याय की एकल पीठ ने प्रार्थी सेना के अधिकारियों की याचिका को 5 अप्रैल 2023 को खारिज कर दिया था। इसके खिलाफ सेना की ओर से खंडपीठ में अपील दायर की गई है। खंडपीठ ने बीते नवंबर माह में जिमखाना क्लब की जमीन पर बना रहे न्यूक्लियस मॉल के कंस्ट्रक्शन पर रोक लगा दी थी।

न्यूक्लियस मॉल मामला

बता दें कि हाईकोर्ट की एकल पीठ में सुनवाई के दौरान सेना के अधिकारियों की ओर से कहा गया था कि जिमखाना की जमीन पर जो मल्टीस्टोरी बिल्डिंग बन रही है, वह सेना की जमीन के बगल में है। नियम के अनुसार सुरक्षा के दृष्टिकोण से सेना की जमीन से 50 मीटर की दूरी पर बिल्डिंग का निर्माण कार्य होना चाहिए था। (शेष पेज 11 पर)

ज्ञानवापी के वजूखाने की होगी सफाई

- सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई के बाद दी मंजूरी

एजेंसी

नयी दिल्ली। वाराणसी में ज्ञानवापी परिसर में वजूखाने की सफाई की जायेगी। मंगलवार को सुप्रीम कोर्ट ने इसके लिए मंजूरी दे दी। टॉप कोर्ट ने हिंदू पक्ष की मांग पर यह आदेश दिया और कहा कि वहां पर साफ-सफाई का काम जिलाधिकारी (डीएम) की देखरेख में किया जाये। सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पीठ में मंगलवार को मामले की सुनवाई हुई। 3 जनवरी को याचिका पर उन्होंने जल्द सुनवाई का भरोसा दिया था। वजूखाना में मछलियों के मर जाने के बाद यह याचिका दाखिल की गयी थी।

हिंदू पक्ष ने अपनी याचिका में कहा कि वजूखाने की मछलियों की मौत 12 से 25 दिसंबर, 2023 के बीच हुई है। इस वजह से बदबू आना शुरू हो गया है। याचिका में कहा गया, 'वहां मौजूद शिवलिंग हिंदुओं के लिए बहुत पवित्र है। इसलिए उसे किसी भी तरह की धूल, गंदगी और मरे हुए जानवरों से दूर रखना चाहिए। उसकी सफाई होनी चाहिए। अभी वह मरी हुई मछलियों से घिरा हुआ है, जिसकी वजह से भगवान शिव को मानने वाले भक्तों की भावनाएं आहत हो रही हैं।

मथुरा शाही ईदगाह के सर्वे पर रोक

वहीं यूपी के मथुरा में शाही मस्जिद (विवादित परिसर) के सर्वे के आदेश पर मंगलवार को सुप्रीम कोर्ट ने रोक लगा दी। मामले की सुनवाई के दौरान टॉप कोर्ट ने कहा कि हाईकोर्ट याचिकाओं के सुनवाई योग्य होने के खिलाफ मस्जिद पक्ष की याचिका को सुने। इससे पहले, सर्वे से जुड़ा आदेश इलाहाबाद हाईकोर्ट ने दिया था, जबकि शाही ईदगाह कमेटी ने मथुरा की जिला अदालत से सभी मामले हाईकोर्ट ट्रांसफर किए जाने का विरोध किया है। 23 जनवरीको अब इस मसले पर अगली सुनवाई होगी।

भाजपा-संघ के अन्याय के विरुद्ध है कांग्रेस की न्याय यात्रा

गठबंधन में सीटों के बंटवारे में कोई दिक्कत नहीं : राहुल

एजेंसी

कोहिमा। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने मंगलवार को कहा कि इंडिया गठबंधन के साथ सीटों के बंटवारे को लेकर किसी तरह की दिक्कत नहीं है। सभी दलों के साथ आसानी से सीटों के बंटवारे का काम कर दिया जायेगा। कांग्रेस नेता ने कहा कि भाजपा की सरकार में देश की जनता के साथ अन्याय हो रहा है। इसलिए कांग्रेस की ओर से वह लोगों को न्याय दिलाने के लिए भारत जोड़ो न्याय यात्रा पर निकले हैं।

यात्रा का लक्ष्य, जनता को न्याय : श्री गांधी ने आज यात्रा के तीसरे दिन आयोजित संवाददाता सम्मेलन में कहा कि भाजपा और आरएसएस की अन्य के कारण देश में नफरत बढ़ रही है। चुनिंदा लोगों को फायदा दिया जा रहा है और लोगों को परेशान किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि पहले उन्होंने भारत जोड़ो यात्रा निकाली थी जो सफल रही। अब जनता की पीड़ा को देखते हुए भारत जोड़ो न्याय यात्रा निकाली गयी है। उन्होंने भारत जोड़ो न्याय यात्रा को एक वैचारिक यात्रा बताया और कहा कि यह यात्रा एक विचारधारा द्वारा कील जा रही सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक अन्याय के खिलाफ है। यात्रा से जनता को न्याय दिलाना ही उनकी यात्रा का लक्ष्य है। मणिपुर से यात्रा शुरू करने का फैसला इसलिए लिया कि इस राज्य के लोग संकट में हैं। मणिपुर में लोग किस हाल में है, उनके इस दर्द को उन्होंने लोगों से मिलकर महसूस किया है।

अयोध्या पहुंची 108 फीट लंबी अगरबत्ती

एजेंसी

अयोध्या। रामनगरी में 22 जनवरी को होने वाले राम मंदिर में रामलला की प्राणप्रतिष्ठा को लेकर देशभर में उत्सव का माहौल है। देश के कोने-कोने से राम मंदिर के लिए नायाब चीजें आ रही हैं। गुजरात के वड़ोदरा में एक ऐसी अगरबत्ती तैयार कर मंगलवार को अयोध्या पहुंची, जिसकी लंबाई 108 फीट है। यह अगरबत्ती गुजरात से 108 फीट लंबे रथ से अयोध्या करीब नौ दिनों में लाया गया। वहीं चित्रकूट में मंदाकिनी के जलकलश के साथ भरतकूप से 15 जनवरी को शुरू हुइ श्रीराम चरण पादुका 19 जनवरी को राम की नगरी अयोध्या पहुंचेगी।

19 को पहुंचेगी श्रीरामचरण चरण पादुका : चित्रकूट में मंदाकिनी के जल कलश के साथ भरतकूप से 15 जनवरी को शुरू श्रीराम चरण पादुका 19 जनवरी को राम की नगरी अयोध्या पहुंचेगी। पौराणिक कथाओं के अनुसार त्रेतायुग में माता कैकेयी की हठ पर राजा दशरथ के द्वारा भरत को अयोध्या की राजगद्दी तथा प्रभु श्रीराम जी को 14 वर्ष का वनवास दिया था। (शेष पेज 11 पर)

50 किलोमीटर तक सुगंध फैलेगी

अयोध्या नया घाट बस स्टेशन पर इस अगरबत्ती को मणिराम दास छावनी के महंत नृत्य गोपाल दास ने प्रज्वलित भी किया। इस अगरबत्ती को बनाने वाले कारीगर ने बताया कि यह जो अगरबत्ती प्रज्वलित की गयी है इसके अंदर से जो उर्जा निकल रही है यह 50 किलोमीटर तक की एरिया को कवर करेगी। हालांकि किन्ही कारणों से इस अगरबत्ती को राम जन्मभूमि परिसर में ले जाने की अनुमति नहीं मिल सकी। मंगलवार से अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा का 7 दिवसीय महाअनुष्ठान भी शुरू हो रहा है। इस कार्यक्रम के दौरान ये अगरबत्ती पूरी अयोध्या को महकायेगी। इसका वजन साढ़े तीन हजार किलो है। इसे बनाने में छह महीने का समय लगा है और इसकी कीमत 500000 बतायी जा रही है।

डोबो में 110 एकड़ में मेगा कैंपस बना रहा श्रीनाथ विवि

- नये कैंपस का भूमि पूजन संपन्न

सत्येन्द्र कुमार/ विशेष संवाददाता

जमशेदपुर। श्रीनाथ यूनिवर्सिटी का नया मेगा कैंपस सरायकेला-खरसावां जिले में तेजी से उभर रहे डोबो क्षेत्र में 110 एकड़ में विकसित किया जा रहा है। प्रथम चरण में यहां 70 एकड़ जमीन पर कैंपस का विकास किया जायेगा। इसके लिए कुलाधिपति सुखदेव महतो ने नौ कुंडीय गायत्री महायज्ञ के साथ भूमि पूजन किया। मेगा कैंपस में इंजीनियरिंग ब्लॉक, फार्मा ब्लॉक, एमबीए ब्लॉक एवं डिग्री कॉलेजों के ब्लॉक तो रहेंगे ही यहां 600 बेड का श्रीनाथ मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल का कैंपस भी विकसित किया जायेगा।

श्रीनाथ विवि पर नाज : सुखदेव महतो- श्रीनाथ विश्वविद्यालय के कुलाधिपति सुखदेव महतो ने **खबर मन्त्र** से कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में हम झारखंड में अब तक का सबसे बड़ा निवेश करने जा रहे हैं। वर्ष 2030 तक श्रीनाथ विवि सबसे बड़ी आधारभूत संरचना वाला निजी विवि बनाने का लक्ष्य है ताकि पूरे झारखंड के लोग इस पर नाज कर सकें। श्रीनाथ यूनिवर्सिटी के उच्च पदस्थ सूत्रों का कहना है कि पूरे कैंपस के विकास में करीब डेढ़ हजार करोड़ रुपये तक का निवेश करने की जरुरत पड़ेगी।

सीएम से मिले कोयला मंत्रालय के अपर सचिव

रांची। कोयला मंत्रालय के अपर सचिव एम नागराजू और सीसीएल के सीएमडी डॉ बी वीरा रेड्डी ने मंगलवार को सीएम हेमंत सोरेन से शिष्टाचार मुलाकात की। इस मौके पर सीसीएल के साथ टीवीएनएल के विस्तार पर चर्चा हुई। मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव विनय कुमार चौबे भी मौजूद थे।

अवर सचिव अनिल सिंह के घर चिपकाया इश्तेहार

रांची। घर छोड़कर फरार हेहल के पूर्व सीओ और वर्तमान में अवर सचिव अनिल सिंह के छपरा स्थित घर पर पंडरा ओपी क्षेत्र की पुलिस ने इश्तेहार चस्पा किया है। कार्रवाई की है। चस्पा इश्तेहार में कुर्की की भी चेतावनी दी गई है। बता दें कि पंडरा में आदिवासी जमीन को फर्जी तरीके से रजिस्ट्री कराने के मामले में उनके खिलाफ वारंट जारी हुआ था। सीएम हेमंत सोरेन ने पूर्व सीओ के खिलाफ कार्रवाई करने का आदेश दिया था।

सरकार एसएलपी दाखिल करेगी या फिर होगा चुनाव!

नगर निकाय चुनाव पर संशय बरकरार

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। नगर निकाय चुनाव पर एक बार फिर ग्रहण लगने जा रहा है। एक तरफ राज्य निर्वाचन आयोग ने चुनाव कराने के लिए सरकार को प्रस्ताव भेज दिया है, वहीं दूसरी ओर सरकार झारखंड हाई कोर्ट के फैसले के खिलाफ एसएलपी दाखिल करने की तैयारी में है।

बता दें कि झारखंड हाई कोर्ट की एकल पीठ ने पिछले दिनों तीन सप्ताह के अंदर सरकार को नगर निकाय चुनाव कराने को लेकर अधिसूचना जारी करने का आदेश दिया था। जिसकी समय सीमा 25 जनवरी को समाप्त हो रही है। नगर विकास विभाग से मिली जानकारी के मुताबिक ओबीसी आरक्षण ट्रिपल टेस्ट को लेकर सरकार कदम बढ़ा चुकी है और इस संबंध में न्यायालय के समक्ष हलफनामा भी दाखिल कर चुकी है इसलिए इसे पूरा किए बिना चुनाव कराना संभव नहीं है। इस संबंध में विधि सलाह भी ली गई है, जिसमें सुप्रीम कोर्ट के निर्देश का हवाला दिया गया है।

निर्वाचन आयोग तैयार, निर्णय लेना है सरकार को

इन सबके बीच राज्य निर्वाचन आयोग ने सरकार को हाई कोर्ट के आदेश की प्रति लगाकर चुनाव कराने संबंधी रिपोर्ट भेज दी है। इसमें फरवरी के अंत में ईवीएम के जरिए एक ही दिन में सभी 48 नगर निकायों में चुनाव कराने की तैयारी पूर्ण होने की बात कही गई है। सरकार की अनुमति के पश्चात इसकी औपचारिक घोषणा करने की तैयारी आयोग ने की है। राज्य निर्वाचन आयोग ने इस संबंध में सभी जिलों के उपायुक्तों को भी पत्र भेजकर निर्वाचन कार्य में होने वाले खर्च का ब्यौरा सरकार को देने का निर्देश दिया है।

एक तरफ अवमाननावाद दाखिल करने की तैयारी

नगर निकाय चुनाव को लेकर याचिका दाखिल करने वाले अरुण कुमार झा का मानना है कि सरकार यदि 25 जनवरी तक हाई कोर्ट के निर्देशानुसार सरकार राज्य के सभी 48 नगर निकाय क्षेत्रों में चुनाव कराने की घोषणा नहीं करती है तो अवमाननावाद दाखिल किया जाएगा। राज्य निर्वाचन आयोग चुनाव कराने के लिए तैयार है और इस संबंध में सभी उपायुक्तों को भी पत्र लिखा जा चुका है, ऐसे में सरकार यदि टाल मटोल का रवैया अपनाएगी तो हाई कोर्ट के फैसले का अवमानना माना जाएगा। उन्होंने कहा कि राज्य निर्वाचन आयोग मतदान केंद्र और मतदाता सूची तैयार कर चुका है। चुंकि यह चुनाव शहरी क्षेत्र में होगा इसलिए कोई ज्यादा व्यवधान नहीं होगा। लोकसभा चुनाव से पहले राज्य में शहर की सरकार बनाई जा सकती है, बशर्ते कि सरकार की मंशा साफ हो।

ट्रांसजेंडर के लिए बनेगा बोर्ड, जिलास्तर पर भी कमेटी होगी गठित : कृपानंद झा

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। महिला, बाल विकास एवं सामाजिक सुरक्षा विभाग के सचिव कृपानंद झा ने कहा कि ट्रांसजेंडर्स के उत्थान के लिए बोर्ड का गठन किया जायेगा। श्री झा मंगलवार को सूचना भवन में पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। उन्होंने कहा कि प्रत्येक जिला में उपायुक्त की अध्यक्षता में ट्रांसजेंडर कमेटी का गठन किया जायेगा। वर्तमान में ट्रांसजेंडरों को ओबीसी-टू का दर्जा दिया गया है। विभाग उनके उत्थान के लिए एक समेकित योजना तैयार कर रहा है।

श्री झा ने कहा कि सर्वजन पेंशन योजना के तहत राज्य में कुल नौ योजनाएं चलाई जा रही हैं। इनमें तीन योजनाएं केन्द्र संपोषित हैं। छह योजनाएं राज्य सरकार द्वारा संचालित हैं। उन्होंने कहा कि पेंशनधारियों को ससमय लाभान्वित किया जा सके, इसके लिए सरकार ने अलग से ₹100 करोड़ का रिवॉल्विंग फंड का इंतजाम किया है। चार वर्षों में राज्य के पेंशनधारियों में 82 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। 2023 में आपके अधिकार, आपकी सरकार, आपके द्वार कार्यक्रम के तहत कुल 6 लाख 56 हजार से ज्यादा पेंशन के आवेदन प्राप्त हुए हैं। 50 से 60 आयु वर्ग की एससी-एसटी एवं महिलाएं भी अब वृद्धावस्था पेंशन की पात्र होंगी।

उन्होंने बताया कि राज्य में सावित्रीबाई फुले किशोरी समृद्धि योजना के तहत ड्रॉप आउट बच्चियों को प्रोत्साहित करने के लिए और उन्हें शिक्षित बनाने के लिये 2023-24 में अब तक 6 लाख 21 हजार लाभार्थियों को योजना से लाभान्वित किया गया है।

6850 आंगनबाड़ी केन्द्रों को किया जायेगा विकसित : श्री झा ने बताया कि राज्य में कुल 378 हजार 432 आंगनबाड़ी केन्द्रों में से 6850 केन्द्रों को सक्षम आंगनबाड़ी केन्द्र के रूप में विकसित किया जायेगा। साथ ही 29 हजार से ज्यादा सेविकाओं को स्मार्ट मोबाइल उपलब्ध कराया जायेगा। उन्होंने बताया कि विभाग द्वारा 10 हजार से ज्यादा आंगनबाड़ी केन्द्रों के भवन का निर्माण डीएमएफटी-सीएसआर फंड के तहत कराने की योजना है। इन केन्द्रों में एलपीजी सिलेंडर, वाटर प्यूरीफायर और स्मार्ट टीवी जैसी सुविधा दी जायेगी। मानदेय को लेकर कहा कि आंगनबाड़ी सेविकाओं के लिए 9500 रुपये प्रतिमाह तथा सहायिकाओं के लिए 4750 रुपये प्रतिमाह निर्धारित किया गया है। इसके अलावा प्रतिवर्ष क्रमशः 500 रुपये और 250 रुपये मानदेय वृद्धि का प्रावधान भी किया गया है। सेविकाओं और सहायिकाओं की सेवानिवृत्ति की उम्र बढ़ाकर 62 वर्ष कर दी गई है। राज्य में विधवा पुनर्विवाह पर सरकार की ओर से ₹2 लाख की आर्थिक राशि दी जायेगी।

श्री झा ने बताया कि चालू वित्त वर्ष में 11 हजार 880 कन्याओं को विवाह पर आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई गयी है। राज्य में 6 लाख गर्भवती महिलाओं को लाभान्वित करने के लिए योजना शीघ्र प्रारंभ करने की कार्यवाही की जा रही है। वहीं, बाल कल्याण के तहत विषम परिस्थितियों में रह रहे बच्चों के संरक्षण और देखभाल के लिए बच्चों को 4 हजार रुपये प्रति बच्चा स्पॉन्सरशिप उपलब्ध कराया जा रहा है। अब तक यह लाभ 4 हजार 497 बच्चों को यह दिया जा चुका है। विधि के उल्लंघन में लिप्त बच्चों के मामलों के निपटारा हेतु सृजित किशोर न्याय बोर्ड को बढ़ाकर 26 किया गया है।

जल्द भरी जायेंगी रिक्तियां

विभाग के अधीन बाल विकास परियोजना के रिक्त पदों में विरुद्ध 64 पदों पर तथा महिला पर्यवेक्षिकाओं के रिक्त पदों के विरुद्ध 444 पदों पर नियुक्ति संबंधी कार्रवाई की जा रही है। इन रिक्त पदों को भरने के लिए जेपीएससी और जेएसएससी की सहायता ली जायेगी। इस अवसर पर कई विभागीय पदाधिकारी उपस्थित थे।

भाजपा नेत्री ने बीजेपी की योजनाओं को बंद करने का लगाया आरोप

झामुमो सरकार चार वर्षों तक जनता की आंखों में धूल झोंकती रही: लुईस मरांडी

- राज्य महिला आयोग का गठन नहीं कर सकी राज्य की गठबंधन सरकार
- भाजपा सरकार में महिलाओं के लिए शुरू हुई कल्याणकारी योजनाओं को किया बंद
- सरकार में 6000 से ज्यादा बहन बेटियों के साथ हुई दुष्कर्म की घटना

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। पूर्व मंत्री लुईस मरांडी ने कहा कि 4 वर्षों में जनता के बीच जिस तरह से आंख में धूल झोंककर राज्य की झामुमो नेतृत्व वाली गठबंधन सरकार सत्ता में आयी है। लुईस मरांडी मंगलवार को पार्टी मुख्यालय में पत्रकारों से बातचीत कर रही थीं। उन्होंने कहा कि गठबंधन सरकार में समाज कल्याण विभाग में आंगनबाड़ी केंद्र की सेविका-सहायिका को किसी भी तरह का यूनिफार्म उपलब्ध नहीं कर पाई। उन्होंने कहा कि आज कुपोषण दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है। रघुवर दास की सरकार में पोषण सखी का नियुक्तियां हुई थी और वे सभी अपनी सेवाएं भी दे रही थीं। लेकिन झामुमो सरकार आयी और उन्होंने पोषण सखी की नियुक्तियां को रद्द कर दिया। उन्होंने कहा कि रघुवर सरकार में मुख्यमंत्री सुकन्या योजना शुरू हुई थी उसे इस सरकार सिर्फ नाम बदलकर सावित्री बाई फुले योजना कर वाहवाही लूटी रही है। रघुवर सरकार में 0 वर्ष से ऊपर के कक्षा तक पैसा देने का प्रवधान था लेकिन हेमन्त सरकार ने सिर्फ 8वीं कक्षा से ऊपर तक को पैसा देने का काम कर रही है। यह तो उन गरीब परिवार के बच्चों के साथ अन्याय है। रघुवर सरकार में बेटी के जन्म से लेकर 12वीं पास करने तक 30 हजार रुपया और 18 साल की आयु होने पर 10 हजार रुपये मिलते थे। भाजपा सरकार में 1 रुपए में महिलाओं के लिए 50 लाख तक की जमीन एवं मकान की रजिस्ट्री होती थी जिसे हेमंत सरकार ने बंद कर दिया। उन्होंने कहा कि हेमंत सरकार ने महिला आयोग का गठन तक नहीं किया।

भाजपा विधायक अपर्णा सेन गुप्ता ने कहा कि झामुमो नेतृत्व वाली गठबंधन सरकार में पिछले 4 वर्षों में छह हजार से अधिक महिलाओं के साथ दुष्कर्म हुआ। उन्होंने कहा कि हेमंत सरकार ने सत्ता में आने से कहा था कि महिलाओं की सुरक्षा के लिए अलग से बैंक खोलेंगे और 3 लाख की आबादी में महिला थाना खोलने की घोषणा की थी, लेकिन यह भी सिर्फ ख्वाली पुलाव निकला। उन्होंने कहा कि इस सरकार में कस्तूरबा स्कूल की स्थिति काफी दयनीय एवं दर्दनाक है। कस्तूरबा स्कूल में बढ़ रही बच्चियों के लिए मूलभूत सुविधा का अभाव है। ना वहां अच्छा पौष्टिक भोजन मिल पा रहा है और न ही पढ़ाई की सामग्री। सुरक्षा के लिहाज से सरकार की कोई योजना नहीं है। उन्होंने कहा कि इस सरकार से अपने घोषणा में गरीब महिलाओं को प्रत्येक महीना चूल्हा खर्च के रूप में 2000 रुपया देने का वादा किया था, लेकिन यह भी झूठा साबित हुआ। इस अवसर पर महिला मोर्चा अध्यक्ष आरती कुजूर उपस्थित थीं।

सीएम ईडी को घर बुलाते हैं और इधर झामुमो के नेता दे रहे धमकी: भाजपा

भाजपा के प्रदेश महामंत्री ने कहा- पश्चिम बंगाल से भी ज्यादा भयावह स्थिति उत्पन्न कर सकती है हेमंत सरकार

रांची। भाजपा के प्रदेश महामंत्री प्रदीप वर्मा ने झामुमो महासचिव सुप्रियो भट्टाचार्य के उस बयान पर कड़ी आपत्ति दर्ज की है जिसमें ईडी को धमकी दिया गया है। श्री वर्मा ने कहा कि एक तरफ मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन 8वीं नोटिस के बाद ईडी को पूछताछ केलिये अपने पास ही बुलाना चाहते हैं और दूसरी ओर उनकी पार्टी के वरिष्ठ नेता सुप्रियो भप्ताचार्य ईडी को धमकी भी दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि ऐसे में तो मुख्यमंत्री को कैबिनेट से यह भी निर्णय कर लेना चाहिये कि राज्य के किसी व्यक्ति को पूछताछ केलिये अधिकारी अपने ऑफिस में नही बुलायें। अधिकारी पूछताछ केलिये घर जायें। क्योंकि कानून के नजर में सब बराबर हैं। उन्होंने कहा कि जब अपराध केलिये सजा सबके लिये बराबर है तो फिर कानूनी प्रक्रिया भी बराबर होनी चाहिये।

शारदा ग्लोबल स्कूल में विन्टर कार्निवल यूफोरिया की धूम

बच्चों एवं अभिभावकगण ने उठाया भरपूर लुत्फ

राँची। 14 जनवरी 2024 शारदा ग्लोबल स्कूल में चिरप्रतिक्षित 'विन्टर कार्निवल यूफोरिया का आयोजन पूरे जोश एवं उत्साह से सम्पन्न हुआ जिसमें विद्यालय एवं विद्यालय से इतर छात्रों, बच्चों एवं अभिभावकगण ने कलरफुल गेम स्टॉल्स, राइड्स, स्पोर्ट एक्टीविटिज, रैम्पवॉक, फोटो बूथ, टैटू स्टॉल फोटो शूट के साथ-साथ लजीज व्यञ्जनों के साथ-साथ पतंगबाजी का जमकर आनन्द उठाया तथा अभिभावकों ने इनमें हिस्सा लेकर अपनी बचपन की यादों को ताजा किया।

2024 का कैलेंडर जारी करते हुए अतिथिगण

वास्तव में ऐसे आयोजनों से छात्रों को दिमागी और रोचक प्रशिक्षण मिलता है जहाँ बच्चे खेल-खेल में ही जीवनपयोगी क्रिया कलापों से परिचित हो जाते हैं जैसे कूपन लेकर खेलना और खिलवाना उन्हें कॉमर्स की सीख देता है क्योंकि प्रैक्टिकली किया कार्य बच्चे जल्दी सीख जाते हैं क्योंकि वह जीवन्त स्तर पर किया जाता है।

चित्रकला के लिए चित्रकला में रूचि रखने वाले छात्रों के लिए कैनवास और रंग उपलब्ध थे जहाँ बच्चों ने अपने अन्दर की प्रतिभा को चित्रों एवं रंगों के माध्यम से कैनवास पर साकार रूप दिया।

पेंटिंग करते बच्चे

पतंगबाजी जो बहुत पुराना और मनोरंजक खेल है लेकिन समय के साथ-साथ विलुप्त होता जा रहा है इसके द्वारा ऊपर हवा में कैसे बैलेंस बनाकर पतंग उड़ाई जाती है बच्चों को यह सीखने को मिला।

इसी तरह तीरन्दाजी द्वारा बच्चों ने लक्ष्य साधने का अभ्यास किया। छात्रों ने स्कूल कैम्पस में उपलब्ध इस खेल में अति उत्साही बनकर भाग लिया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथियों में श्री करमवीर जी (संगठन महामंत्री, झारखण्ड स्टेट भाजपा), श्री विरन्ची नारायण (एम.एल.ए) बोकारो, श्री बालमुकुन्द सहाय (भाजपा झारखण्ड स्टेट महामंत्री) एवं डायरेक्टर इण्डियन बैंक रहे, इसके अतिरिक्त विद्यालय के चेयरमैन श्री संजय शारदा, डायरेक्टर श्री दीपक बंका तथा अनुज रंजन, विद्यालय की डायरेक्टर एकेडमिक्स डॉ० (श्रीमती) रंजना स्वरूप, प्राचार्या महोदया जसमीत कौर, श्रीमती दीपा बंका तथा शिक्षकवृन्द उपस्थित थे।

अतिथिगण ने छात्रों के सभी स्टॉल्स का भ्रमण किया तथा स्टॉल्स की सजावट एवं उनके द्वारा आयोजित स्पोटर्स में भाग लेकर छात्रों की प्रशंसा तथा उत्साहवर्धन किया।

ट्रिक एंड ट्रिट

अतिथियों ने कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए कहा कि शारदा ग्लोबल स्कूल छात्रों को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से परिचित करवा रहा है जहाँ एक ही जगह छात्र ज्ञान, विज्ञान खेल, चित्रांकन, तीरंदाजी आदि खेलों को रोचक ढंग से सीख रहे हैं ऐसा कार्यक्रम किसी और विद्यालय में देखने को नहीं मिलता है। यह अपने में बिल्कुल ही अनूठा है। वास्तव में सही शिक्षा वही है जो जीवन के लिए उपयोगी हो।

डायरेक्टर दीपक बंका द्वारा मुख्य अतिथि करमवीर सिंह को मोमेंटो प्रदान करते हुए

विद्यालय के चेयरमैन श्री संजय शारदा, डायरेक्टर श्री दीपक बंका एवं श्री अनुज रंजन ने भी आयोजन की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह विद्यालय की डायरेक्टर एकेडमिक्स डॉ. (श्रीमती) रंजना स्वरूप एवं प्राचार्या महोदया श्रीमती जसमीत कौर का उचित एवं दूरदर्शिता का ही परिणाम है कि यहाँ के छात्र सही निर्देशन एवं मार्गदर्शन में न केवल शिक्षण बल्कि अन्य क्षेत्रों में भी नए-नए कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं।

डायरेक्टर दीपक बंका द्वारा बोकारो एमएलए बिरंची नारायण को पुष्पगुच्छ भेंट करते हुए

डायरेक्टर दीपक बंका द्वारा बाल मुकुन्द सहाय को मोमेंटो प्रदान करते हुए

तीरदांजी का आनन्द उठाते अभिभावक

बोकारो एमएलए बिरंची नारायण बैलुन शुट करते हुए

स्ट्राईक गेम का लुत्फ उठाते हुए अभिभावक

मिक्की जंपिंग का आनन्द उठाते बच्चे

ADMISSIONS OPEN - 2024-25

CLASS PRE-NURSERY TO IX AND XI

HOSTEL FACILITY AVAILABLE FOR BOYS FROM CLASS 3 ONWARDS

आज से बारिश के आसार, कोहरे को लेकर अलर्ट

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। कड़ाके की ठंड और शीतलहर के बीच झारखंड में आज से मौसम फिर बदलेगा। 17 और 18 जनवरी को राज्य के विभिन्न हिस्सों में बारिश की संभावना है। मौसम विभाग की मानें, तो पूर्वी और पश्चिमी सिंहभूम, सरायकेला, सिमडेगा, रांची, बोकारो, गुमला, हजारीबाग, खूंटी, रामगढ़, देवघर, धनबाद, दुमका, गिरिडीह, गोड्डा, जामताड़ा, पाकुड़ और साहिबगंज जिले में कहीं-कहीं हल्के दर्जे की बारिश हो सकती है। 19 जनवरी तक घने कोहरे को लेकर अलर्ट जारी किया गया है। हालांकि 22 जनवरी तक कोहरे से राहत नहीं मिलने वाली है।

घने कोहरे को लेकर येलो अलर्ट जारी

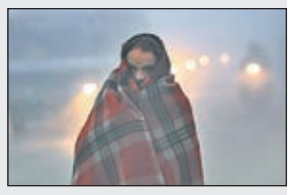

झारखंड में 17 से 19 जनवरी तक मध्यम से घने कोहरे की संभावना है। इसे लेकर येलो अलर्ट जारी किया गया है। आज और कल राज्य के उत्तरी भाग में कहीं-कहीं मध्यम से घने कोहरे की संभावना है। 19 जनवरी को राज्य में कुछ स्थानों पर मध्यम से घने कोहरे की संभावना है। सुबह में कोहरा या धुंध और बाद में आसमान मुख्यत: साफ और मौसम शुष्क रहेगा। वहीं 21 व 22 जनवरी की सुबह में कोहरा या धुंध और बाद में आसमान मुख्यत: साफ रहेगा। मौसम शुष्क रहने की संभावना है।

पिछले 24 घंटे में झारखंड में शुष्क रहा मौसम

पिछले 24 घंटे में झारखंड में मौसम का मिजाज शुष्क रहा। राज्य के पूर्वी भाग में कहीं-कहीं हल्के से मध्यम दर्जे का कोहरा देखा गया। पश्चिमी भाग में कहीं-कहीं शीतलहर चली। सबसे अधिक उच्चतम तापमान 27.4 डिग्री सेल्सियस चाईबासा में दर्ज किया गया, जबकि सबसे कम न्यूनतम तापमान 03.1 डिग्री सेल्सियस गुमला में रिकॉर्ड किया गया।

धोनी ने अपनी दरियादिली से फिर जीता फैंस का दिल

जेएससीए में मौजूद सिपाही मनोज को दिया डेढ़ लाख रुपये का मोबाइल

कुबेर सिंह

रांची। कैप्टन कूल महेंद्र सिंह धोनी ने अपने सभी चाहने वालों का एक बार और दिल जीत लिया है। धोनी ने जेएससीए स्टेडियम में पदस्थापित सुरक्षाकर्मी मनोज कुमार सिंह को डेढ़ लाख रुपये

को मोबाइल गिफ्ट किया है। मनोज कुमार धोनी को मशीन से बॉलिंग करवाते हैं। इसके पूर्व ऑस्कर विनिंग डॉक्यूमेंट्री द एलिफेंट व्हीस्पर्स के स्टारकास्ट बोमन और बेली से मुलाकात कर दोनों को एक बेहद खास जर्सी सौगात में दे दी। जिसका फोटो चेन्नई सुपरकिंग्स के आधिकारिक पेज पर भी डाला गया था।

द एलिफेंट व्हिस्परर्स टीम से मिले धोनी

कैप्टन कूल धोनी की फोटो बोमन और बेली के साथ काफी ज्यादा वायरल हो रही है, लोग धोनी के जेस्चर की बेहद ज्यादा प्रशंसा कर रहे हैं। एक यूजर ने लिखा, धोनी एक ही दिल को कितनी बार जीतोगे। आपको बता दें कि द एलिफेंट व्हिस्परर्स को ऑस्कर में सर्वश्रेष्ठ डॉक्यूमेंट्री के पुरस्कार से सम्मानित गया है। इस फिल्म की कहानी बोमन और बेली के ऑर्फन हाथी की है। जहां इस फिल्म में दिखाया गया है कि किस प्रकार दोनों अपने हाथी की देखरेख करते हैं। साथ ही उसे अपने बच्चे की तरह प्यार करते हैं। आपको बता दे कि जानवर और इंसान के मध्य एक ब्यूटीफुल बांड को इस फिल्म में दर्शाया गया है। ये भारत की पहली ऑस्कर विनिंग सर्वश्रेष्ठ डॉक्यूमेंट्री फिल्म है।

पांच लाख दीया और राम ध्वज का वितरण किया जायेगा : संजय सेठ

22 जनवरी को लोगों से दीपावली मनाने की अपील

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। सांसद संजय सेठ ने मंगलवार को अपने आवास पर 1000 लोगों के बीच दीया बाती और राम ध्वज का वितरण किया। उन्होंने कहा कि पूरे रांची लोकसभा में प्रत्येक पंचायत, वार्ड में 5 लाख दीया और रामध्वज का वितरण किया जायेगा।

संसद सेठ ने कहा कि 500 वर्षों के बाद भगवान श्री राम का मंदिर बनकर तैयार है। 500 वर्षों के इंतजार के बाद यह शुभ घड़ी आई है। हमारे कितने पूर्वजों के बलिदान के बाद हम लोग सौभाग्यशाली हैं कि हम लोगों के सामने भगवान राम विराजमान होंगे। सांसद सेठ ने कहा 22 तारीख को स्लम एरिया के लोग भी प्रभु राम के मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा के दिन अपने-अपने घरों में रामध्वज और दिया जलायें। इसी उद्देश्य के साथ दिया बाती और राम ध्वज का वितरण किया जा रहा है।

इस अवसर पर सत्यनारायण सिंह, रोशनी खलखो, सुबेश पांडे, संजय पोद्दार, मंटू केसरी, सतीश सिंह, सुधीर सिंह, आलोक सिंह, सोनू श्रीवास्तव, पीयूष कुमार, राजकुमार साहू, देवेंद्र होता, अरुण साहू माला कुमारी, सोनी कुमारी, कुमुद झा, राजेश प्रसाद, प्रदीप सिंह, अभय कुमार उपस्थित थे।

उपायुक्त ने जिला शिक्षा स्थापना समिति की बैठक की

प्रारंभिक विद्यालय के शिक्षकों को नियुक्ति तिथि से ग्रेड-1 की स्वीकृति

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। डीसी सह अध्यक्ष जिला शिक्षा स्थापना समिति राहुल कुमार सिन्हा की अध्यक्षता में मंगलवार को समाहरणालय में जिला शिक्षा स्थापना समिति की बैठक आयोजित की गयी। बैठक में जिला शिक्षा पदाधिकारी सह जिला शिक्षा अधीक्षक रांची मिथलेश केरकेट्टा और जिला शिक्षक स्थापना समिति के सभी पदाधिकारी और संबंधित सभी पदाधिकारी उपस्थित थे।

बैठक में लिये गये निर्णय : सेवा मुक्त शिक्षकों को पुनः बहाल करने के लिए तीन शिक्षकों को न्यायालय के आदेश के आलोक में बहाल करने का निर्णय लिया गया। शिक्षक और शिक्षिकाओं की अवकाश स्वीकृति प्रदान करने के क्रम में एक शिक्षिका के अवकाश की स्वीकृति

देने का निर्णय लिया गया। प्रारंभिक विद्यालयों के शिक्षक की सेवा संपुष्ट करने के संबंध में पांच शिक्षकों की सेवा संपुष्टि करने का निर्णय लिया गया।

प्रारम्भिक विद्यालयों के शिक्षकों को नियुक्ति तिथि से (ग्रेड-1) की स्वीकृति प्रदान की गयी। पिछले पांच वर्ष से अनुपस्थित शिक्षिका से दूसरा कारण पृच्छा करने का निर्णय लिया गया। आरोप मुक्त शिक्षक को विभागीय कार्रवाई से मुक्त करने से संबंधित निर्णय लिया गया। प्रशासनिक दृष्टिकोण से अन्यत्र प्रतिनियोजन करने के संबंध में एक शिक्षक को अन्यत्र प्रतिनियोजित करने का निर्णय लिया गया। पिछले 5 वर्ष से अनुपस्थित गैर अनुसूचित जिले से अनुसूचित जिले में अवमानना वाद सख्या-612/2022 सुप्रीम कोर्ट द्वारा पारित आदेश के आलोक में पुनः वाद दायर करने वाले 33 वादियों के स्थानांतरण से संबंधित निर्णय लिया गया।

अनुकंपा के आधार पर 3 नियुक्ति को मिली सहमति

उपायुक्त राहुल कुमार सिन्हा ने मंगलवार को अनुकंपा समिति के आधार पर नियुक्त को लेकर बैठक की। जिसमें सामान्य और चौकीदार के आश्रित से संबंधित मामलों की समीक्षा हुई। बैठक में जिला स्थापना उप-समाहर्ता रांची स्वेता वेद व सभी संबंधित अधिकारी उपस्थित थे।

जिला अनुकंपा समिति ने इन्हें दी नियुक्ति

(1) ग्रामीण पुलिस चौकीदार के अनुकम्पा में 1 की नियुक्ति की सहमति प्रदान की गयी।

(2) जिला अनुकम्पा समिति सामान्य में 2 की नियुक्ति की सहमति प्रदान की गयी।

भारत जोड़ो यात्रा से होगा बड़ा बदलाव : सुबोधकांत

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। कांग्रेस नेता राहुल गांधी की मणिपुर से 14 जनवरी को शुरू हुई भारत जोड़ो न्याय यात्रा आनेवाले फरवरी माह में झारखंड के 13 जिलों से होक गुजरेगी। इस यात्रा की तैयारी को लेकर प्रदेश कांग्रेस के साथ महानगर कांग्रेस भी रेस हो गयी है। इसके तहत रांची महानगर कांग्रेस ने विस्तारित कमेटी के साथ बैठक कर न्याय यात्रा की तैयारी और जिम्मेदारियों पर चर्चा की। इस बैठक में पार्टी के वरिष्ठ नेता व पूर्व केंद्रीय मंत्री सुबोधकांत सहाय, महानगर अध्यक्ष कुमार राजा, गौ सेवा आयोग के अध्यक्ष राजीव

रंजन प्रसाद के अलावा अन्य पदाधिकारी मौजूद रहे।

कार्यक्रम में पूर्व केंद्रीय मंत्री सुबोधकांत सहाय ने कहा कि मणिपुर से यात्रा की शुरूआत के दौरान वहां के लोगों का समर्थन राहुल गांधी को मिला। सड़क किनारे आम लोगों ने खड़े होकर पूरी यात्रा का स्वागत किया है। उन्होंने कहा कि देश में जिन लोगो की आवाज केंद्र सरकार द्वारा दबाने की कोशिश की जा रही है, उस आवाज को राहुल गांधी इस यात्रा के माध्यम से उठाने का काम रहे हैं। इस यात्रा के माध्यम से देश में बड़ा बदलाव आनेवाला है।

धर्म के नाम पर तोड़ने का काम कर रही है बीजेपी : कुमार राजा

इस मौके पर महानगर अध्यक्ष कुमार राजा ने कहा कि राहुल गांधी कि भारत जोड़ो न्याय यात्रा सबसे अधिक समय झारखंड में बिताएगी। जिसपर विस्तार से चर्चा की गई। जिस तरह से देश में संविधान बदलने की कोशिश की जा रही है। उसी को देखते हुए हमारे नेता ने न्याय यात्रा की शुरूआत की है। कन्याकुमारी से कश्मीर तक हुई भारत जोड़ो यात्रा से जिस तरीके से देश में बदलाव आया और लोगों का समर्थन मिला उसके बाद अब सामाजिक, आर्थिक न्याय कैसे लोगों को मिले, इसे ध्यान में रखकर न्याय यात्रा शुरू की गई है। हम सामाजिक न्याय की लड़ाई लड़ रहे है। तो दूसरी तरफ बीजेपी हमे धर्म के नाम पर तोड़ने का काम कर रही हैं।

एचईसी के मजदूर आज मुख्यालय करेंगे जाम

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। एचईसी बचाओ मजदूर जन संघर्ष समिति की आम सभा मंगलवार को रंथु लोहारा की अध्यक्षता में एफएफएफपी शेड में हुई। आम सभा में 18 माह से लंबित वेतन भुगतान, ठेका मजदूरों की पे स्लीप सितंबर माह से लंबित होने, बोनस भुगतान में हो रही देरी और ठेका मजदूरों को स्थायी करने पर चर्चा की गयी। निर्णय लिया गया कि 17 जनवरी को सुबह 8 बजे से एचईसी स्थित हेड क्वार्टर को मजदूर जाम करेंगे। मुख्यालय का घेराव शाम 5 बजे तक होगा।

भोजन व्यवस्था एचईसी बचाओ मजदूर जन संघर्ष समिति करेगी:

दोपहर 1 बजे मजदूर के लिए भोजन की व्यवस्था एचईसी बचाओ मजदूर जन संघर्ष समिति करेगी। यह आंदोलन तबतक जारी रहेगा, जब तक सभी समस्याओं का निर्णय न हो जाये। आम सभा को प्रकाश कुमार, एमपी रामचंद्रन, रामकुमार नायक, हरेंद्र प्रसाद यादव, मनोज पाठक,भवन सिंह, गिरीश चौहान ने संबोधित किया।

खबर एक नजर में

तत्कालीन कृषि मंत्री सत्यानंद भोक्ता की डिस्चार्ज अर्जी खारिज

रांची। 46.10 करोड़ रुपए के कृषि घोटाला मामले में तत्कालीन कृषि मंत्री सह वर्तमान नियोजन मंत्री सत्यानंद भोक्ता को जबदस्त झटका लगा है। एसीबी के विशेष न्यायाधीश प्रकाश झा की अदालत ने उनकी ओर से दायर डिस्चार्ज अर्जी खारिज कर दी है। मामले में जल्द ही उन पर आरोप तय किया जायेगा। आरोप गठन के दौरान सत्यानंद भोक्ता को व्यक्तिगत रूप से अदालत में मौजूद रहेंगे। अदालत ने छह जनवरी को अर्जी पर सुनवाई पश्चात आदेश सुरक्षित रख लिया था। अदालत ने मंगलवार को अपना सुरक्षित आदेश सुनाया। घोटाले को लेकर साल 2009 में निगरानी थाना में प्राथमिकी दर्ज की गई थी। प्राथमिकी दर्ज होने के बाद घोटाले की जांच की गई। अनुसंधान पदाधिकारी ने सत्यानंद भोक्ता, पूर्व मंत्री नलिन सोरेन, तत्कालीन कृषि सचिव वी जयराम, निस्तार मिंज समेत अन्य पर ठोस साक्ष्य के साथ अदालत में चार्जशीट दाखिल की थी। इस अदालत ने संज्ञान लेते हुये मुकदमे में आगे की कार्यवाही प्रारंभ की। मामले के आरोपियों को पुलिस पेपर सौंप दिया गया है। इसके बाद मामले में आरोप गठन किया जाना है। जिसको लेकर मंत्री सत्यनाद भोक्ता ने आरोप मुक्त करने के लिये आठ दिसंबर 2022 को ही डिस्चार्ज अर्जी अदालत में दाखिल की है। जिस पर सुनवाई एक साल में पूरी हो सकी है। मालूम हो कि 2003-05 में बीज और कृषि उपकरण की खरीद आवश्यक प्रक्रियाओं का पालन किये बिना मनपसंद कंपनी से किया गया था। इसकी जांच एसीबी ने किया था। उस जांच में 46करोड़ 10 लाख घोटाला का मामला सामने आया था। सभी पर सरकारी धन का दुरुपयोग कर घोटाला करने का आरोप है।

पीएलएफआई सुप्रीमो के सहयोगी निवेश कुमार से ईडी और तीन दिन करेगी पूछताछ

रांची। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) पीएलएफआई के सुप्रीमो दिनेश गोप के आर्थिक सलाहकार निवेश कुमार उर्फ राजवीर और तीन दिन पूछताछ करेगी। मंगलवार को पांच दिनों की पूछताछ की पुलिस रिमांड अवधि पूरी होने के बाद ईडी के विशेष न्यायाधीश दिनेश राय की अदालत में पेश किया गया। साथ ही, ईडी की ओर से कहा गया कि पूछताछ पूरी नहीं हो सकी और पूछताछ की जानी है। ईडी के आग्रह पर अदालत ने और तीन दिन पुलिस रिमांड की अवधि बढ़ा दी है। इसके बाद ईडी निवेश कुमार को पुनः अपने साथ ले गई। पूछताछ के बाद 19 जनवरी को अदालत में आरोपी को पेश किया जायेगा। जानकारी हो कि ईडी ने पिछले साल नवंबर महीने में दिनेश गोप के नजदीकी नौ लोगों के खिलाफ मनी लाउंड्रिंग का केस किया है। इसमें निवेश कुमार का भी नाम शामिल है। बताते चले कि छह जनवरी 2022 को धुर्वा बांध के पास से नक्सलरोधी अभियान में लगे सुरक्षाबलों और पुलिस ने नक्सली संगठन पीएलएफआई के मुखिला दिनेश गोप के नजदीकी आठ लोगों को लेवी की 77 लाख रुपए की राशि के साथ धर दबोचा था। इसी मामले को ईडी ने मनी लाउंड्रिंग के तहत केस दर्ज किया है।

राज्य सरकार ने हाईकोर्ट को बताया : दो पूर्व जस्टिस की पत्नी को सुविधा देने की प्रक्रिया शुरू

रांची। हाईकोर्ट के दो पूर्व जस्टिस (स्वर्गीय) की पत्नी को झारखंड सरकार से मिलने वाली सुविधा दिलाने के मामले में कोर्ट के स्वत संज्ञान की आंशिक सुनवाई झारखंड हाई कोर्ट में हुई है। मामले में राज्य सरकार की ओर से जवाब दाखिल किया गया। हालांकि मामले में राज्य सरकार के अधिवक्ता मंगलवार को कोर्ट के समक्ष उपस्थित नहीं हो सके, जिसे देखते हुए कोर्ट ने मामले की अगली सुनवाई 19 जनवरी निर्धारित की गई है। हाईकोर्ट की ओर से अधिवक्ता अनूप कुमार मेहता ने पैरवी की। अधिवक्ता अनूप कुमार मेहता ने बताया कि पैराग्राफ 7 में राज्य सरकार की ओर से दायर शपथ पत्र में बताया गया है कि दो पूर्व जस्टिस की पत्नी को सरकारी सुविधा दिलाने मामले में प्रक्रिया शुरू कर दी गई है, सरकार इस दिशा में काम कर रही है। हाईकोर्ट के एक्टिंग चीफ जस्टिस एस चंद्रशेखर की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने पिछले सुनवाई में राज्य सरकार से जवाब मांगा था। दरअसल, हाई कोर्ट के पूर्व जस्टिस (अब स्वर्गीय) प्रदीप कुमार एवं प्रशांत कुमार की पत्नी द्वारा हाईकोर्ट को लिखे गए पत्र को एक्टिंग चीफ जस्टिस एस. चंद्रशेखर की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने स्वतः संज्ञान के रूप में लेते हुए सुनवाई शुरू किया है। पत्र में पूर्व जस्टिस (स्वर्गीय) प्रदीप कुमार की पत्नी मीता कुमार तथा जस्टिस (स्वर्गीय) प्रशांत कुमार की पत्नी अलका श्रीवास्तव की ओर से झारखंड सरकार के संकल्प संख्या 9950 दिनांक 20 नवंबर 2015 में मिलने वाली सुविधा दिलाने का आग्रह किया गया है। मामले में एक्टिंग चीफ जस्टिस एस. चंद्रशेखर की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने राज्य के मुख्य सचिव एल. खियांग्ते, कार्मिक विभाग की प्रधान सचिव वंदना दादेल, वित्त सचिव अजय कुमार सिंह एवं हाई कोर्ट के रजिस्ट्रार जनरल को प्रतिवादी बनाया है।

श्रीश्याम मंदिर में सुंदरकांड श्री हनुमान चालीसा पाठ

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। हरमू रोड का श्री श्याम मंदिर में मंगलवार को 85वां श्री सुंदरकांड श्री हनुमान चालीसा के संगीतमय पाठ हुआ। श्री श्याम मित्र मंडल के द्वारा कार्यक्रम संपन्न हुआ। डॉ श्याम सुंदर नारनौली, गिरिजा नारनौली, विष्णु नारनौली, सरोज नारनौली, डॉक्टर आदित्य, डॉक्टर दिशा, अभिषेक, प्राची, नारनौली ने परिवार संग हनुमान जी महाराज की दिव्य अखंड पावन ज्योति प्रज्वलित करके सवामनी का महाप्रसाद अर्पित किया। श्रवण ढानढनिया ने चना प्रसाद की सेवा और केसरिया पेड़ा की सेवा पुष्पा देवी पोद्दार ने निवेदित की। पाठ वाचक मनीष सारस्वत, ओम शर्मा ने श्री सुंदरकांड का पाठ प्रारंभ किया। इस अवसर पर मंडल के अध्यक्ष सुरेश सरावगी, विश्वनाथ नारसरिया, श्रवण ढानढनिया, स्नेह पोद्दार, श्याम सुंदर जोशी, बिष्णु नारनौली, गौरव अग्रवाल मोनू आदि उपस्थित थे। बता दें कि 22 जनवरी को हरमू रोड स्थित श्री श्याम मंदिर में कार्यक्रम होगा।

उर्दू शिक्षकों का पद समाप्त हुआ तो अल्पसंख्यक कांग्रेस पूरे प्रदेश में आंदोलन करेगी : मंजूर अंसारी

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। प्रदेश कांग्रेस अल्पसंख्यक विभाग के अध्यक्ष मंजूर अंसारी ने झारखंड सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा उर्दू शिक्षकों के पद समाप्त करने के षड्यंत्र का पुरजोर विरोध किया है। उन्होंने अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी के महासचिव सह झारखंड प्रदेश प्रभारी गुलाम अहमद मीर से दिल्ली में मुलाकात कर इस मुद्दे को उठाया है। उन्होंने कहा कि उर्दू शिक्षकों के पदों को

समाप्त किया गया तो झारखंड अल्पसंख्यक कांग्रेस इसके विरोध में पूरे राज्य में आंदोलन करेगी।

श्री अंसारी ने बताया कि झारखंड प्रभारी ने इस मामले को गंभीरता से लिया है और उचित कार्रवाई करने का आश्वासन दिया है। प्रदेश प्रभारी से प्रदेश अध्यक्ष मंजूर अंसारी ने झारखंड लोकसभा चुनाव में दो टिकट अल्पसंख्यक समुदाय को देने की मांग रखा जिस पर प्रभारी द्वारा गंभीरता से विचार करने का आश्वासन दिया है।

वहीं इस संबंध में प्रदेश कांग्रेस अल्पसंख्यक विभाग के उपाध्यक्ष अब्दुल करीम अंसारी, संगठन महासचिव सह प्रवक्ता अख्तर अली और प्रदेश प्रवक्ता डॉ इलियास मजीद ने कहा है कि झारखंड राजकीयकृत प्रारंभिक विद्यालय शिक्षक प्रोन्नति नियमावली 2024 के बहाने उर्दू शिक्षकों के 3712 पदों को समाप्त करने का प्रयास किया जा रहा है। जिसका प्रदेश अल्पसंख्यक कांग्रेस विरोध करती है। नेताओं ने तत्काल इस काले नियमावली को समाप्त करने और शीघ्र ही 3712 उर्दू शिक्षकों की नियुक्ति की मांग की है।

पतरातू थर्मल पावर प्लांट से बिजली उत्पादन जुलाई तक शुरू होने की संभावना, एक यूनिट का काम पूरा

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। पतरातू विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड में बन रहे सुपर थर्मल पावर प्लांट से जुलाई तक बिजली उत्पादन करने की संभावना है। इस दिशा में पीवीयूएनएल की ओर से काम तेजी से किया जा रहा है। जुलाई के अंत तक यहां एक यूनिट से बिजली उत्पादन शुरू करने की तैयारी है। यूनिट एक में लगभग काम पूरा हो चुका है। प्रबंधन की ओर से प्लांट को सिर्फ अंतिम रूप दिया जा रहा है। जिसके बाद जल्द ही पावर प्लांट का ट्रायल किया जायेगा।

बता दें एनटीपीसी और पीवीयूएनएल साथ मिल कर

योजना पर काम कर रही है। जहां पांच पावर प्लांट का निमार्ण किया जा रहा है। प्रत्येक यूनिट से 800 मेगावाट बिजली उत्पादन का लक्ष्य है। पांच यूनिट बन जाने से पतरातू से कुल चार हजार मेगावाट बिजली का उत्पादन होगा। फिलहाल पहले चरण के तहत तीन यूनिट शुरू करने की योजना है। इसमें से भी जुलाई में एक यूनिट शुरू करने पर जोर दिया जा रहा है। जिससे राज्य में बिजली की कमी को पूरा किया जा सके। पावर प्लांट निमार्ण में आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल में किया जा रहा है। जिसमें पर्यावरणीय नुकसान को ध्यान में रखते हुए बिजली उत्पादन किया जाना चाहिये।

85 फीसदी बिजली झारखंड को

एनटीपीसी और पीवीयूएनएल के एमओयू शर्तों के अनुसार पावर प्लांट से उत्पादित कुल बिजली का 85 फीसदी बिजली झारखंड को दी जायेगी। ऐसे में अगर एक यूनिट से औसतन 750 मेगावाट बिजली उत्पादन किया जाता है तो इससे लगभग 670 मेगावाट बिजली राज्य को मिलेगी। जिससे राज्य को बिजली कटौती का सामना नहीं करना पड़ेगा। हालांकि पीवीयूएनएल का जोर है कि दिसंबर 2024 तक पहले चरण के तहत तीनों पावर प्लांट शुरू कर दिया जाये। साथ ही पावर एक्सचेंज से अतिरिक्त शुल्क देकर बिजली लेने की समस्या से भी उर्जा विभाग को मुक्ति मिलेगी।

रिजल्ट की मांग को लेकर जेएसएससी कार्यालय के बाहर धरने पर जेई अभ्यर्थी

अक्टूबर 2023 में ली गयी जेई की परीक्षा का परिणाम जारी करने की कर रहे मांग

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। झारखंड कर्मचारी चयन आयोग (जेएसएससी) कार्यालय के बाहर मंगलवार को जूनियर इंजीनियर (जेई) अभ्यर्थी धरने पर बैठे रहे। अभ्यर्थी अक्टूबर 2023 में ली गयी जेई परीक्षा का परिणाम जारी करने की मांग कर रहे थे। इससे पहले अभ्यर्थियों ने मुख्यमंत्री सचिवालय, राजभवन समेत कई सरकारी कार्यालयों में परीक्षा परिणाम जारी करने की मांग को लेकर आवेदन दे चुके हैं। इसके अलावा जेएसएससी कार्यालय को भी आवेदन दिया था। इसके बावजूद जेएसएससी ने रिजल्ट जारी नहीं किया। इसके बाद गुस्साये अभ्यर्थियों ने जेएसएससी कार्यालय के बाहर धरना पर बैठ गये।

दो बार जेएसएससी ने परीक्षा किया रद्द

बताते चलें कि जेएसएससी ने जुलाई 2022 में जूनियर इंजीनियर की परीक्षा ली थी। इसका प्रश्न पत्र लीक हो गया था। इसके बाद अभ्यर्थियों ने जमकर हंगामा किया था। फिर जेएसएससी ने परीक्षा रद्द कर दिया था। इसके बाद जुलाई 2023 में दोबारा परीक्षा ली गयी थी। लेकिन नियोजन नीति रद्द होने के कारण फिर से परीक्षा रद्द हो गया। इसके बाद अक्टूबर 2023 में परीक्षा ली गयी। लेकिन इसके परिणाम अब तक जारी नहीं किये गये हैं।

शराब पीकर पुलिसकर्मी ने बीच सड़क पर मचाया हंगामा, सस्पेंड

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। 15 जनवरी को एक बार फिर रांची पुलिस की छवि सुर्खियां बटोरते नजर आई। शराब पीकर अरगोड़ा इलाके में हंगामा करने और लोगों पर एके- 47 तानने के आरोप में दोषी कांस्टेबल तनवीर खान को एसएसपी चंदन कुमार सिन्हा ने तत्काल प्रभाव से सस्पेंड कर दिया है। आरोपी तनवीर खान एके- 47 के साथ अरगोड़ा थाना क्षेत्र के अशोक नगर गेट नंबर दो पर रात में हंगामा मचा रहा था। उसे पब्लिक घेर कर खड़ी हो गयी। इस बात की सूचना अरगोड़ा थाना पुलिस को दी गयी। पुलिस को लोगों ने बताया कि आरक्षी को अस्पताल ले जाया गया है, जहां डॉक्टरों ने बताया कि आरक्षी शराब का सेवन ज्यादा कर लिया है। तनवीर खान के बारे में छानबीन करने पर पता चला कि उसके इस कृत्य से न सिर्फ पुलिस की छवि धूमिल हुई है, बल्कि जिस प्रकार से आरक्षी वहां कर रहा था, उससे कोई बड़ी घटना भी घट सकती थी। मामले की जांच करने के बाद आरोपी आरक्षी को दोषी पाया गया और उसे तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया।

आज का राशिफल
16 जनवरी 2024

विक्रम संवत 2080, शक संवत 1945। ऋतु : शिशिर। सूर्य उत्तरायन। मास : पौष, पक्ष : शुक्ल, तिथि : षष्ठी 23:58 बजे समाप्त। नक्षत्र : उत्तराभाद्रपद 04:38 बजे प्रातः में समाप्त। योग : परिघ 20:01 बजे समाप्त। करण : कौलव 13:05 बजे तक, तदनंतर तैतिल 23.58 बजे समाप्त। चंद्रमा : मीन राशि में दिन-रात। दिशाशूल : उत्तर।

मेष : कसी से कहासुनी न हो यह ध्यान रहे। लाभकारी गतिविधियों में सक्रियता रहेगी। कुछ एकाग्रता की प्रवृत्ति बनेगी। कामकाज की व्यस्तता से सुख-आराम प्रभावित होगा। धर्म-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी। श्रेष्ठजनों की सहानुभूतियां होगी। भाई-बहनों का प्रेम बढ़ेगा। शुभांक-5-8-9

वृष : अपने हितैषी समझे जाने वाले ही पीठ पीछे नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे। कारोबारी यात्रा को फिलहाल टालें। परिवारजनों के सहयोग व समन्वय से काम बनाना आसान रहेगा। अपने काम आसानी से बनते चले जाएंगे। समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है। शुभांक-5-6-7

मिथुन : परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। प्रपंच में ना पड़कर काम पर ध्यान दीजिए। कल का परिश्रम आज लाभ देगा। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। आर्थिक लाभ हेतु किये गए कार्यों का तत्काल प्रतिफल मिलेगा। एकाकी वृत्ति त्यागें। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। शुभांक-1-2-5

कर्क : स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी। यात्रा का दूरगामी परिणाम मिल जाएगा। कामकाज में आ रही बाधा को दूर कर लेंगे। सुविधा और समन्वय बना रहने से कामकाज में प्रगति बनेगी। शुभांक-1-8-9

सिंह : लाभदायक कार्यों की चेष्टाएं प्रबल होंगी। बुद्धितत्व की सक्रियता से अल्प लाभ का हर्ष होगा। कुछ महत्वपूर्ण कार्य बनाने के लिए भाग-दौड़ रहेगी। लाभकारी गतिविधियों में सक्रियता रहेगी। रुका हुआ लाभ आज प्राप्त हो सकता है। मनोरथ सिद्धि का योग है। सुख-सुविधा में वृद्धि होगी। शुभांक-5-6-8

कन्या : स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। व्यापार में वृद्धि होगी। नौकरी में सहयोगियों का सहयोग प्राप्त होगा। पारिवारिक परेशानी बढ़ेगी। कुछ प्रतिकूल गोचर का क्षोभ दिन-भर रहेगा। सुबह की महत्वपूर्ण सिद्धि के बाद दिन-भर उत्साह रहेगा। संतोष रखने से सफलता मिलेगी। शुभांक-6-8-9

तुला : प्रसन्नता के साथ सभी जरूरी कार्य बनते नजर आएंगे। मनोरथ सिद्धि का योग है। सम्मान मिलेगा। प्रतिष्ठा बढ़ाने वाले कुछ सामाजिक कार्य संपन्न होंगे। कई प्रकार के हर्ष उल्लास के बीच मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। आमोद-प्रमोद का दिन होगा और व्यावसायिक प्रगति भी होगी। शुभांक-4-5-6

वृश्चिक : स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। व्यापार में स्थिति नरम रहेगी। शत्रुभय, चिंता, संताप को कष्ट, अपव्यय के कारण बनेंगे। संतोष रखने से सफलता मिलेगी। आगे बढ़ने के अवसर लाभकारी सिद्ध होंगे। नौकरी में स्थिति सामान्य ही रहेगी। लेन-देन में आ रही बाधा को दूर करने के प्रयास सफल होंगे। शुभांक-5-6-9

धनु : शैक्षणिक क्षेत्र में उदासीनता रहेगी। जीवनसाथी का परामर्श लाभदायक रहेगा। व्यापार व नौकरी में स्थिति अच्छी रहेगी। कल का परिश्रम आज लाभ देगा। कामकाज में आ रही बाधा दूर होगी। बाहरी और अंदरूनी सहयोग मिलता चला जाएगा। शुभ कार्यों का लाभदायक परिणाम होगा। शुभांक-6-7-8

मकर : लेन-देन में आ रही बाधा को दूर करने के प्रयास सफल होंगे। धार्मिक कार्य में समय और धन व्यय होगा। कारोबारी काम में बाधा बनी रहेगी। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। व्यापार में स्थिति नरम रहेगी। शुभ कार्यों की प्रवृत्ति बनेगी और शुभ समाचार भी मिलेंगे। संतोष रखने से सफलता मिलेगी। शुभांक-5-6-8

कुंभ : माता पक्ष से विशेष लाभ होगा। अपनी गतिविधियों पर पुनर्विचार करें। वैचारिक द्वन्द्व और असंतोष बना रहेगा। किसी सूचना से पूर्ण निर्णय संभव। सुख आरोग्य प्रभावित होगा। शुभ कार्यों की प्रवृत्ति बनेगी और शुभ समाचार भी मिलेंगे। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। शुभांक-1-6-7

मीन : प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। अवरुद्ध कार्य संपन्न हो जाएंगे। कामकाज की व्यस्तता से सुख-आराम प्रभावित होगा। धर्म-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी। श्रेष्ठजनों की सहानुभूतियां होगी। स्वविवेक से कार्य करें। सभा-गोष्ठियों में मान-सम्मान बढ़ेगा। माता पक्ष से विशेष लाभ होगा। शुभांक-3-5-7

28 को झारखंड प्रोन्नति नियमावली 2024 के ड्राफ्ट के प्रति जलायेंगे शिक्षक

- झारखंड प्रगतिशील शिक्षक संघ की घोषणा, पुरे राज्य मे जलायेंगे कॉपी
- 17 फरवरी को मुख्यमंत्री आवास के घेराव का निर्णय

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। झारखंड प्रगतिशील शिक्षक संघ के बैनर तले राज्य के शिक्षकों की बैठक गुगल मीट के माध्यम से हुई। इसमें सर्वसम्मति से 28 जनवरी को झारखंड प्रोन्नति नियमावली 2024 के ड्राफ्ट के प्रति जलाने का निर्णय लिया गया। बैठक में सभी जिलाध्यक्ष और राज्य कार्यकारिणी सदस्य शामिल थे। बैठक की अध्यक्षता प्रदेश अध्यक्ष आनंद किशोर साहू, जबकि संचालन प्रदेश महासचिव बलजीत कुमार सिंह ने किया। बैठक में झारखंड प्रारंभिक शिक्षक प्रोन्नति नियमावली 2024 को सिरे से खारिज किया गया। साथ ही इसका ड्राफ्ट जारी होने के बाद उत्पन्न विरोध के बिंदु पर चर्चा की गई। चर्चा के बाद झारखंड प्रगतिशील शिक्षक संघ ने चरणवद्ध आंदोलन करने की घोषणा की।

बैठक में आन्दोलन का रूपरेखा तय

18 जनवरी 2024 को सभी जिला कमिटी अपना प्रखंड एवं जिले के सभी शिक्षकों से सांगठनिक स्तर पर नियमावली के विरोध में मंतव्य एवं तार्किक सुझाव प्रेषित करना। 20 को राज्य के सभी जिला मुख्यालय में ऑनलाइन/ ऑफलाइन बैठक आयोजित कर आंदोलन की रूपरेखा को उपायुक्त एवं जिला शिक्षा अधीक्षक महोदय को ज्ञापन समर्पित करना। 22 को विधायक/कैबिनेट मंत्री से मिलकर ज्ञापन सौंपा जाएगा। 24 की दोपहर 12 से तीन बजे तक ट्वीटर अभियान चलेगा। अगर इसके बाद भी विभाग द्वारा नियमावली में आवश्यक संशोधन या नियमावली को निरस्त नहीं किया गया तो 28 नियामावली की ड्राफ्ट प्रति को जलाकर सोशल मीडिया कैंपेन की शुरूआत होगी। 31 को राज्यस्तरीय प्रेस कॉन्फ्रेंस होगा और 17 फरवरी को मुख्यमंत्री आवास का घेराव किया जायेगा।

आंदोलन की सफलता को बनाये गये प्रमंडलीय प्रभारी

आंदोलन की सफलता को प्रमंडल स्तर भी प्रभारी बनाये गये हैं। इनमें दक्षिणी छोटा नागपुर प्रमंडल के लिए सुमित कुमार नंद को, कोल्हान प्रमंडल के लिए ब्रजमोहन यादव को, उत्तरी नागपुर प्रमंडल के लिए प्रकाश हर्षवर्धन को, संथाल परगना के लिए राकेश कुमार को और पलामू प्रमंडल के लिए दिनेश कुमार शुक्ला को प्रभारी बनाया गया है।

किसान समाज की रीढ़ हैं : राज्यपाल

- झारखंड किसान सम्मान 2024 कार्यक्रम में किसानों के साथ थे गवर्नर

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन ने मंगलवार को होटल रेडिसन ब्लू एक हिन्दी दैनिक समाचार की ओर से आयोजित झारखंड किसान सम्मान 2024 कार्यक्रम में सभी को मकर संक्रांति की बधाई देते हुए कहा कि किसान समाज की रीढ़ हैं। किसान न सिर्फ अन्न उपलब्ध कराने में बल्कि देश की आर्थिक समृद्धि में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। उनकी कड़ी मेहनत और समर्पण के कारण ही हमें भोजन मिल पाता है। उनकी अमूल्य भूमिका के लिए हम सब उनके आभारी हैं। उनके सम्मान में कार्यक्रम का आयोजन सराहनीय है। राज्यपाल ने कहा कि तमिलनाडु में आज किसान दिवस मनाया जा रहा है। इस अवसर पर मैं किसानों के मध्य रहा करता था। संयोग से आज भी किसानों के मध्य रहने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। उन्होंने कहा कि किसान अपने मेहनत एवं योगदान से देश की सेवा कर रहे हैं। सरदार वल्लभ भाई पटेल ने संस्कृति के बारे में पूछे जाने पर कहा था- मेरी संस्कृति कृषि है। कृषि को बढ़ावा देने के लिए प्रधानमंत्री द्वारा पीएम किसान सम्मान निधि योजना के तहत किसानों को सम्मान राशि दी जा रही है। उन्होंने प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना को नए सिरे से परिभाषित किया है, जिसके कारण किसान लाभान्वित हो रहे हैं। प्रधानमंत्री जी की पहल पर ही वर्ष 2023 को इंटरनेशनल मिलेट् ईयर घोषित किया गया है। इससे किसानों को तो लाभ हो ही रहा है, लोगों का पोषण भी हो रहा है। राज्यपाल ने कहा कि समाचारपत्रों की यह अहम जिम्मेदारी है कि वे किसानों को बेहतर कृषि पद्धतियों, आधुनिक सिचाई प्रणाली एवं प्रोद्योगिकी इत्यादि की जानकारी प्रदान करें तथा सदैव उनके हित में खड़ा रहे। राज्यपाल ने 24 जिलों से आए 41 किसानों एवं बैंकर्स को सम्मानित किया। उन्होंने सभी को शुभकामनाएं भी दी।

22 जनवरी को राजकीय अवकाश की घोषणा करे राज्य सरकार : चंद्रकांत रायपत

(खबर मन्त्र ब्यूरो) रांची। विश्व हिन्दू परिषद झारखंड प्रान्त के संयोजक चंद्रकांत रायपत ने कहा कि 22 जनवरी को सार्वजनिक अवकाश घोषित किया जाये। श्री रायपत मंगलवार को होटल ग्रीन एकर में पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। अक्षत वितरण निमंत्रण अभियान के प्रांत प्रमुख मनोज पोद्दार ने कहा कि श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के आह्वान पर 1 जनवरी से 15 जनवरी 2024 तक सभी जिलों में अयोध्या में हो रहे श्री राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा का निमंत्रण घर-घर तक देने का महा अभियान संपन्न हो गया। अभियान में लगे कार्यकर्ता झारखंड के सभी प्रखंडों के 5304 पंचायत तथा 31026 गांव के कुल 47 लाख 72 हजार परिवारों तक गये। चंद्रकांत रायपत ने कहा कि अब अभियान के दूसरे चरण में हिंदू समाज मंदिरों की सफाई, मंदिरों की साज सज्जा करें, मंदिरों में कोई ना कोई धार्मिक अनुष्ठान के लिए कार्यक्रम की योजना बनाकर उसकी पूर्ण व्यवस्था की चिंता करे। विशेष आग्रह 22 जनवरी को संपूर्ण हिंदू समाज प्रातः 11 बजे से दोपहर 1 बजे तक अपने निकट के मंदिरों में एकत्र होकर कोई न कोई धार्मिक अनुष्ठान करे। उन्होंने झारखंड सरकार से मांग की है कि 22 जनवरी 2024 को एक दिन का राजकीय अवकाश दिया जाये। साथ ही, प्रदेश में 21 जनवरी से 22 जनवरी तक मांस मदिरा के विक्री पर रोक लगाई जाये। इस अवसर पर रंगनाथ महतो, प्रकाश रंजन, प्रिंस अजमानी, कैलाश केसरी उपस्थित थे।

समान कार्य के लिए समान वेतन को लेकर वीसी से मिले अतिथि शिक्षक

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। रांची विश्वविद्यालय में पिछले 2015-16 से कार्य कर रहे अतिथि शिक्षक रांची विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अजीत सिन्हा से मुलाकात कर उच्च एवं तकनीकी शिक्षा विभाग, झारखंड सरकार के प्रधान सचिव के निर्देशन का अनुपालन करने के लिए आग्रह किया। मालूम हो कि राज्य सरकार के निर्देश पर अतिथि शिक्षक विश्वविद्यालय में पिछले 2015-16 से कार्य कर रहे हैं। अतिथि शिक्षकों का समायोजन नीड बेस्ट शिक्षक के रूप में किया जाना निर्देशित है। परंतु अभी तक रांची विश्वविद्यालय के द्वारा इनका समायोजन नहीं किया गया है, जिसे लेकर मंगलवार को अतिथि शिक्षक काफी संख्या में कुलपति से मुलाकात की और कहा कि जल्द से जल्द नीड बेस्ट सहायक प्राध्यापक के रूप में हमें अधिसूचित किया जाए। इसे लेकर कुलपति ने आश्वस्त किया है कि अभी रिस्ट्रिक्टेड हॉलीडे के कारण कर्मचारियों की कमी है। इस कारण थोड़ा विलंब हो रहा है। परंतु जल्द से जल्द अधिसूचित कर दिया जाएगा। इस पर संघ के अध्यक्ष अरविंद प्रसाद ने कहा कि यदि जल्द से जल्द हमारा नोटिफिकेशन नहीं होता है तो हमलोग पूर्ण कार्य बहिष्कार पर जाएंगे। वहीं संघ के उपाध्यक्ष डॉ अमित कुमार ने कहा कि हमें समान कार्य समान वेतन जल्द से जल्द दिया जा। इस तरह का भेदभाव अब बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। मुलाकात के दौरान महासचिव अंकित शर्मा,डॉ रंजू कुमारी,डॉ ज्योति, डॉ मनीष कुमार मिश्रा, अभिषेक कुमार विकास कुमार, डॉ आफताब जमिल, डॉ निखिल सुषमा, डॉ स्मिता कुमारी, आसिफ, डॉ आशीष, श्वेता सहदेव, डॉ पूनम, अर्चना शेफाली, श्वेता सुरभि, आदि उपस्थित थे।

खबर एक नजर में

अशोका वारियर ने बांटे गुड़-चूड़ा और तिलकुट

रांची। सरजना चौक के समीप निरवाना रेस्टोरेंट के पास अशोका वारियर के नेतृत्व में चूडा, दही और तिलकुट का वितरण किया गया। उन्होंने बताया कि संस्था का उद्देश्य गरीबों और मानवता की सेवा करना है। संस्था के अध्यक्ष गौतम शाही ने बताया कि साल में लगभग 12 कार्यक्रम संस्था अपने सदस्यों की मदद से करेगा। उनका कहना है जितना हो सके भूखे को भोजन कराना है। गरीब लड़कियों की शादी मुफ्त में करने की योजना भी है। वहीं, सचिव सिद्धार्थ जयसवाल ने कहा कि अशोका वारियर हर त्योहार पर गरीबों के बीच जाकर, उनके साथ खड़े रहेंगे। उनके दुख सुख में शामिल होंगे। संस्था के कोषाध्यक्ष सुबोध चौधरी ने कहा कि हमारे लक्ष्य सात सौ लोगों के बीच दही का वितरण करना था, लेकिन भीड़ को देखते हुए हमने तत्काल 1200 लोगों के लिए सामग्री की व्यवस्था की। इस कार्यक्रम के प्रोजेक्ट चेयरमैन विक्रम माहवारी एवं रॉबिन गुप्ता भी शामिल थे। मौके पर इनके अलावा दीपक सिन्हा ,मुकेश झा, अजीत साहू, संजीव कुमार, मंजूषा जायसवाल, आलोक गुप्ता, विकास राज, राज रुद्रा, राजीव रंजन, प्रत्यक्ष साहू, विद्यासागर मेहता, अमित साहू और मनीष कुमार आदि मौजूद थे।

मोरहाबादी में विश्वकर्मा अधिकार रैली कल

रांची। झारखंड प्रदेश विश्वकर्मा समाज द्वारा आहूत विश्वकर्मा अधिकार रैली 18 फरवरी को मोरहाबादी मैदान में होगी। विश्वकर्मा अधिकार रैली की सफलता के लिए मंगलवार को विश्वकर्मा युवा सुरक्षा मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष शिव किशोर शर्मा, संरक्षक अशोक कुमार राणा, डॉ. दुर्गा लाल शर्मा एवं राजकिशोर राणा के नेतृत्व मे पंडरा, कमड़े, रिंग रोड आदि क्षेत्र के विश्वकर्मा बंधुओं से मिलकर 22 फरवरी को रैली में आने के लिए आग्रह साथ ही आवश्यक दिशा निर्देश भी दिया गया। राजकिशोर राणा ने कहा कि समाज है तो हम हैं। समाज के बिना हम अधूरें है। लोगों से आग्रह किया गया 22 फरवरी को अपनी अपनी दुकान,प्रतिष्ठान आदि बंद रखें और मोरहाबादी मैदान रैली मे आकर अपनी चप्तानी एकता का परिचय दें और रैली को सफल बनाएं। वहीं अशोक कुमार राणा एवं सुबोध कुमार शर्मा ने कहा 22 फरवरी को झारखंड राज्य के सभी जिलों से विश्वकर्मा बंधुगण रैली में सिरकत करेंगें। उन्हें रांची रेलवे स्टेशन एवं बस स्टैंड में भव्य स्वागत कर रैली स्थल मोरहाबादी मैदान लाया जाएगा। मंच के सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यगणों का रैली की सफलता के लिए प्रतिदिन जनसंपर्क 22 फरवरी तक जारी रहेगा। यह जानकारी रविन्द्र कुमार शर्मा ने दी है।

धुर्वा में मुक्तिधाम पुल के ऊपर अनियंत्रित होकर पलटी कार, एक की मौत, तीन घायल

रांची। राजधानी रांची के धुर्वा थाना क्षेत्र के सीठियो मुक्तिधाम पुल के ऊपर मंगलवार की देर शाम एक कार अनियंत्रित होकर पलट गई। हादसे में कार सवार एक व्यक्ति की मौत हो गई, वहीं तीन लोग घायल हो गये। घटना के संबंध में बताया जा रहा है कि कार की गति इतनी तेज थी कि पुल के डिवाइडर से टकराकर पुल के ऊपर ही पलट गई। घटना की सूचना मिलने के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने सभी घायलों को कार से निकालकर अस्पताल भेजा। वहीं मृतक के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

भाजपा कार्यकर्ताओं ने लालपुर हनुमान मंदिर की सफाई कर स्वच्छता अभियान चलाया

रांची। लालपुर स्थित वीर हनुमान मंदिर में बीजेपी नेताओं ने साफ सफाई अभियान चलाया। वहीं 22 जनवरी को पूरे लालपुर चौक की साज सज्जा करने एवं लड्डू प्रसाद भोग बांटने का निर्णय लिया गया। इस अवसर पर प्रदेश कार्य समिति सदस्य अजय राय, जिला उपाध्यक्ष बसंत दास, पूर्व मीडिया प्रभारी बजरंग वर्मा, पूर्व पार्षद अभय कुमार सिंह, लालपुर उपाध्यक्ष मुन्ना गुप्ता, भाजपा नेता धनंजय सिंह, केके सिंह, बृजेश तिवारी सहित कई गण मान्य लोग उपस्थित थे। इस अवसर पर अजय राय ने कहा कि हम सब 22 जनवरी का इंतजार कर रहे है, जब भगवान पुरुषोत्तम राम की प्राण प्रतिष्ठा के हम गवाह बनेंगे। उन्होंने कहा कि स्वच्छता अभियान के तहत भाजपा कार्यकर्ता पूरे देश के अंदर स्वछता अभियान चला रहे हैं। अभियान के तहत ही हम सभी भाजपा कार्यकर्तओं ने मंगलवार को मंदिर में सफाई अभियान चलाया।

झारखंड विधानसभा में रक्तदान शिविर आयोजित

रांची। मंगलवार को झारखंड विधानसभा में रिम्स ब्लड बैंक के तत्वाधान में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस रक्तदान शिविर में रक्त जांच के प्रबंध भी किये गये थे। विधानसभा के अधिकारियों एवं कर्मियों ने रक्तदान शिविर में भाग लिया एवं रक्त दान किये। स्पीकर रबींद्रनाथ महतो ने रक्तदान शिविर का निरीक्षण किये एवं रक्तदान करने वाले कर्मियों को रक्त दान से संबंधित प्रमाण पत्र भी दिया। इनके साथ विधानसभा के प्रभारी सचिव सैयद जावेद हैदर भी उपस्थित थे। स्पीकर ने कहा कि वैसे लोग जो रक्तदान के लिये मेडिकल रूप से फिट हैं उन्हें समय अंतराल पर रक्तदान करना चाहिये। रक्तदान से जरूरतमंदों के सहयोग के साथ साथ अपने शरीर को भी कई फायदे हैं। रक्तदान शिविर के डॉक्टर कविता देवघरिया, डॉक्टर ऊषा सरोज के नेतृत्व में आयोजित हुआ। इसमें झारखंड विधानसभा औषधालय के मेडिकल टीम भी सहयोगार्थ उपस्थित रही।

महानगर अल्पसंख्यक कांग्रेस ने कंबल वितरण किया

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। रांची महानगर कांग्रेस कमिटी अल्पसंख्यक विभाग के अध्यक्ष हुसैन खान द्वारा मंगलवार को पुंदाग बस्ती, टुंदुरु, नईसाराय, देवड़ी बस्ती में करीब 500 से अधिक गरीब जरूरतमंदों के बीच कंबल वितरण किया गया। इस मौके पर हुसैन खान ने कहा कि गरीबों व असहायों को मदद करना मेरी नियती में शामिल है। उन्होंने कहा कि मैंने यह नि>य किया कि जितना हो सके मैं अब असहायों को ठंड से कुछ हदतक राहत दिलाउंगा। इसके लिए मैं रात्रि में सार्वजनिक स्थलों पर घूम घूम कर जरूरतमंद असहायों के बीच गर्म कपड़े व कंबल का वितरण कर रहा हूं। उन्होंने बताया कि यह कार्य निरंतर जारी रखूंगा। उन्होंने कहा कि मानव सेवा से कोई बड़ा सेवा नहीं है। जरूरतमंदों को गर्म कपड़ा और खाना देना सबसे पुण्य का काम है । ऐसे कार्यों में हरेक को बढ़ चढ़ कर शरीक होनी चाहिए।

एचइसी ऑफिसर्स एसोसिएशन अवकाश पर रहा

(खबर मन्त्र ब्यूरो) रांची। एचईसी ऑफिसर्स एसोसिएशन के सदस्य मंगलवार सामूहिक अवकाश पर रहे। इस संबंध में एसोसिएशन के सदस्यों ने बताया कि प्रबंधन को 2 जनवरी को पत्र लिखा गया था। सात दिनों के अंदर पत्र का जवाब प्रबंधन से देने का आग्रह किया गया था। मगर प्रबंधन ने निर्धारित समय के अंदर पत्र का जवाब नहीं दिया। इसलिए एसोसिएशन ने निर्णय लिया है कि बकाया वेतन आदि भुगतान को लेकर आंदोलन का रास्ता अपनाया जाएगा। गत एक साल से एसोसिएशन पीएम, भारी उद्योग मंत्री आदि को लगातार पत्राचार कर रहा है। यहां कार्यरत समस्त कर्मचारियों की समस्याओं से अवगत कराता रहा है, लेकिन आज तक कही से भी कोई स्पष्ट जवाब नहीं मिला। ऐसे में अब सड़क पर उतरने के अलावा कोई रास्ता नहीं बचा है। मंगलवार को प्रदर्शन के दौरान एचईसी ऑफिसर्स एसोसिएशन के पीएस पासवान, खेत्रो मोहन टुडू, पूर्णेंदु दत्ता मिश्रा, रोशन कुमार, अमित मिश्रा, सुभाष चंद्रा, शशि कुमार, शशि भूषण प्रसाद आदि उपस्थित थे।

संकट मोचन श्री हनुमान मंदिर से जन जागरण रथ रवाना

ध्वज के साथ दीपक वितरण का शुभारंभ किया गया

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। श्री महावीर मंडल ने अयोध्या में होने वाले उद्घाटन समारोह को लेकर महोत्सव मनाने के लिये जन जागरण के लिए रथ रवाना किया। श्री महावीर मंडल रांची के संरक्षक महामंडलेश्वर सूर्यमणि त्यागी, सांसद संजय सेठ, विधायक सीपी सिंह, आशा लकड़ा ने रथ रवाना किया। कुणाल अजमानी, मुनचुन राय, डॉ दिलीप सोनी, रविंदर वर्मा सहित अन्य पदाधिकारियो ने भगवा ध्वज लहराकर रथ रवाना किया। ध्वज वितरण एवं दीपक वितरण का शुभारंभ किया गया। श्री महावीर मंडल की आवश्यक बैठक राम मंदिर के उद्घाटन उत्सव को लेकर संकट मोचन हनुमान मंदिर मेन रोड में किया गया। इसकी अध्यक्षता कुणाल आजमानी ने की। इस अवसर पर सांसद संजय सेठ ने कहा कि शहर में अनेकों महावीर मंडल के के अखाड़ाधारीयो को दीपक एवं ध्वज वितरण किया जा रहा है। फिर भी लोग अपनी व्यवस्था से ध्वज एवं दीपक अपने घरों में लगायें। परंतु सुदूर आदिवासी क्षेत्र में जहां विशेष कर कुछ लोगों को लालच देकर धर्मांतरण किया जा रहा है। ऐसी जगह पर श्री महावीर मंडल रांची महानगर के पदाधिकारीगण पहुंचकर अपने सनातन धर्म को मानने वाले लोगों को ध्वज एवं दीपक देकर 22 तारीख को हर घर में ध्वज लगे एवं दीपक जले ऐसी व्यवस्था करनी चाहिये। बैठक में अमरनाथ सरकार, पुरोहित श्यामानंद पांडे, अमित चौधरी, रवि प्रकाश टुन्ना, सतीश सिन्हा, रोहित शारदा, बादल सिंह, शंभू प्रसाद, अमित गुप्ता, महेश सोनी, राहुल कुमार चंकी, राजेश साहू, रवि सिंह, आनंद तिवारी आदि सम्मिलित हुये।

पत्नीहंता को उम्र कैद की सजा सुनायी

(खबर मन्त्र ब्यूरो) रांची। पत्नी की निर्मम हत्या करने के जुर्म में टाटीसिल्वे निवासी पॉलुस मुंडा को अपर न्यायायुक्त प्रकाश झा की अदालत ने मंगलवार को आजीवन कारावास की सजा सुनाई है। अदालत ने 10 जनवरी को दोषी पाया था। अभियुक्त घटना के बाद से ही लगातार जेल में है। अभियुक्त ने 25 अक्तूबर 2020 को शराब के नशे में आपा खोकर पत्नी फूलमती देवी को सरिया से सिर में वार कर हत्या कर दी थी। घटना को लेकर मृतका की बेटी ने टाटीसिल्वे थाना में प्राथमिकी दर्ज कराई थी। इसके बाद पुलिस ने 27 अक्तूबर 2020 को अभियुक्त को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था। तब से वह लगातार जेल में ही है। मामले की सुनवाई के दौरा प्रभारी एपीपी सिद्धार्थ कुमार सिंह ने ठोस सबूत प्रस्तुत किये थे। एपीपी ने घटना में प्रयुक्त सरिया व पोस्टमार्टम रिपोर्ट को प्रमाणित कराया था। इसके आधार पर ही अदालत ने दोषी व्यक्ति को सजा सुनाई है। सुनवाई के दौरान मामले में सूचक समेत सात गवाहों को अभियोजन की ओर से प्रस्तुत किया गया था। इसमें से अभियुक्त की बेटी समेत परिवार के पांच सदस्य पूर्व के बयान से मुकर गया था।

इक्फाई के चौथे दीक्षांत समारोह में आज बटेंगी 196 छात्रों के बीच डिग्री

विवि के 8 विद्यार्थियों को स्वर्ण और 8 को मिलेगा रजत पदक

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। इक्फाई विश्वविद्यालय झारखंड के चौथे दीक्षांत समारोह में बुधवार को 196 छात्रों के बीच डिग्री बांटी जायेगी। समारोह का आयोजन मोरहाबादी स्थित आर्यभप्त सभागार में सुबह 11:30 बजे से समारोह शुरू होगा। इसमें मुख्य अतिथि के रूप में राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन शामिल होंगे। वहीं, बार काउंसिल ऑफ इंडिया के अध्यक्ष मनन कुमार मिश्रा सम्मानित अतिथि होंगे। दीक्षांत समारोह के दौरान, विश्वविद्यालय 2023 में स्नातक करने वाले छात्रों को कुल 196 डिग्रियां प्रदान करेगा, जिसमें 10 पीएचडी शामिल हैं। विभिन्न कार्यक्रमों के शीर्ष रैंकर और दूसरे रैंकर्स को क्रमशः 8 स्वर्ण पदक और 8 रजत पदक प्रदान किए जाएंगे। यह जानकारी प्रेस कांफ्रेंस के दौरान मंगलवार को स्थानीय होटल में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर (डॉ.) रमन कुमार झा ने दी।

विवि के छात्रों ने देशभर में प्रतियोगिता जीती

उन्होंने बताया कि हमारा विश्वविद्यालय विज्ञान और प्रौद्योगिकी, नवाचार, अनुसंधान, कानूनी प्रक्रिया जैसे सभी क्षेत्रों में छात्रों को तैयार करने के लिए ठोस प्रयास कर रहा है, ताकि वे अपने नियमित शैक्षणिक प्रदर्शन के अलावा सभी क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकें। आकाश वर्मा और राजनंदनी तिवारी के नेतृत्व में बीसीए कार्यक्रम के पांच छात्रों ने विभिन्न राष्ट्रीय हैकथॉन में भाग लिया और देशभर में प्रतियोगिता

जीती। उन्होंने आनंद इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, चेन्नई में शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा आयोजित स्मार्ट इंडिया हैकथॉन-2023 में प्रथम स्थान हासिल किया, चंडीगढ़ विश्वविद्यालय में ई-सुरक्षा साइबर सुरक्षा राष्ट्रीय हैकथॉन में प्रथम पुरस्कार, आईआईटी आईएसएम धनबाद में कॉन्सेटो हैकथॉन में प्रथम पुरस्कार, आईआईटी बॉम्बे में एटलसियन हैकथॉन में भारत की शीर्ष 8 टीमें फाइनलिस्ट व माइक्रोसॉफ्ट इमेजिन कप में सेमी फाइनलिस्ट में विजेता रहे।

विदेशी भाषा लैब स्थापित करने की योजना बनायी

उन्होंने बताया कि एमबीए प्रोग्राम की छात्रा रितिका कुमारी ने एनआईटी कुरुक्षेत्र में योवा संगम में भाग लिया, जहां उन्हें हरियाणा के राज्यपाल के साथ बातचीत करने का मौका मिला। कानूनी जागरूकता के माध्यम से नागरिकों को सशक्त बनाने के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए जिला विधिक सेवा प्राधिकरण झारखंड द्वारा विश्वविद्यालय से संचालित स्कूल ऑफ लॉ के लीगल एड क्लिनिक को सर्वश्रेष्ठ कानूनी सेवा क्लिनिक के लिए सम्मानित किया गया है। प्रो (डॉ.) रमन कुमार झा ने यह भी बताया कि विश्वविद्यालय ने स्टार्ट-अप को प्रोत्साहित करने के लिए एक इनक्यूबेशन सेंटर और छात्रों को अंतरराष्ट्रीय नौकरी के अवसरों के लिए तैयार करने के लिए विदेशी भाषा लैब स्थापित करने की योजना बनाई है। इसके अलावा, विश्वविद्यालय न केवल इक्फाई के लिए बल्कि पूरे झारखंड के लिए उद्योग-शैक्षणिक ज्ञान और कौशल अंतर को पाटने के लिए प्रोफेसर डॉ. अजीत कुमार सिन्हा, रांची, प्रोफेसर डॉ. डीके सिंह, जेयूटी जैसे झारखंड के अग्रणी कुलपतियों की मदद से वर्तमान शैक्षणिक वर्ष में विभिन्न समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर कर रहा है। शिक्षा की गुणवत्ता और समाज पर इसके प्रभाव की मान्यता में इक्फाई विश्वविद्यालय, झारखंड को टाइम्स हायर एजुकेशन, लंदन और वर्ल्ड यूनिवर्सिटीज रियल इम्पैक्ट जैसी स्वतंत्र अंतरराष्ट्रीय और भारतीय रैंकिंग एजेंसियों द्वारा गुणवत्ता में भारत के शीर्ष 10 विश्वविद्यालयों में शिक्षा और औद्योगिक अनुप्रयोगों में प्रभाव के संबंध में शीर्ष 50 विश्वविद्यालयों में से स्थान दिया गया था।

स्पीड न्यूज

चान्हो : शादी का झांसा देकर यौन शोषण के आरोपी को जेल

चान्हो। थाना क्षेत्र के लापुंगा निवासी नितेश उरांव को मंगलवार को पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। उसपर शादी का झांसा देकर यौन शोषण करने का आरोप है। उस पर चान्हो थाना क्षेत्र की रहने वाली एक युवती ने शादी का झांसा देकर यौन शोषण करने का आरोप लगाया है। पीड़िता का आरोप है कि इससे उसका एक बेटा भी है। फिर भी नितेश शादी से इनकार कर रहा है। पीड़ित द्वारा प्राथमिकी कराने के बाद चान्हो पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है।

साल्हन में भगत टुसू मेला आज

अनगड़ा। मकर संक्रांति के उपलक्ष में प्रत्येक वर्ष की भांति बुधवार 17 जनवरी को साल्हन में भगत टूसू मेला का आयोजन किया गया है। मेले का मुख्य आकर्षण टुसू झांकी बालिका फुटबॉल प्रतियोगिता तथा रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम होंगे मेला समिति के अध्यक्ष राजु नायक और सिकन्दर अंसारी ने बताया कि मेला में मुख्य अतिथि के रूप में झारखण्ड विधानसभा नेता प्रतिपक्ष अमर कुमार बाउरी विशिष्ट अतिथि सांसद संजय सेठ राज्य सभा सांसद आदित्य प्रसाद साहू पूर्व विधायक रामकुमार पहान व पूर्व कुलसचिव जेयूटी अमर कुमार चौधरी होंगे।

खरकुटोली गांव में किसान मेला आज

ठाकुरगांव। रामकृष्ण मिशन मोरहाबादी के सहयोग से बुढ़मू प्रखंड के खरकुटोली गांव में एक दिवसीय किसान मेला का आयोजन 17 जनवरी को किया गया है। मेला में उत्कृष्ट फसल के नमूने लाने वालों को समिति द्वारा पुरष्कृत भी किया जाएगा। कार्यक्रम में सांसद, विधायक समेत कृषि विभाग के अधिकारी भी शामिल होंगे। साथ ही मेला में नागपुरी सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया है। उक्त जानकारी मेला समिति के सचिव राजेंद्र महतो ने दी है।

गोंदलीपोखर शिव मंदिर निर्माण की रखी गई नींव

अनगड़ा। पूर्व डिप्टी सीएम और सिल्ली के विधायक सुदेश कुमार महतो ने मंलवार को मांगलिक शुभ बेला में प्रखंड के गोन्दली पोखर में बन रहे भव्य शिव मंदिर में पूरे विधि विधान के साथ पंडीत जी के मंत्रोचारण के बीच पहला ईट रखी। इस मौके पर पूर्व विधायक रामकुमार पहान नरेश साहू जैलेन्द्र कुमार वनमाली महतो जगरनाथ महतो दीपक स्वर्णकार वीरेन्द्र सिंह भोक्ता अमर केशरी मन्दिर निर्माण समिति के सदस्य एवं सैकड़ों श्रद्धालुगण मौजूद थे।

कोलकाता से ही यात्री के रूप में बस में सवार हो गये थे अपराधी, व्यापारियों को पीटा

बुंडू : हथियार के बल पर सब्जी व्यापारियों से 18.50 लाख की लूट

दशम फॉल थाना क्षेत्र में अपराधियों ने घटना को दिया अंजाम

खबर मन्त्र संवाददाता

बुंडू। बुंडू और दशम फल थाना क्षेत्र के रांची टाटा राष्ट्रीय मार्ग 33 पर मंगलवार सुबह लगभग 5.00 बजे कोलकाता से रांची आ रही शिवम बस डबलूबी 41 जे 9253 पर सवार तीन सब्जी व्यापारियों 18 लाख 50 हजार रुपए हथियार के बल पर लूट करके अपराधी फरार हो गए। घटना के संदर्भ में मिली जानकारी के मुताबिक घटना को अंजाम देने वाले चार अपराधी यात्री के रूप में कोलकाता से ही सवार होकर रांची आ रहे थे। इस यात्री बस पर सब्जी व्यापारी मोहम्मद शाहिदएमोहम्मद जमील और तौफीक आलम इटकी, बेड़ो के सब्जी व्यापारियों और किसानों के रुपए को लेकर आ रहे थे। चारों अपराधियों ने घटना को अंजाम देने के लिए बस चालक मोहम्मद नौशाद को पिस्तौल और चाकू दिखाते हुए बस को कब्जे में ले लिया और तीनों व्यापारी से लूटपाट करने लगे। इस क्रम में अपराधियों ने व्यापारी मोहम्मद सईद चालक मोहम्मद नौशाद और खलासी अब्दुल सत्तार अंसारी को मारपीट कर घायल कर दिया और 18 लाख 50 हजार रुपए लगभग लूटपाट कर भागने में सफल हो गए। यात्रियों द्वारा बताया जाता है कि इस घटना का अंजाम बुंडू थाना क्षेत्र के सूर्य मंदिर समीप से शुरू कर दशामफल थाना क्षेत्र के नावाडीह गांव अंतिम अंजाम देकर भागने में सफल रहे। तीनों घायलों का बुंडू अनुमंडल अस्पताल में प्राथमिक उपचार किया गया है। इधर घटना की जानकारी मिलते ही सब्जी व्यापारियों का दल दशम फॉल थाना पहुंचे। इस तरह की बस में लूटपाट की घटना बड़ी लंबी अवधि के बाद हुई है।

बकाया राशि लाने व्यापारी गये थे कोलकाता

उन्होंने बताया उनके बकाया रुपए 29 लाख से अधिक लाने के लिए तीनों व्यापारी गए थे। जिस रुपए की भी लूटपाट हुई है। इन व्यापारियों के अनुसार किसानों का नाम सादिक आलम 20 हजार, मो गुफरान 1 लाख 80 हजार अजय कुमार पिस्का नगड़ी 60 हजार, मो शाहिद चान्हो 78 हजार अयोध्या महतो नगड़ी 1 लाख, ओम महतो नगड़ी 70 हजार, राजेंद्र साहू बेड़ो 1 लाख, 60 हजार, फिरोज आलम इटकी 1 लाख 50 हजार, सुकेश गुप्ता पिस्का 2 लाख, जियाउल हक केरो लोहरदगा 2 लाख, जलेश्वर महतो नगड़ी 2 लाख, विक्रम महतो नगड़ी 50 हजार, महावीर महतो नगड़ी 1 लाख, मो इख्तियार बेड़ो 4 लाख, इंद्रशेखर सिंह पिस्का 10 हजार, टिंकू कुमार सिंह पिस्का नगड़ी 2 लाख 20 हजार, मो शकील बेड़ो 1 लाख, रियाज खान बेड़ों 1 लाख, के अलावाट्रक का भाड़ा 2 लाख 76 हजार कल 29 लाख 24 हजार रुपए लगभग बताई जा रही है। इस मामले में बुंडू के थानेदार प्रोन्नति डीएसपी संजीव कुमार बताते हैं कि तीनों व्यापारियों से 1850000 रुपए लगभग की लूट हुई है, जो तीनों व्यापारियों ने बयान में स्वीकार किया है। बकाया रुपए उन तीनों व्यापारी को नहीं मिले थे।

छानबीन शुरू

ग्रामीण एसपी बुंडू घटना की जानकारी मिलते ही ग्रामीण पुलिस अधीक्षक मनीष टोप्पो और रांची पुलिस के टेक्निकल विभाग के टीम सुबह दशम फल थाना पहुंची। इसके पश्चात उन्होंने अपने टीमों के साथ घटनास्थल का दौरा कर स्थिति का जायजा लिया। उन्होंने पत्रकारों से बातचीत मे बताया कि घटना को अंजाम देने वाले अपराधी की खोजबीन की जा रही है। शीघ्र ही गिरफ्तार किए जाएंगे। बेड़ो और नगड़ी प्रखंड से आए व्यापारियों और किसानों ने दशमफॉल थाना परिसर में ग्रामीण एसपी से मिलकर अपराधियों को पड़कर उनके रुपए को अपराधियों को पकड़ के बरामद करने की मांग की। व्यापारियों को ग्रामीण एसपी ने अपराधियों पर सख्त कार्रवाई करने का आश्वासन दिया।

एक नजर में

बुढ़मू : सुमू के ग्रामीणों ने प्रखंड कार्यालय घेरा

बुढ़मू। सारले पंचायत के सुमू गांव के ग्रामीण मंगलवार को प्रखंड कार्यालय के मुख्य द्वार को जाम कर दिए और पूरी तरह आवागमन बंद कर दिये। सूचना पाकर बीडीओ धीरज कुमार, सीओ शंकर कुमार विद्यार्थी मुख्य द्वार पर आये। ग्रामीणों ने बताया कि सारले पंचायत के कुछ दलाल अबुआ आवास योजना का लाभ दिलाने की बात कहकर पैसे की मांग कर रहे हैं और पैसा नहीं देने पर लाभ से वंचित कर दिया जा रहा है। बीडीओ ने आश्वासन दिया कि योग्य लाभुकों का नाम अबुआ आवास योजना की सूची में जोड़ा जाएगा। पैसा मांगनेवालों के विरुद्ध जांचोपरांत दोषी पाए जाने पर सख्त कार्रवाई की जाएगी। जाम समाप्त होने के बाद ग्रामीणों ने बीडीओ को आवेदन देकर दलालों के विरुद्ध कार्रवाई करने की मांग की है। सुमू धवैया की एक लाभुक सोनमती देवी ने बताया कि मैं विधवा हूं और कच्चे मकान में रहती हूं। पिछले कई सालों से प्रयासरत हूं, लेकिन दलालों के हावी रहने के कारण मैं अभी तक आवास योजना के लाभ से वंचित हूं।

कार्यालय में कर्मियों और लोगों का आवागमन किया ठप

MUNICIPAL CORPORATION, HAZARIBAGH
(Urban Development & Housing Department, Govt. of Jharkhand)
Municipal Corporation, Hazaribagh – 825301
Email :- municipality_08@rediffmail.com
Ref : UDD/HMC/HZB/SBD/05/2023-24 Letter No. 250 Dated : 13.01.2024

e-Procurement Notice

Name of Tender Inviting Officer : Municipal Commissioner-Cum-Administrator
1.Date of Publication of Tender on Website : 17-01-2024
2.Last Date/Time for receipt of online bids : 10-02-2024 up to 05:00 PM
3.Date/Time of Opening bids : 12-02-2024 05:00 PM
4.Contact No. of Procurement officer : 8219204356

Sl. No.	Name of Work	Value of Work (Rs.)	Earnest Money (Rs.)	Cost of Tender Document (Rs.)	Period of Completion
1	Rejuvenation of Jheel Area Under Municipal Corporation, Hazaribag	13,97,39,000/-	14,00,000/-	29,500/-	(24 Months)

NOTE :
•Only e-Tenders will be accepted.
•Further details can be seen on website http:/jharkhandtenders.gov.in

Sd/-
Municipal Commissioner-Cum-Administrator
Municipal Corporation, Hazaribagh

PR 316111 Urban Development and Housing(23-24)D

वन विभाग के समक्ष माले का प्रदर्शन

परिजनों को मिले 10 लाख का मुआवजा

खबर मन्त्र संवाददाता

जंगली हाथियों द्वारा मारे गए परिवार को 10 लाख रुपए मुआवजा और परिवार के एक सदस्य सरकारी नौकरी की गारंटी की जाए। ग्रामीण हाथी भगाओ दल को प्रशिक्षण और सरकारी कर्मचारी का दर्जा दिया जाए । क्षेत्रिय जंगल में जबतक हाथियों का वास रहे वन विभाग हाथियों के खाने के लिए अनाज की व्यवस्था करे। हाथी प्रभावित क्षेत्र में ग्रामीणों के बीच में जागरूकता अभियान चलाया जाए। मानव-हाथी संघर्ष पर विराम लगाने के लिए ऐलिफेंट कॉरिडोर निर्माण किया जाये।

बुंडू। भाकपा माले ने पांच परगना क्षेत्र में जंगली हाथियों के बढ़े आतंक और वन विभाग की आपराधिक लापरवाही से हो रहे जानमाल के नुकसान पर प्रदर्शन कर आक्रोश जताया। जिला सचिव जगमोहन महतो ने कहा कि पांचपरगना क्षेत्र के ग्रामीण जंगली हाथियों के आतंक से अपनी जिंदगी और फसलों को बचाने के लिए ठंड में रतजगा करने को विवश हैं। फिर भी उन्हें जानमाल का नुकसान उठाना पड़ रहा है। एक महीने के अंदर चार जिंदगियां हाथियों के आतंक की शिकार हो चुकी है। वहीं वन विभाग मुआवजा-मुआवजा खेल रही है। एरिया सचिव सुखदेव मुंडा स्थानीय विधायक सुदेश महतो, विकास मुंडा के चुप्पी पर सवाल उठाते हुए कहा कि विधायक प्रतिनिधि घटनास्थल पर पहुंचकर सांत्वना और आर्थिक मदद कर खुद को गौरंवित करा रहे हैं। स्थायी समाधान नहीं निकाला जा रहा है। भाकपा माले ने प्रदर्शन के बाद डीएफओ के नाम पांच सूत्री मांग पत्र सौंपा। प्रदर्शन में मुख्य रूप से गौतम मुंडा, अम्लकांत महतो, रामेश्वर मुंडा, ठाकुरा मुंडा, पूर्णचंद्र मुंडा, जगेन मुण्डा, लखिमनी मुंडा, सोमवारी मुंडा, सरला मुंडा, दुलाल मुंडा, दशरथ लोहरा, कालीपद मुंडा शामिल रहे।

मैक्लुस्कीगंज में हथियार के बल पर ट्रैक्टर की लूट

खलारी। मैक्लुस्कीगंज थाना क्षेत्र में अज्ञात अपराधियों के द्वारा इन दिनों ट्रैक्टर को अपहरण लूट करने का मामला बढ़ रहा है। जानकरी के अनुसार सोमवार की रात्रि लगभग 11.30 बजे ईट भट्ठा से लौट रहे ट्रैक्टर को अपराधियों ने निशाना बनाया। ट्रैक्टर मालिक बहेरा टाँड़ निवासी संजय लोहरा के अनुसार बताया कि ईट भट्ठा से काम करके खाली ट्रैक्टर लेकर चालक व लेबर घर आ रहा था। इसी क्रम में बाहेर टांड़ चित्रिगढ़ा हेसालोंग नाला के पास बाइक खड़ा करके झाड़ी में छुप कर घात लागये बैठे चार अपराधियों ने ट्रैक्टर पर धावा बोल दिया और ट्रैक्टर को लूटकर फरार हो गये। भुक्तभोगी ने मैक्लुस्कीगंज थाना में मामला दर्ज कराया है।

हाथी ने रौंद डाले किसानों की फसल

बेड़ो। बेड़ो प्रखंड के जरिया टेंगरिया गांव में एक जंगली हाथी ने सोमवार की रात लगभग आठ बजे गांव के चार किसानों के तैयार फसल जिसमें पंकज कच्छप व मनोज उरांव के गेहूं को और बलभद्र बैठा व फगुआ उरांव के आलू व फ्रेंचबीन लगे खेतों में हाथी ने घुस कर खाया और रौंद कर फसलों को बर्बाद कर दिया। गांव के बिरसा उरांव का कहना है कि ग्रामीण हाथियों के आतंक से हर दिन परेशान और भयभीत हैं।

विधायक ने किया सड़क का शिलान्यास

बेड़ो। जिला अनाबद्ध निधि अंतर्गत देवी मंडप से टिकरा टोली तक 1720 फीट बनने वाली पीसीसी सड़क निर्माण कार्य का मंगलवार को मांडर विधायक शिल्पी नेहा तिर्की ने नारियल फोडकर व शिलापट्ट का अनावरण करके शिलान्यास किया। मौके पर विधायक ने कहा कि वर्षों से गांव के लोगों द्वारा इस सड़क को बनवाने की मांग की जा रही थीए जिसे पूरा किया। इस सडक के बनने से निश्चित रूप से ग्रामीण लाभान्वित होंगें। उन्होने कहा कि विधायक का काम है जनता के सुख दुख को समझना। इसलिए गांव में मूलभूत सुविधाओं से जुड़ें विकास कार्य कराए जा रहे हैं। विधानसभा क्षेत्र में लगभग सभी सड़कों का पक्कीकरण कार्य पूरा हो रहा हैए जिससे हजारों लोग लाभांवित होंगे।

झारखण्ड सरकार

कार्यपालक अभियंता सह राजमार्ग पदाधिकारी का कार्यालय
पथ निर्माण विभाग, पथ प्रमण्डल, कोडरमा

अतिअल्पकालीन निविदा आमंत्रण सूचना संख्या–05 वर्ष 2023–24

1	विज्ञापन दाता का पदनाम एवं पता	कार्यपालक अभियंता, पथ निर्माण विभाग, पथ प्रमण्डल,कोडरमा।
2	परिमाण विपत्र बिक्री की तिथि	दिनांक 29.01.2024 को कार्यालय अवधि में।
3	निविदा प्राप्त करने की तिथि एवं समय	दिनांक 30.01.2024 को 03.00 बजे अपराह्न तक।
4	निविदा खोलने की तिथि एवं समय	दिनांक 30.01.2024 को 03.30 बजे अपराह्न से।
5	परिमाण विपत्र की बिक्री की स्थान	1. मुख्य अभियंता (या०), पथ निर्माण विभाग, अभियंत्रण छात्रावास सं०2 ,धुर्वा, झारखण्ड, राँची 2. अधीक्षण अभियंता, पथ निर्माण विभाग, पथ अंचल, हजारीबाग। 3. कार्यपालक अभियंता ,पथ निर्माण विभाग, पथ प्रमण्डल,कोडरमा।
6	निविदा प्राप्ति एवं खोलने का स्थान	1. मुख्य अभियंता (या०), पथ निर्माण विभाग, अभियंत्रण छात्रावास सं०2 ,धुर्वा, झारखण्ड, राँची 2. अधीक्षण अभियंता, पथ निर्माण विभाग, पथ अंचल, हजारीबाग। 3. कार्यपालक अभियंता ,पथ निर्माण विभाग, पथ प्रमण्डल, कोडरमा।

7. कार्य की विवरणी :–

क्र०सं०	अंचल का नाम	प्रमण्डल का नाम	कार्य का नाम	प्राक्कलित राशि (रूपय में)	अग्रधन की राशि (रूपये में)	परिमाण विपत्र का मूल्य (रूपये में)	कार्य पूर्ण करने का समय
1	2	3	4	5	6	7	8
1	हजारीबाग	कोडरमा	पथ प्रमण्डल,कोडरमा अन्तर्गत निरीक्षण भवन, कोडरमा के परिसर में डीप बोरिंग एवं परिसर का विकास कार्य वर्ष 2023–24	1000000.00	20000.00	1250.00	01(एक) माह
2			पथ प्रमण्डल,कोडरमा अन्तर्गत निरीक्षण भवन एवं कार्यालय का day to day maintenance कार्य वर्ष 2023–24	1000000.00	20000.00	1250.00	12(बारह) माह

➢ निविदा की शर्तें कार्यालय के सूचना पट पर देखी जा सकती है।
1.प्राक्कलन की राशि घटने या बढ़ने पर अग्रधन एवं परिमाण विपत्र की राशि घट बढ़ सकती है।
2.कार्य का परिमाण विपत्र के क्रय हेतु पथ निर्माण विभाग का निबन्धन प्रमाण पत्र ,GSTiN, UCANसे संबंधित प्रमाण–पत्र की सुस्पष्ट प्रति संलग्न करना अनिवार्य होगा अन्यथा परिमाण विपत्र निर्गत नहीं किया जायेगा।

कार्यपालक अभियंता
प०नि०वि0,पथ प्रमण्डल, कोडरमा

PR 316208 (Road)23-24*D

वीर बुधु भगत इंटर कॉलेज चान्हो में खेलकूद

खेलो झारखंड

खबर मन्त्र संवाददाता

चान्हो। खेलो झारखंड अभियान के तहत शहीद वीर बुधु भगत इंटर कॉलेज चान्हो में मंगलवार को खेलकूद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अगुवाई प्रखंड विकास पदाधिकारी अशोक कुमार ने की। इसमें कई प्रकार के खेल प्रस्तुत किए गए। इस अवसर पर मैराथन दौड़, तेज दौड़, स्लो साइकलिंग आदि प्रकार के खेलों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम को लेकर छात्रों में काफी उत्साह था। बच्चों का उत्साह बढ़ाते हुए प्रखंड विकास पदाधिकारी ने कहा कि पढ़ाई के साथ-साथ खेल खुद भी जरूरी है। शारीरिक अभ्यास से पढ़ाई में भी काफी फायदा मिलता है। दौड़ में पहला स्थान भरत उरांव वहीं लड़कियों में रेणु कुमारी, साइकिल रेस में जयंत कुजूर ने पहला स्थान प्राप्त किया। विजेताओं को प्रशस्ति पत्र एवं मेडल देकर 26 जनवरी को पुरस्कृत किया जाएगा। इस अभियान को सफल बनाने में प्राचार्य डॉक्टर सुशील कुमार मिंज, सफीउल्लाह अंसारी, नीलिमा टोप्पो, विकास उरांव, सीताराम साहू, हसीब अंसारी आदि ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

श्रीसाईं मंदिर का मना 10वां स्थापना दिवस, श्रद्धालुओं की उमड़ी भीड़

खबर मन्त्र संवाददाता

रातू। टोंगरीटोला साईपुरम में श्री साई मंदिर का 10वां स्थापना दिवस पर धार्मिक उत्सव का माहौल रहा। कार्यक्रम की शुरूआत सुबह 5 बजे काकड़ आरती पूजा से की गयी। बाबा का अभिषेक किया गया। सत्यनारायण पूजा के बाद हवन व आरती की गयी। दोपहर पालकी यात्रा निकली और महाप्रसाद वितरण के बाद साई भजन आयोजित किया गया। इस दौरान श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ी। भक्तों ने बाबा के दर्शन-पूजन कर मन्नतें मांगी। शिव शक्ति जागरण मंच के कलाकारों ने भक्तों को रसपान कराया। पूजा अनुष्ठान पुजारी रितेश पाठक, नितेश पाठक व शंभु झा ने कराया। संचालन विवेक सिंह उर्फ बीरू ने किया।

इन्होंने निभायी भूमिका

अभय सिंह, नवनीत कुमार, धीरू, पंकज कुमार, सुनिल गुप्ता, भोला, गणेश, ओमप्रकाश, विनीता, सीमा कुमारी, उर्मिला, सुनैना, अनुज्ञा, विवेक सिंह, पंकज कुमार, भोला, शिबू, गणेश, काजल व सिद्धार्थ आदि।

पैदल अयोध्या गये युवकों को संघ उपलब्ध करायेगा पास

श्रीराम लला का करेंगे दर्शन-पूजन

खबर मन्त्र संवाददाता

मार्ग में एक मंदिर के पास पैदल अयोध्या जा रहे सभी युवक।

ओरमांझी। रांची से पैदल अयोध्या के लिए निकले उत्साहित युवकों का संघ व वीएचपी का सहयोग मिल रहा है। पांच जनवरी को गांव से अयोध्या के लिए पैदल निकले 20 से 22 वर्ष के सभी युवक प्रदीप कुमार, संजीत कुमार, मुनेष कुमार, अभय कुमार, रोहित कुमार व हर्ष कुमार ने बताया अयोध्या पहुंचने पर संघ व विश्व हिन्दू परिषद द्वारा श्रीराम लला पास उपलब्ध कराया जाएगा। बताया गया कि रांची से अयोध्या की दूरी 561 किमी है, लेकिन पैदल जाने में 648 किमी की दूर तैय करना पड़ रहा है। पैदल जाने के दौरान शुरू में थोड़ी थकापट महसूस हुई थी। रास्ते में जगह-जहग राष्ट्रीय स्वयंसेवक, विश्व हिन्दू परिषद व हिन्दू संगठन के कार्यकर्ताओं द्वारा स्वागत व सहयोग मिलने से सभी काफी उत्साहित हैं। संघ व हिन्दू संगठन के कार्यकर्ताओं द्वारा मंदिर व धर्मशाला में ठहरने व भोजन की व्यवस्था की जाती है। इधर गांव वाले भी युवाओं की इस उत्साह की सरहाना कर रहे हैं। गांव के लोग बताते हैं कि भूमि पूजन पर भी इन युवकों द्वारा गांव में उत्साह मनाया गया था।

श्रीराम वनवास का अनुभव लेने निकले पैदल

मंगलवार तक वे सभी अयोध्या से लगभग 110 किमी दूर खेतासराय तक पहुंच चुके हैं। पैदल अयोध्या जाने के संबंध में बताया कि जिसके लिए कितने रामभक्तों ने वर्षों तक तपस्या व संघर्ष किया और कितने कार सेवक ने अपनी प्राणों की आहुति दी। जब श्रीराम लला मंदिर निर्माण की भूमि पूजन हुई थी। उसी समय श्रीराम लला की प्राण प्रतिष्ठा पर जाने का संकल्प ले लिया था। बताया वे चाहते तो वाहन से भी जा सकते थे, लेकिन 14 वर्ष की श्रीराम के वनवास की अनुभूति करने के उद्देश्य से सभी ने पैदल ही अयोध्या जाने का निर्णय लिया।

कृषि पशुपालन एवं सहकारिता विभाग
जिला गव्य विकास कार्यालय, कोडरमा

मुख्यमंत्री पशुधन विकास योजना के लाभुकों द्वारा लाभुक अंशदान राशि जमा करने हेतु अपील

सरकार के सचिव कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता विभाग (पशुपालन प्रभाग) के राज्यादेश संख्या – 10 रा0 , दिनांक – 14 / 06 / 2023 के आलोक में वित्तीय वर्ष 2023–24 में मुख्यमंत्री पशुधन विकास योजना अन्तर्गत गव्य प्रक्षेत्र की योजना / कार्यक्रमों के लिए कोडरमा जिला के पात्र लाभुकों का चयन जिला स्तरीय समिति से किया गया है। निर्देशानुसार योजना के क्रियान्वयन हेतु लाभुकों का Escrow/Dedicated Bank Account खोला जाना है, उक्त खाते को पंचायतवार बैंक प्रतिनिधि द्वारा खोला जा रहा है । इस क्रम में माह दिसम्बर 2023 तक लक्ष्य के अनुरूप काफी कम खाता खोला गया है एवं लाभुक अंशदान की संख्या भी काफी कम है।

वर्ष 2023–24 में वैसे लाभुकों के खाते में सरकारी अनुदान की राशि DBT की जाएगी जो पहले अपने Escrow/Dedicated Bank Account में अपना लाभुक अंशदान की राशि जमा करेंगे।

सभी चयनित लाभुकों से अपील है कि Escrow/Dedicated Bank Account में अपना लाभुक अंशदान यथाशीघ्र जमा कर जमा–पर्ची / साक्ष्य, जिला गव्य विकास कार्यालय, कोडरमा में जमा करेंगे ताकि उनके खाते में सरकारी अनुदान की निर्धारित राशि DBT की जा सके। चयनित लाभुकों की सूची प्रखण्ड पशुपालन पदाधिकारी के पास उपलब्ध है। ससमय लाभुकों के द्वारा लाभुक अंशदान पहले नहीं जमा किया जाता है तो सरकारी अनुदान की राशि का DBT संभव नहीं है। एसी परिस्थिति में प्राप्त आवंटन की राशि का व्ययगत (Lapse) होने की संभावना है। यह भी ज्ञातव्य है कि 01 मार्च 2024 से अन्यथा कोई आदेश न हो तो प्राप्त आंवटन का 15 प्रतिशत ही राशि की निकासी कोशागार से अनुमान्य है।

राज्यादेश के आलोक में योजना के अनुसार एवं लाभुक वर्ग के अनुसार लाभुक अंशदान का ब्यौरा निम्न प्रकार है –

1.दो गाय / भैंस की योजना :–

योजना का नाम	ईकाई योजना लागत	अनुदान	लाभुक अंशदान	प्रथम चरण (01 गाय)	
				अनुदान	लाभुक अंशदान
02 गाय / भैंस की योजना (90%)	135050	121545	13505	59753	6639
02 गाय / भैंस की योजना (75%)	135050	101288	33762	49795	16597

2. कामधेनु डेयरी फार्मिंग योजनान्तर्गत 05 गाय / भैंस की योजना :–

योजना का नाम	ईकाई योजना लागत	अनुदान	लाभुक अंशदान	प्रथम चरण (03 गाय)	
				अनुदान	लाभुक अंशदान
05 गाय / भैंस की योजना (75%)	337625	253219	84406	148913	49638
05 गाय / भैंस की योजना (90%)	337625	168813	168813	99276	99276

3. कामधेनु डेयरी फार्मिंग योजनान्तर्गत 10 गाय / भैंस की योजना :–

योजना का नाम	ईकाई योजना लागत	अनुदान	लाभुक अंशदान	प्रथम चरण (05 गाय)	
				अनुदान	लाभुक अंशदान
10 गाय / भैंस की योजना (75%)	675250	506438	168812	248970	82990
10 गाय / भैंस की योजना (90%)	675250	337625	337625	165980	165980

नोट :– उपरोक्त योजनाओं में सूचना एवं सहयोग और अधिक जानकारी हेतु संबंधित प्रखण्ड पशुपालन पदाधिकारी / भ्रमणशील पशुचिकित्सा पदाधिकारी एवं जिला गव्य विकास कार्यालय, कोडरमा से सम्पर्क किया जा सकता है।

निवेदनक
जिला गव्य विकास पदाधिकारी,
कोडरमा

PR 316153 (Agriculture,Animal Husbandry And Co-opretive Department)23-24*D

खबर मन्त्र

रांची. बुधवार .17 जनवरी 2024

अभिव्यक्ति

paper.khabarmantra.net

शैक्षणिक स्तर

कक्षा तीन से पांचवीं तक के छात्रों की सीखने की स्थिति ने खराब शिक्षण मानकों को ही उजागर किया है। दरअसल, इन छात्रों को संख्याओं के सामान्य जोड़-घटाव, अक्षरों और कहानियों को पढ़ने-लिखने को कहा गया था। लेकिन इसका परिणाम छात्रों की शैक्षणिक संभावनाओं के लिये सकारात्मक संकेत नहीं कहा जा सकता। वहीं यह स्थिति राज्य की स्कूली शिक्षा प्रणाली की निराशाजनक तस्वीर भी उकेरती है। जो कहीं न कहीं छात्रों के पढ़ाई के बीच स्कूल छोड़ने और कालांतर बेरोजगारी बढ़ाने का कारक भी बनता है। इस सर्वे में जो स्थिति सामने आई है वह परेशान करने वाली है। आज हमें इस बात पर मंथन करने की जरूरत है कि अंग्रेजी और गणित की पढ़ाई के स्तर में इतनी गिरावट क्यों है। सही मायनों में ये विषय ही कालांतर बच्चों के कैरियर की दशा-दिशा निर्धारित करते हैं। सर्वे के आंकड़ों से उपजी स्थिति कितनी गंभीर है वह इस बात से पता चलती है कि 75-80 फीसदी बच्चे अंग्रेजी की कहानी नहीं पढ़ पाए। यह स्थिति न केवल छात्रों की शोचनीय स्थिति को दशार्ती है बल्कि उन शिक्षकों के पठन-पाठन पर भी सवाल उठाती है, जो बच्चों को इन विषयों की शिक्षा दे रहे हैं। निश्चित रूप से अधिकांश बच्चों को गणित का विषय ज्यादा रोचक नहीं लगता, लेकिन यदि चालीस प्रतिशत बच्चे सामान्य जोड़-घटाव भी न कर सकें तो यह गंभीर चिंता का विषय है। निश्चित रूप से यह स्थिति सामान्य नहीं है। दूसरे अर्थों में कह सकते हैं कि ये बच्चे कमजोर बुनियाद के साथ आगे बढ़ रहे हैं। सवाल यह है कि व्यावहारिक जीवन के लिये बेहद महत्वपूर्ण इन विषयों के प्रति बच्चों में इतनी गहरी उदासीनता क्यों है। इस बारे मे शिक्षा विभाग और राज्य सरकार को गंभीर मंथन करना चाहिए। यह स्थिति सिर्फ झारखंड की नहीं पूरे उत्तर भारत के राज्यों की है जो चिंता का विषय है।

वैश्विक मंदी की बात

दुनिया 56 प्रतिशत मुख्य अर्थशास्त्रियों ने 2024 में वैश्विक आर्थिक मंदी की भविष्यवाणी की है। विश्व आर्थिक मंच पर हाल ही में जारी मुख्य अर्थशास्त्रियों के आउटलुक में बताया गया है। रिपोर्ट से पता चलता है कि विश्व अर्थव्यवस्था बहुत अच्छी नहीं दिख रही है और अनिश्चित है। समस्याओं में सीमित धन उपलब्धता, अंतर्राष्ट्रीय असहमति और एडवांस अक की तेज प्रगति शामिल है। ज्यादातर लोगों को उम्मीद है कि अगले वर्ष नौकरी बाजार (77%) और वित्तीय स्थितियां (70%) कम तनावपूर्ण हो जाएंगी। हालांकि विकास की भविष्यवाणियां क्षेत्र के अनुसार अलग-अलग होती हैं, लेकिन 2024 में बहुत मजबूत वृद्धि की उम्मीद नहीं है। हालांकि, दुनिया भर में उच्च मुद्रास्फीति की उम्मीदें कम हो गई हैं। विश्व अर्थव्यवस्था बढ़ते मतभेदों के साथ चुनौतियों का सामना कर रही है। जबकि मुद्रास्फीति नीचे जा रही है, विकास धीमा हो रहा है, फाइनेंशियल कंडिशन कठिन है, वैश्विक तनाव बढ़ रहा है, और असमानताएं बढ़ रही हैं। दक्षिण एशिया और पूर्वी एशिया-प्रशांत में अच्छी आर्थिक संभावनाएं होने की उम्मीद है, ज्यादातर लोग 2024 में अच्छी वृद्धि (क्रमशः 93% और 86%) की उम्मीद कर रहे हैं। हालांकि, चीन अपने दृष्टिकोण के बारे में ज्यादा सावधान है, 69% ने कम उपभोक्ता खर्च, कम औद्योगिक उत्पादन और प्रॉपर्टी मार्केट के बारे में चिंताओं के कारण मध्यम वृद्धि की भविष्यवाणी की है। यूरोप का आर्थिक आउटलुक खराब हो गया है, 77% लोगों को सितंबर 2023 के बाद से कमजोर या बहुत कमजोर वृद्धि की आशंका है। संयुक्त राज्य अमेरिका और मध्य पूर्व/उत्तरी अफ्रीका में लगभग 60% ने इस वर्ष मध्यम या मजबूत विकास की भविष्यवाणी की है। हालांकि, लैटिन अमेरिका/कैरिबियन, उप-सहारा अफ्रीका और मध्य एशिया में विकास की उम्मीदों में सुधार हुआ है।

श्रीराम मंदिर सांस्कृतिक पुनर्जागरण का अमृतकाल

खास बात

दुलारा शायर

डॉ. रमेश ठाकुर

उर्दू साहित्य का विशाल वटवृक्ष रविवार की सर्द शाम को नवाबों के शहर लखनऊ में ढह गया। 26 नवंबर 1952 को उत्तर प्रदेश के जिले रायबरेली में जन्मे मशहूर शायर जनाब मुनव्वर राणा ने एक अस्पताल में अंतिम सांस लेकर नश्वर दुनिया को अलविदा कह दिया। खुदा ने उनके निधन की वजह दिल के दौरे के रूप में मुकर्रर की, जबकि थे कैंसर से पीड़ित। उनके न रहने की खबर सोमवार तड़के पूरे संसार में आग की तरह फैली, जिसने भी सुनी वह स्तब्ध रह गया। बड़ी-बड़ी हस्तियों ने दुख जताया। मुनव्वर के निधन से न सिर्फ उर्दू-साहित्य को नुकसान होगा, बल्कि अवधी-हिंदी भाषा को भी गहरा धक्का लगेगा। विश्व पटल पर उन्हें अवधी का खूब प्रचार-प्रसार किया। उर्दू शायरी में नया प्रयोग करके उन्होंने देसी भाषाओं को अपनी जुबान बनाई थी।

राणा की कही प्रत्येक शायरी-कविता में ऐसी तल्खियां होती थीं, जो सियासतदानां को हमेशा नागवार गुजरी। उनकी प्रस्तुति में झलकता अलहदापन सुनने वालों को अपनी ओर खींचता था। मुनव्वर राना का जन्म बेशक उत्तर प्रदेश में हुआ, लेकिन ज्यादा वक्त उन्होंने कोलकाता में ही बिताया। वहां उनके वालिद का छोटा-मोटा कारोबार था। बचपन में वह बेहद शरारती व नटखट रहे। पहलवानी का भी शौक था जिसका हुनर उन्होंने मदरसे में तालीम लेने के दौरान टीचर को पटक कर दिखाया था। गलती पर टीचर ने डांटा तो उन्हें चित कर दिया, उसके बाद राणा को उनके वालिद ने खूब पीटा, तभी से उन्होंने पहलवानी का शौक त्याग दिया।

ये नाम उर्दू-साहित्य में सदैव अदब-सम्मान से लिया जाता रहेगा। साहित्य के अलावा अन्य सामाजिक मसलों पर उनकी बेबाक टिप्पणियां भी जगजाहिर रहीं। शायरी में शोहरत प्राप्ति की जहां तक बात है, तो मुनव्वर को सबसे ज्यादा प्रसिद्धि 'मां' के स्नेह और रिश्तों पर उकेरी कविताओं से ही मिली। मां की ममता को दशार्ने वाली कविता की एक लाइन हमेशा सभी के दिलों में जिंदा रहेगी। 'किसी को घर मिला हिस्से में या कोई दुकां आई, मैं घर में सबसे छोटा था मेरे हिस्से में मां आई...।'

अयोध्या में श्रीराम मंदिर का पुनर्निर्माण और प्रभु श्रीराम की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा मात्र एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि यह भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण और अभ्युदय का अमृतकाल है। अयोध्या में भव्य श्रीराम मंदिर हमें अपनी साझी धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहर को अक्षुण्ण रखने में मदद देगा।

श्रीराम भारतीय संस्कृति के प्रेरणा पुरुष हैं। एक आदर्श राजा, आदर्श पुत्र, आदर्श भाई, आदर्श पति, आदर्श मित्र हैं। हम भारतीय जिन सात्विक मानवीय गुणों को सदियों से पूजते आए हैं, वे सभी राम के व्यक्तित्व में निहित हैं। इसीलिए श्रीराम, मयार्दा पुरुषोत्तम हैं और हमारी आस्था के केंद्र में हैं। हमारे चेतन-अवचेतन मन में हैं और चिरकाल से इस देश के मानस में बसे हुए हैं। यहां राम सब के हैं और सब राम के हैं। चाहे पूरब हो या पश्चिम, उत्तर हो या दक्षिण, राम हमारे मानस में समाए हुए हैं। देश के किसी भी हिस्से में जाएं और आपको लोगों के नाम में राम मिलेगा-दक्षिण में रामय्या, रामचन्द्रन या रामनाथन हो या उत्तर में रामशरण, राम सिंह या रामदास, राम सभी में हैं। सुबह की राम-राम से लेकर जय सिया राम और जय श्रीराम हमारे लिए अभिवादन और अभिनन्दन हमारे व्यवहार में समाहित/सन्निहित हैं।

भारत ही नहीं राम का संदेश भौगोलिक सीमाओं से परे, सार्वभौम और कालातीत है, उनकी प्रासंगिकता महज भारतीय उपमहाद्वीप तक ही सीमित नहीं है। रामकथा के अनगिनत संस्करण दक्षिण पूर्वी एशिया के देशों जैसे थाईलैंड, इंडोनेशिया, कंबोडिया, म्यांमार, लाओस में आज भी प्रचलित हैं। आज भी, भगवान राम और देवी सीता का चरित्र चित्रण इन देशों की लोक परंपराओं का हिस्सा हैं। आज यही राम हमारे मानस से निकल कर प्राकट्य में आ रहे हैं। परिणामतः पूरा देश राममय हो गया है। राम के विग्रह की प्राण-प्रतिष्ठा हो रही है। अयोध्या अपने पुरातन वैभव की पुनः पाते हुए हमारी सांस्कृतिक राजधानी के रूम में प्रतिष्ठापित हो रही है। यह पूरे देश के लिए गौरव बोध का समय है। राम के आदर्शों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता एक लोकहितकारी न्यायपूर्ण शासन व्यवस्था को जिसमे सभी के लिए शांति, न्याय और समानता हो, सुनिश्चित करती है। इसीलिए श्रीराम मंदिर का निर्माण न केवल भारतीय सांस्कृतिक एकता का एक अद्वितीय प्रतीक है, यह सुशासन और सामाजिक समरसता की ओर प्रवृत्त करने की दिशा में एक महती प्रयास भी है। मंदिर ही एक वह जगह होती है जहां सभी वर्गों, जातियों, और समुदायों के लोग एकत्र होते हैं और साझा व्यवहार करते हैं जिससे धर्मिक एकता का संवर्धन होता है। रामायण में श्रीराम की कथा ने सभी वर्गों और समुदायों को एक साथ लाने का संदेश दिया है तथा भारतीय समाज में धर्म, नैतिकता और सत्य के मूल्यों को प्रोत्साहित किया है। परिणामतः श्रीराम मंदिर निर्माण एक बड़े सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक संवाद का हिस्सा बन गया है जो भारतीय समाज को धार्मिक और सांस्कृतिक आधारों पर मजबूत करने का प्रयास कर रहा है। निःसंदेह समाज में एकता और सभी धर्म-सम्प्रदायों के बीच समरसता की ओर यह एक महत्वपूर्ण कदम है।

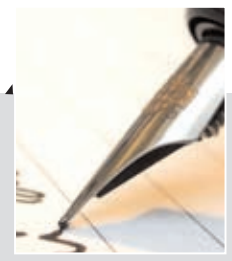

-श्याम जाजू

राम के आदर्शों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता एक लोकहितकारी न्यायपूर्ण शासन व्यवस्था को जिसमे सभी के लिए शांति, न्याय और समानता हो, सुनिश्चित करती है। इसीलिए श्रीराम मंदिर का निर्माण न केवल भारतीय सांस्कृतिक एकता का एक अद्वितीय प्रतीक है, यह सुशासन और सामाजिक समरसता की ओर प्रवृत्त करने की दिशा में एक महती प्रयास भी है। मंदिर ही एक वह जगह होती है जहां सभी वर्गों, जातियों, और समुदायों के लोग एकत्र होते हैं और साझा व्यवहार करते हैं जिससे धर्मिक एकता का संवर्धन होता है।

इसी 22 जनवरी को होने वाले प्रतिष्ठा समारोह में वाल्मीकि और रविदास मंदिर के पुजारियों की उपस्थिति और महर्षि वाल्मीकि के नाम पर अयोध्याधाम हवाई अड्डे का नामकरण, माता शबरी के नाम पर भोजनालय, निषादराज के नाम पर अतिथि निवास, सामाजिक एकता, न्याय और सद्भाव का ही एक उदाहरण है। बौद्ध और जैन परंपराओं में भी इस नगरी का विशेष महात्म्य है। साथ ही अयोध्या के मुस्लिम समुदाय का मंदिर निर्माण की तैयारियों में बढ़चढ़ कर हिस्सा लेना और फारूक अब्दुल्ला जैसों का यह कहना, कि ₹राम केवल हिंदुओं के नहीं हैं, राम सभी के हैं₹, सचमुच एक महान परिवर्तन है।

अयोध्या में नव निर्मित राममन्दिर मात्र मंदिर न केवल करोड़ों लोगों की आस्था, विश्वास और भारत के पुनर्जागरण का प्रतीक है बल्कि यह भारत की सोयी अस्मिता और आत्मविश्वास के जागरण का प्रतीक भी है। श्रीराम जन्म भूमि का आंदोलन हिन्दू समाज का आत्म साक्षात्कार है। यह इस बात का प्रमाण है कि अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हिन्दू साढ़े पांच सौ बरस की लंबी लड़ाई लड़ और जीत सकते हैं। सच में अयोध्या में रामलला का भव्य और दिव्य मंदिर का निर्माण सभी भारतीय नागरिकों के लिए सदियों पुराने सपने के पूरे होने जैसा है। पांच सौ वर्षों बाद रामनगरी का वैभव व कीर्ति लौट रही है।

इसे विधि का विधान भी कह सकते हैं कि नवनिर्मित मंदिर में श्रीराम के विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा का शुभ कार्य राम जन्मभूमि आंदोलन के महानायक पूर्व उपप्रधानमंत्री और सबके सम्माननीय लालकृष्ण आडवाणी और देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की उपस्थिति में हो रहा है जो स्वयं भी राम जन्मभूमि आंदोलन के नायकों में से एक रहे हैं। सर्वविदित है कि प्रधानमंत्री मोदी साल 1990 में भारतीय जनता पार्टी के तत्कालीन अध्यक्ष आडवाणी जी की सोमनाथ से अयोध्या तक की उस रथयात्रा के सारथी रहे हैं, जिसने मंदिर आंदोलन को निर्णायक रफ्तार देने का काम किया था।

मंदिर निर्माण के न केवल धार्मिक ० सांस्कृतिक बल्कि अन्य पहलू भी हैं जिसमें सामाजिक और आर्थिक प्रमुख हैं। मंदिर से न केवल सामाजिक समरसता बढ़ेगी बल्कि आर्थिक संवर्धन भी होगा। अयोध्या हिन्दुओं का तीर्थस्थल पहले से है, लेकिन श्रीराम मंदिर निर्माण के बाद इसका दरजा भी अमरनाथ यात्रा जैसी तीर्थ यात्राओं जैसा हो जाएगा। यह आने वाले समय में हरिद्वार, ऋषिकेश, बद्रीनाथ, कामरूप, द्वारका, श्रीजगन्नाथ पुरी जैसे हिंदू तीर्थस्थलों के बीच स्थापित जाएगा। महत्वपूर्ण बात यह भी है कि अयोध्या हिंदुओं के लिए ही नहीं, बौद्ध और जैन धर्मावलंबियों के लिए भी महत्व रखती है। ऐसे में अयोध्या अंतरराष्ट्रीय तीर्थस्थल के तौर पर उभरेगी, इसमें कोई संदेह नहीं है। धार्मिक पर्यटन का मॉडल न केवल आस्था का संवर्धन करेगा बल्कि आर्थिक रूप से पिछड़े पूर्वी उत्तर प्रदेश की समृद्धि के द्वार खोलेगा। सकारात्मक रूप से सोचें तो अयोध्या ने अपने विकास का मार्ग श्रीराम मंदिर के केंद्र में सुनिश्चित कर लिया है। (लेखक भाजपा से जुड़ें हैं।)

विनय न मानत...

धर्म-प्रवाह

स्वामी सत्यानंदजी परमहंस

समुद्र ने राम का क्रोध देखकर विनती किया प्रभु अगर हमारा जल खत्म हो गया तो मेरी महिमा खत्म हो ज ाएगी। अतः मैं अपनी गलती स्वीकारकरता हूं और क्षमा प्रार्थी हूं। आप कैसे पार करेंगे इसका उपाय बता देता हूं। आपकी सेना मेंनल ओर नील नामक दो बंदर हैं।ये जानते हैं कि क ौन सा पत्थर तैर सकता है और कौन सा पत्थर नहीं तैर सकता है। ये लोग चाहेंगे तो एक साथ इन्हें जोड़कर पुल बना देंगे। मैं भी सहयोग करूंगा। जब पुल बन जाएगा तो आपकी सेना उसी पुल से निकल जाएगी। ऐसा करेंगे तो आपका काम भी हो जाएगा और मेरी मर्यादा भी बच जाएगी। समुद्र की यह बात राम को अच्छी लगी और इस तरह ही करने का फैसला ले लिया गया। जब सेतुबंध होने लगा तो यह संसार की आश्चर्यजनक घटना थी। समुद्र में पुल बनाया जा रहा था। पहले कुछ छिछला जल जहां गहराई कम थी। ऐसे जगह पर श्रीराम ने दूर दराज से कंकड़ पत्थर मंगवा कर भरावा दिये। जहां से गहराई शुरु हो रही थी वहां से तय किया गया कि पुल का निमार्ण किया जाए। इस इलाके में बहुत से ऐसे पत्थर थे जो तैर सकते थे। पत्थरों को एक साथ बांधने का काम नल औरनील कर रहे थे। देखते देखते ही समुद्र पर सुसज्जित पुल बन गया और इस पार से उस पार आना-जाना आसान हो गया। श्रीराम ने ऐसा करके अपने शंकर स्वरूप गुरु को याद किया और प्रतीकात्मक शंकर की पूजा की। आगे वे सेना सहित लंका पहुंच चुके थे।

(ब्रह्म विद्यालय सह आश्रम)

मंदिर निर्माण के साथ सिर्फ अयोध्या ही नहीं, बल्कि संपूर्ण भारत के भाग्य का नया सूर्य उदित होगा। निःसंदेह यह अवसर हर्ष और उल्लास का है। अयोध्या इस तरह प्रसन्न है, जैसे कि अपने आराध्य का पुनः प्राकट्य हो रहा हो है।

- श्री नृत्य गोपाल दास,
श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के प्रमुख महंत

रोचक ट्वीट

माननीय गृह मंत्री आदरणीय श्री अमित शाह जी की बहन श्रीमती राजेश्वरीबेन जी के निधन का दुःखद समाचार मिला।परमात्मा दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान कर शोकाकुल परिवारजनों को दुःख की यह विकट घड़ी सहन करने की शक्ति दे। **- हेमंत सोरेन, सीएम**

अपने,आपके, हम सबके सौभाग्य पर इतरा रही हूं हमारे राम बस आ ही रहे हैं,सो देवालय का अंगना सजा रही हूं। जय जय श्रीराम!!

- अन्नपूर्णा देवी, केन्द्रीय मंत्री

राम वन गमन मार्ग का काम अब भी अधूरा है

डॉ. मयंक चतुवेर्दी

दरअसल, यहां जिक्र हो रहा है "राम वन गमन" मार्ग का। अपने 14 वर्ष वनवास काल में मयार्दापुरुषोत्तम राम, माता सीता एवं भाई लक्ष्मण के साथ मप्र के जिन स्थलों से होकर गुजरे, वह पूरा क्षेत्र आज भी पूर्णता को प्राप्त कर विकसित मार्ग एवं विकास की बाट जोह रहा है। मध्य प्रदेश में राम वन गमन पथ चित्रकूट से अमरकंटक तक 370 किलोमीटर है। यहां भगवान श्रीराम ने वनवास के दौरान 11 साल 11 महीने और 11 दिन का समय व्यतीत किया। वह जिन रास्तों से गुजरे उसे ही "राम वन गमन पथ" कहा जाता है।

प्रदेश में सतना, पन्ना, कटनी, जबलपुर, नर्मदापुरम, उमरिया, शहडोल और अनूपपुर जिले के स्थलों को चिह्नित किया गया है। इसमें स्फटिक शिला, गुप्त गोदावरी, अत्रि आश्रम, शरभंग आश्रम, अश्वमुनि आश्रम, सुतीक्ष्ण आश्रम, सिद्धा पहाड़, सीता रसोई, रामसेल, राम जानकी मंदिर, बृहस्पति कुंड, अग्निजिह्वा आश्रम, अगस्त्य आश्रम, शिव मंदिर, रामघाट, श्रीराम मंदिर, मार्कंडेय आश्रम, दशरथ घाट, सीता मढ़ी शामिल हैं। उल्लेखनीय है कि श्री रामचंद्र पथ गमन न्यास का काम केंद्र सरकार की तरफ से प्रदेश में चिह्नित श्रीराम वन गमन पथ के 23 स्थलों का विकास करना है। इन स्थानों को जोड़ने वाले मार्ग को सुगम और सुविधाजनक बनाने के साथ पर्यटन की गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए यात्री सुविधाओं का विकास और उनका संचालन किया जाना है।

सामयिक

इस कार्य के विस्तार एवं भव्यता प्रदान करने की शुरूआत यहां साध्वी उमा भारती के सत्ता में आते ही शुरू हुई थी, वहीं, उन्होंने उस दौरान कहा भी था कि हम "रामपथ गमन मार्ग" को विकसित करेंगे । लेकिन वे ज्यादा दिन मुख्यमंत्री नहीं रहीं और उनके जाने के बाद जैसे यह कार्य नेपथ्य में चला गया हो। फिर जब इसके बारे में मीडिया समेत तमाम श्रीराम के भक्तों ने तत्कालीन मुख्यमंत्री बाबूलाल गौर को याद दिलाया तो उन्होंने भी इसके प्रति अपनी रूचि प्रकट की और संपूर्ण क्षेत्र के विकास का सिर्फ वादा किया। इसके बाद एक नया युग मप्र की राजनीति में शिवराज सिंह चौहान का शुरू होता है, रामपथगमन क्षेत्र भी एक ऐसा कार्य रहा, जहां विकास जमीन पर उतरे जरूरी लेकिन अधुरे-अधुरे। शिवराज के सीएम रहते हुए ही आगे बढ़े, जिसमें कि मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना, ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग और जैन तीर्थ सिद्धवरकूट क्षेत्र का विकास, सलकनपुर देवि धाम जीर्णोद्धार, महाकाल लोक जैसे तमाम बड़े कार्य सम्पन्न हुए लेकिन हर बार की तरह उनके कार्यकाल में भी "राम वन गमन पथ" का कार्य अधूरा ही रह गया।जब बीच में 16 माह तक के अल्प समय के लिए कांग्रेस की सत्ता रही तब इतना भर इसमें हुआ कि "राम वन गमन पथ" के विकास के लिए कमलनाथ सरकार ने वर्ष 2019 में कार्ययोजना तैयार कर 22 करोड़ रुपये का बजट प्रावधान तो किया गया पर इस सरकार में भी काम कुछ नहीं हुआ। जो कुछ भी चचाओं में रहा, वह भी कागजों तक सीमित था।

इसके बाद दोबारा सत्ता में आते ही शिवराज सरकार ने इस कार्य को आगे बढ़ाया और 2022 में मध्य प्रदेश में "राम वन गमन पथ" (कॉरिडोर) का काम पहले चरण में आरंभ करने की मंशा से मूलभूत सुविधाएं जुटाने हेतु 300 करोड़ रुपये के प्रस्ताव को अनुमति दे दी थी। लेकिन बात यहां भी पूरी तरह से नहीं बनी। हां इतना जरूर हुआ कि "राम वन गमन पथ" के लिए न्यास का गठन मध्य प्रदेश की पिछली शिवराज सरकार ने कर दिया था, जिसकी बैठक होकर इससे जुड़े आवश्यक निर्णय लिए जाने थे, लेकिन एक भी बैठक नहीं हो पाई और विधानसभा चुनाव की तारीख घोषित हो गयी।

कॉर्टून वर्ल्ड

मालदीव में चीन का निवेश

लेटर टू एडिटर

विकसित होती अर्थव्यवस्था

दुनिया की सबसे तेज विकसित होती अर्थव्यवस्था के सबसे तेज गिरावट वाली अर्थव्यवस्था बन जाने की खबर ने टिप्पणियों की बाढ़ ला दी। इस दौरान कहा गया कि भारत की वृद्धि संभावना 6 फीसदी से घटकर 5 फीसदी रह गई। यह स्पष्ट हो चुका है कि कोविड-19 के कारण बनी मंदी की परिस्थितियों से उबरने तक राजकोषीय घाटा और सार्वजनिक ऋण रिकॉर्ड स्तर पर होगा। **- ममता यादव, रांची।**

राहुल से उम्मीद

आजादी से लेकर आज तक कांग्रेस नेहरू गांधी परिवार की बपौती रही है। एक-दो बार छोड़कर कोई राजनेता इसको चैलेंज नहीं कर सका; यदि किसी ने हिम्मत भी की तो कांग्रेस का ही विभाजन हो गया, परन्तु फिर भी यह गांधी परिवार की ही सम्पदा बनी रही। अबकी बार फिर कोशिश हुई परन्तु उन्हीं के पर काट दिए गए।

- सुनील सिन्हा, हजारीबाग

मुझको अपनी मां की, मैली ओढ़नी अच्छी लगी...

श्रद्धांजलि

मुकुंद

बेहद अजीम और अजीज शायर मुनव्वर राणा तहजीबी शहर लखनऊ की सरजमीं पर सोमवार को सुपुर्द-ए-खाक कर दिए गए। रविवार देररात दिल का दौरा पड़ने से राणा ने इसी शहर में फानी दुनिया को अलविदा कहा। मुशायरों की महफिल को लूटने वाले मुनव्वर उर्दू को ही नहीं उसकी बहन हिन्दी को भी गहरी उदासी के समंदर में डुबो गए। मुशायरों और दीगर महफिलों में भी मुनव्वर राणा से मां पर केंद्रित उनकी गजलों को हजारों बार सुनाया गया। 71 वर्षीय राणा के चाहने वाले सदमे में हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मुनव्वर राणा के निधन पर शोक व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में जन्मे मुनव्वर राणा ने उर्दू साहित्य में समृद्ध योगदान दिया है। प्रधानमंत्री ने एक्स हैंडल पर कहा, श्री मुनव्वर राणा जी के निधन से दुख हुआ। उन्होंने उर्दू साहित्य और काव्य में समृद्ध योगदान दिया। उनके परिवार और प्रशंसकों के प्रति मेरी संवेदनाएं हैं। उनकी आत्मा को शांति मिले।

मुनव्वर राणा ने अपनी शायरी, गजल, नज्म और कविताओं से हर किसी के दिल को छुआ है। उन्होंने मां और पुत्र के पवित्र रिश्ते, मां के प्रेम और करुणा के अहसास को अपनी रचनाओं के जरिये बयां किया है। इस फनकार के न रहने पर उनकी गजल की यह चंद पंक्तियां जेहन में उभर आईं-"दुख भी ला सकती है लेकिन जनवरी अच्छी लगी/जिस तरह बच्चों को जलती फुलझड़ी अच्छी लगी/रो रहे थे सब, तो मैं भी फूटकर रोने लगा/मुझको अपनी मां की, मैली ओढ़नी अच्छी लगी।" यह वो पंक्तियां हैं, जिन्होंने मुनव्वर को रातों-रात देश-दुनिया में शोहरत प्रदान की। यह भी इत्तेफाक है कि 2024 में जनवरी आई और एक अजीम शख्सियत दुनिया से उठ गया। लेकिन यह जनवरी मुनव्वर की उस ख्वाहिश को पूरा कर गई, जो उन्होंने अपनी मां की मौत पर भरभराई आवाज में कहा था-"मेरी ख्वाहिश है कि मैं फिर से फरिश्ता हो जाऊं/ मां से इस तरह से लिपट जाऊं की बच्चा हो जाऊं।"

मुनव्वर राणा के न रहने की बात जैसे ही अस्पताल से बाहर आई, रात सोने के लिए बिस्तरों पर पहुंच चुके उनके चाहने वाले लाखों लोग हड़बड़ाकर उठ बैठे। उनकी नींद उड़ गई। इन्हीं में से एक हैं वरिष्ठ शायर और पत्रकार हसन काजमी। वो उनके हम प्याला-हम निवाला रहे हैं। कहते हैं बताने को ढेरों यादें हैं। वो रायबरेली के थे पर कोलकाता रहते थे। वहीं पढ़े-लिखे। ट्रांसपोर्ट के धंधे में हाथ आजमाया। फिर लखनऊ आए। उन्हें उस्ताद वाली आसी की शागिर्दी मिली। मैं यहीं उनसे मिला। कब दोस्त बन गए, पता ही नहीं चला। गुलमर्ग होटल अमीनाबाद में उन्होंने एक कमरा लिया और शुरू हो गया महफिलों का दौर। इस बीच अखबार निकालने की एक कोशिश की गई पर वो नाकाम हो गई।

उनके जिगरी दोस्तों में उत्तर प्रदेश पॉवर कॉरपोरेशन के पूर्व प्रबंध निदेशक एपी मिश्रा भी हैं। वो कहते हैं, बड़ा बेईमान निकला। कहता था कि जाने को हम पाकिस्तान चले जाते, पर ये दोस्त कहां मिलेंगे। उसने हम कुछ दोस्तों पर लिखा था- जाने को हम पाकिस्तान चले जाते, पर ये दोस्त कहां मिलेंगे/ ये बड़े लोग हैं जीने का हुनर जानते हैं...।

वह कहते हैं कि मुनव्वर से पहली मुलाकात 2000 कुंभ में हुई थी। तब से शायद कोई एक दिन नहीं रहा, जब बात न होती रही हो। अभी कुछ दिन पहले वादा किया था कि मेरे चैंबर में आकर मुझे कुछ सुनाएगा। सब झूठ निकला।

संस्थापक
स्व. डॉ अभय कुमार सिंह

वृन्दा मीडिया पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक, प्रकाशक
मंजू सिंह

द्वारा चिरौंदी, बोड़ेया रोड, रांची (झारखंड) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

संपादक
अविनाश ठाकुर*
फोन : 95708-48433
पिनः -834006
e-mail
khabarmantra.city@gmail.com

R.N.I No.
JHAHIN/2013/51797

*पीआरबी एक्ट के अंतर्गत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी। प्रकाशित खबरों से संबंधित किसी भी विवाद का निपटारा रांची न्यायालय में ही होगा।

स्पीड न्यूज

दिगवार : सड़क हादसे में एक की मौत

कुजू। ओपी क्षेत्र के बेगाबार नीम टोला के समीप बाईपास पर सड़क पार करने के दौरान अज्ञात वाहन की चपेट में आकर एक व्यक्ति की मौत हो गयी। बताया जाता है कि दिगवार हथमारा निवासी सलीम अंसारी (58 वर्ष) पिता स्व हाजी नूर मोहम्मद कुजू कोलियरी स्थित अपनी दुकान को बंद कर वापस घर लौट रहे थे। इसी दौरान उक्त सड़क पार करने के क्रम में अज्ञात वाहन ने अपनी चपेट में ले लिया। बाद कुजू पुलिस द्वारा इलाज के सदर अस्पताल ले जाया गया।जहां उसकी मौत हो गई। मंगलवार को अंत्यपरीक्षण कराकर पुलिस द्वारा शव परिजनों को सौप दिया गया। तत्पश्चात शव का मिट्टी मंजिल स्थानीय कब्रिस्तान में किया गया।

दोतल्ला पंचायत में साइकिल प्रतियोगिता

भुरकुंडा (रामगढ़)। बुध बाजार दोतल्ला में मंगलवार को नमामि गंगे योजना अंतर्गत जागरूकता अभियान चलाने को लेकर साइकिल दौड़ प्रतियोगिता हुआ। साइकिल रेस में बेहतर प्रदर्शन करते हुए मो. सदान ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। अभिनायक ने द्वितीय व निश्चय कुमार तृतीय स्थान प्राप्त कर सफल प्रतिभागी घोषित हुए। सफल प्रतिभागियों को मुखिया सत्यवंती देवी ने नमामि गंगे का मेडल पहनाकर सम्मानित पुरस्कृत किया। सत्यवंती देवी ने बताया कि नमामि गंगे योजना अंतर्गत अपने ग्राम पंचायत के नदियों, नालो, झरनों, तालाब व जलाशयों को पूरी तरह से साफ-सफाई करके स्वच्छ रखने हेतु जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। इसमें सभी की सहभागिता जरूरी है। कार्यक्रम को सफल बनाने में पूर्व मुखिया सह मुखिया प्रतिनिधि लव कुमार महतो, प्रधानाध्यापक रवीश कुमार, पंचायत सचिव सागर कुमार, शिक्षिका अनीता तिवारी, वार्ड सदस्य वीणा देवी, प्रशांत कुमार, विप्लव कुमार, शशिकांत सिंह, भीम सिंह, राजू कुमार आदि का विशेष योगदान रहा।

प्रजापति समाज का वनभोज 28 को

रजरप्पा । झारखंड प्रजापति (कुम्हार) महासंघ की ओर से 28 जनवरी को पतरातू डैम परिसर में वनभोज सह मिलन समारोह कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। समारोह के बतौर मुख्य अतिथि के रुप में बेरमो के पूर्व विधायक योगेश्वर महतो बाटुल, नवनिर्वाचित प्रदेश अध्यक्ष देवनारायण प्रजापति, पतरातू पार्षद राजाराम प्रजापति सहित रांची, धनबाद, बोकारो, जमशेदपुर, हजारीबाग आदि जिले से समाज के कई शिक्षित, कर्मठ, जनप्रतिनिधि, प्रबुद्ध, महिलाएं एवं युवा वर्ग के लोग शामिल होंगे। इस दौरान गोला, दुलमी, चितरपुर, मांडू एवं पतरातू प्रखंड का कमेटी गठन किया जाएगा. यह जानकारी संघ के जिलाध्यक्ष राधा विनोद प्रजापति, सचिव उमेश प्रजापति एवं कोषाध्यक्ष नरेश प्रजापति ने संयुक्त रूप से जानकारी देते हुए उन्होंने सभी से आह्वान किया कि एक-दूसरे का सहयोग करें।

किन्नर समाज का सम्मेलन शुरू

चरही। चुरचू प्रखंड के इंद्रा स्थित 14 माइल के पास चरही रेलवे स्टेशन के समीप किन्नर समाज के द्वारा सात दिवसीय सम्मेलन किया गया।सम्मेलन का प्रारंभ 12 जनवरी से किया गया है, 18 जनवरी को विधि-विधान के साथ संपन्न किया जाएगा।इस सम्मेलन में देश के कई जगहों से बड़ी संख्या में किन्नर समाज के लोग जुटे हैं। किन्नर समाज के नेतृत्व कर्ता आरती नायक है। मंगलवार को सम्मेलन स्थल पर भगवान श्री गणेश की प्रतिमा और कलश को स्थापित कर विधि-विधान के साथ पूजा-अर्चना किया गया। मौके पर किन्नर समाज के आरती नायक,अनवर मां,सोनी नायक,रानी किन्नर,रमा किन्नर,पायल नायक,चंदा नायक, बेबो किन्नर,पूजा किन्नर,सपना किन्नर,नूरी किन्नर सहित कई किन्नर थे।

महायज्ञ को ले नौ दिवसीय पूजा शुरू

भुरकुंडा (रामगढ़)। मकर संक्रांति के शुभ अवसर पर भुरकुंडा बाजार प्राचीन हनुमान मंदिर सह श्री खोपडिया बाबा धर्मशाला में आयोजित 48 घण्टे का अखंड हरिकीर्तन का मंगलवार को हवन पूणार्हुति और भंडारे के साथ समापन हुआ। भंडारे में भारी संख्या मे भक्तजन शामिल हुए और प्रसाद पाया। अखंड हरिकीर्तन के दौरान हरे राम हरे कृष्ण के भजन जयकारो से भुरकुंडा कोयलांचल गूंजता रहा है। वहीं अयोध्या मे नवनिर्मित भव्य श्रीराम मंदिर मे भगवान रामलला की प्राण प्रतिष्ठा महायज्ञ को लेकर मंगलवार को भुरकुंडा प्राचीन हनुमान मंदिर सह श्री खोपडिया बाबा धर्मशाला में भी विशेष पूजा अनुष्ठान शुभारंभ हुआ। यह पूजा अनुष्ठान नौ दिनो तक चलेगा। अखंड हरिकीर्तन पूजा अनुष्ठान को सफल बनाने मे पुरोहित नंदकिशोर मिश्रा यजमान बाबुलाल नायक,मंजू देवी, शम्भू साव, बृजनंदन दास बाबू भैया ,अशोक ,राजेंद्र रोशन,अभिषेक मिश्रा, भीम सिंह ,नान्हू राय, सुभाष राय ,राजेन्द्र सिंह,भोला प्रसाद गुप्ता , गुलाब मिश्रा, विनय मिश्रा, प्रदीप सिंह, बिट्टू, अमित शर्मा , नरेश साव, किशोर कुमार संतोष मिश्रा , ओमप्रकाश गुप्ता, सुनील सिंह, राकेश सिंह, अजय मिश्रा, संतोष ,पवन कुमार, किशन, साहिल, विकास सचिन, कुमार, पंकज, करण, रवि कुमार, कृष्णा यादव आदि भक्तजन योगदान दे रहे है।

विधायक मनीष जायसवाल ने सदर प्रखंड के तीन पंचायतों का किया दौरा, कहा

सदियों का सपना हो रहा साकार

खबर मन्त्र संवाददाता

22 जनवरी को राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा को ऐतिहासिक बनाने को घर-घर किया अक्षत का वितरण

हजारीबाग। सदर विधायक मनीष जायसवाल ने मंगलवार को हजारीबाग सदर विधानसभा क्षेत्र के सदर प्रखंड क्षेत्र के तीन पंचायतों का सघन दौरा किया और आने वाले 22 जनवरी को अयोध्या में श्री राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा को लेकर इस ऐतिहासिक बनाने के लिए घर-घर पहुंचकर अक्षत वितरण किया और लोगों से दीपोत्सव व रामोत्सव मनाने का अपील किया। विधायक मनीष जायसवाल ने सदर प्रखंड के अमृतनगर, अमनारी और चुटियारो पंचायत के कई गांवों में पहुंचे और लोगों से खुशियां मनाने का अपील किया । विधायक मनीष जायसवाल अमृतनगर के घर- घर में अक्षत बांटे, डंडई कला स्थित मंदिर प्रांगण में ग्रामीणों के द्वारा निकले शोभायात्रा के समापन पर उनके बीच पहुंचकर उन्हें संबोधित किया। वहीं चुटियारो एवं सरैनी के ग्रामीणों के साथ रामभक्ति में रमे दिखें। मौके पर विधायक मनीष जायसवाल ने कहा की सनातनियों के सदियों का सपना साकार हो रहा है तो उल्लास मनाने का आकार भी हृदय से बड़ा होना चाहिए। शांतिपूर्ण तरीके से घर और मंदिर में रामोत्सव मानना चाहिए । मौके पर विशेष रूप से सदर विधायक प्रतिनिधि विजय कुमार, कटकमसांडी विधायक प्रतिनिधि किशोरी राणा, भाजपा सदर पूर्वी मंडल अध्यक्ष रामचंद्र प्रसाद, अमृतनगर मुखिया दिनेश कुमार, सदर विधायक मीडिया प्रतिनिधि रंजन चौधरी सहित अन्य गणमान्य लोग मौजूद थे।

अक्षत का वितरण करते विधायक मनीष जायसवाल।

बहु ने निभाया बेटे का फर्ज

खबर मन्त्र संवाददाता

ससुर को मुखाग्नि देकर पेश किया मिसाल

टाटीझरिया । टाटीझरिया प्रखंड के झरपो में टुकन साव उम्र (80 वर्ष) की मौत बीमारी के कारण 13 जनवरी को हो गई थी। घर परिवार के कोई सदस्य इस दुख की घड़ी में आगे नहीं आए। मृतक के पुत्र की भी मौत 15 वर्ष पहले हो गई थी। काफी विचार विमर्श के बाद मृतक की बहु मोसोमात सोहरी ने मृतक ससुर टुकन साव का अंतिम संस्कार के लिए आगे आई। उन्होंने 14 जनवरी को बहु ने ससुर को मुखाग्नि देकर प्रखंड क्षेत्र में अनुठी मिशाल कायम की। मंगलवार बंधिया पोखर घाट में जाकर तृतीय गात्र श्राद्ध पिंडदान कार्यक्रम को किया । मृतक के एक पुत्र व तीन पुत्रियां थे। जिसमें पुत्र सुरेश साव की 15 वर्ष पहले मौत हो चुकी है । तीन बेटियों की शादी भी हो चुकी है। तीनों ही अपने पिता की मौत पर पहुंचे है। बहु मोसोमात सोहरी ने बताया कि घर परिवार को ससुर के श्राद्ध कार्यक्रम को लेकर विचार विमर्श किया गया था। जिसमें कोई भी मुखाग्नि देने के लिए घर परिवार का सदस्य तैयार नहीं हुआ। बहु ससुर को पिता की तरह मानती थी। जब कोई सामने नहीं आया तो मैने इनका अंतिम संस्कार पुत्र की भांति किया। उनके अंतिम संस्कार में झरपो के कई लोग शामिल थे। बहु के द्वारा ससुर को मुखाग्नि देने के बाद क्षेत्र में चर्चाएं तेज हो गई है।

अन्नपूर्णा देवी से मिला भुरकुंडा विकास मंच

भुरकुंडा (रामगढ़)। मकर संक्रांति के अवसर पर केंद्रीय शिक्षा राज्य मंत्री अन्नपूर्णा देवी से उनके आवास कोडरमा में भुरकुंडा क्षेत्र विकास मंच के प्रतिनिधिमंडल ने मुलाकात की। गिरधारी गोप के नेतृत्व में मंच के प्रतिनिधि मंडल ने अन्नपूर्णा देवी को केंद्रीय विद्यालय भुरकुंडा को पुनः भुरकुंडा क्षेत्र में ही स्थायी रूप से स्थापित करने से सबंधित ज्ञापन भी सौंपा। मंच ने केंद्रीय विद्यालय के मामले में झारखंड उच्च न्यायालय से पारित आदेश की प्रति भी मंत्री को सौंपा।

श्रीराम गंगा आरती के होर्डिंग पर वनभोज का फ्लैक्स लगाना ओछी मानसिकता : निशि पांडेय

भुरकुंडा (रामगढ़)। नलकारी नदी तट पर 21 जनवरी को होने वाले श्रीराम गंगा महाआरती को लेकर मतकमा चौक में लगाये गये होर्डिंग के ऊपर कांग्रेस के वनभोज का फ्लैक्स लगाने मामले पर भारतीय जनतंत्र मोर्चा की केंद्रीय महासचिव सह बड़कागांव विधानसभा क्षेत्र की समाजसेविका निशि पांडेय ने कहा कि यह हिन्दू विरोधी ओछी मानसिकता का परिचय है। विधायक अंबा प्रसाद का असली चेहरा सामने आ गया है। उन्होंने कहा कि जिस ऐतिहासिक कार्यक्रम को लेकर पूरे सनातन धर्म और देशवासियों में हर्षोल्लास का माहौल है, वहीं कार्यक्रम के फ्लैक्स के साथ इस तरह की राजनीति करना विधायक की हिन्दू विरोधी मानसिकता को दर्शाता है।

धौड़ा में मैराथन दौड़ प्रतियोगिता

भुरकुंडा (रामगढ़)। भुरकुंडा पंचायत के नीचे धौड़ा फुटबॉल मैदान में जिला उपायुक्त जिला जनसंपर्क पदाधिकारी प्रखंड विकास पदाधिकारी के दिशा-निर्देश पर मंगलवार को नमामि गंगे योजना अंतर्गत मैराथन दौड़ व साइकिल दौड़ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। भुरकुंडा पंचायत के मुखिया अजय पासवान के नेतृत्व में आयोजित प्रतियोगिता में भुरकुंडा पंचायत क्षेत्र के दर्जनों नन्हे-मुन्ने बच्चे व बच्चियों ने उत्साह के साथ मैराथन दौड़ व साइकिल दौड़ प्रतियोगिता में हिस्सा लिया।

मैराथन दौड़ में बेहतर प्रदर्शन के लिए अंश कुमार को प्रथम पुरस्कार से नवाजा गया। आर्यन पांडेय द्वितीय व आयुष कुमार को तृतीय स्थान पाने पर मैडल व ट्रॉफी देकर मुखिया अजय पासवान ने सम्मानित किया। साथ ही प्रतियोगिता में शामिल सभी बच्चों को सांत्वना पुरस्कार के रूप में ट्रॉफी देकर पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम के तहत स्वच्छता को लेकर जागरूकता अभियान चलाया गया। साथ ही पढ़ाई के साथ-साथ बच्चों को खेल-कूद के लिए भी प्रेरित किया गया। मौके पर मुखिया अजय पासवान ने कहा कि अपने घर व आसपास के क्षेत्रों को साफ-सुथरा रखना हमसबों का दायित्व है। उन्होंने कहा कि पढ़ाई की तरह खेलो में भी बेहतर प्रदर्शन कर करियर बनाया जा सकता है। मौके पर पंचायत सचिव सावित्री कुमारी, वार्ड सदस्य रौशन पासवान, लाली करमाली, अमित पासवान, राजू राम, शिवकुमार दास, विजय पासवान, द्रोपदी देवी, अनिता देवी, गुड़िया देवी सहित दर्जनों ग्रामीण मौजूद थे।

देवचंदा में पूर्व विधायक के पहल पर लगा ट्रांसफार्मर

जनता की सेवा मेरी पहली प्राथमिकता : मनोज यादव

बरही। प्रखण्ड के केदारुत पंचायत अंतर्गत ग्राम देवचंदा गांव में बीतें कई दिनों से ट्रांसफार्मर जल जाने से ग्रामीणों को काफी परेशानी हो रही थी।ग्रामीणों के शिकायत पर पूर्व विधायक मनोज यादव ने ग्रामीणों को आश्वासन दिया कि जल्द ही उनके गांव में नया ट्रांसफार्मर उपलब्ध कराया जायेगा। उन्होंने तत्काल 63 केवीए का नया ट्रांसफार्मर उपलब्ध कराया। ट्रांसफार्मर का उद्घाटन मनोज यादव की उपस्थिति में जिला परिषद सदस्य प्रीति गुप्ता, स्थानीय मुखिया सरिता देवी एवं वार्ड सदस्य सुषमा देवी ने संयुक्त रूप से किया। ग्रामीणों को पूर्व विधायक ने आश्वस्त किया कि जनता की सेवा करना उनका उद्देश्य है। मौके पर भाजपा जिला उपाध्यक्ष रमेश ठाकुर, मुखिया प्रतिनिधि विशेश्वर यादव, प्रदुमन सिंह, वार्ड सदस्य सुषमा देवी, इन्दर देव ठाकुर सहित सैकड़ों ग्रामीण उपस्थित थे।

फ्लैग फाउंडेशन ने शुरू किया तिरंगा अभियान

भुरकुंडा (रामगढ़)। जाने-माने उद्योगपति नवीन जिन्दल के नेतृत्व में देशभर में राष्ट्रभक्ति की अलख जगा रहे फ्लैग फाउंडेशन ऑफ इंडिया ने शनिवार की देर शाम नई दिल्ली के कनॉट प्लेस में विशेष कार्यक्रम आयोजित कर ह्लहर दिन तिरंगाह्व शपथ अभियान की शुरूआत की। बताया गया की इस अभियान में कोई भी भाग ले सकता है। इसके लिए फ्लैग फाउंडेशन ऑफ इंडिया की वेबसाइट पर जाकर शपथ लेनी होगी। जिसके लिए खास प्रमाण-पत्र प्रदान किया जाएगा। मंगलवार को प्रेस बयान जारी कर बताया गया की फ्लैग फाउंडेशन ऑफ इंडिया ने 13 जनवरी को हर दिन तिरंगा शपथ अभियान की शुरूआत की है। फाउंडेशन के सेक्रेटरी जनरल, मेजर जनरल (अवकाश प्राप्त) अशीम कोहली ने बताया कि दोपहर बाद करीब 1 बजे यह कार्यक्रम शुरू हुआ। जिसमें सैकड़ों लोगों ने पूरे उत्साह से भाग लिया। उन्होंने कार्यक्रम के दौरान कारगिल समेत अनेक युद्धों के अपने अनुभव लोगों के साथ साझा किये और देशवासियों का आह्वान किया कि वे रोज राष्ट्रीय ध्वज फहराकर राष्ट्र निर्माण में योगदान करने की प्रेरणा लें। लगभग 7 घंटे चले इस कार्यक्रम में बच्चों से लेकर बुजुर्गों ने हाथ में राष्ट्रीय ध्वज थाम कर प्रत्येक दिन तिरंगे के माध्यम से देशप्रेम प्रदर्शित करने की शपथ ली।

21 नकली सिलाई मशीन बरामद

रामगढ़ । पुराना बस स्टैंड में पुलिस ने मंगलवार को छापेमारी अमन इंटरप्राइज से 21 नकली सिलाई मशीन जब्त किया । थाना प्रभारी रोहित कुमार ने बताया कि नूर सिलाई मशीन कंपनी के दो अधिकारी बंगाल से थाना पहुंचे। इनका आरोप था की अमन इंटरप्राइज दुकान से नकली नूर कंपनी के सिलाई मशीन का अवैध कारोबार हो रहा है । जिसके बाद पुलिस द्वारा छापेमारी की गई । 21 सिलाई मशीन को जब्त कर पुलिस अपने साथ ले गयी।

रामगढ़ जिले में फल फूल रहा अवैध कोयले का कारोबार

ज्योति सिन्हा

गोल- चिमनी भट्ठों व फैक्ट्रियों के माध्यम से खपाया जा रहा अवैध कोयला

रामगढ़। रामगढ़ जिले में इन दिनो अवैध कोयले का धंधा तेजी से फल फूल रहा है। सीसीएल की खदानो से चोरी किये गये कोयले तथा साइडिंग में ट्रांसपोर्टिंग होने वाले कोयले को रात के अंधेरे में खपाया जा रहा है। इससे लिंकेज के कोयले को एक ओर बाहर के कोयले की मंडियों में भेजकर धंधेबाज मुनाफा कमा रहे हैं।

वहीं, दूसरी ओर औने पौने दाम पर कोयले की खरीदारी कर चिमनियों का धुआं निकाला जा रहा है। जिले के वेस्ट बोकारो, कुजू, रजरप्पा, भुरकुंडा, पतरातू आदि क्षेत्रों में स्थित फैक्ट्रियों , गोल भट्ठों, को सरकार द्वारा सस्ते दर पर लिंकेज का कोयला प्रति माह

उपलब्ध कराया जाता है। इस लिंकेज के कोयले को फैक्ट्री व गोल भट्ठे संचालक संबंधित कोलियरियों से उठाव कराकर उच्चे दर पर कोयले की मंडियों में भेज रहे हैं। वहीं, इन फैक्ट्रियों व गोल भट्ठों में स्थानीय धंधेबाजों की मदद से कोयले को मंगवाकर अपनी फैक्ट्री व गोल भट्ठे चला रहे हैं। बताते चलें कि वेस्ट बोकारो क्षेत्र में तीन फैक्ट्री व दो गोल भट्ठे संचालित हैं। वहीं, कुजू ओपी क्षेत्र के करमा व मुरपा कुजू स्थित फैक्ट्री तथा लगभग आठ गोल भट्ठों में चोरी का कोयला खपाया जा रहा है। जिसका खुलासा सोमवार को सीसीएल के सुरक्षा कर्मियों ने एक 16 चक्का हाइवा को पकड़कर किया। बताया जाता है कि उक्त हाइवा करमा से कोयला लेकर कुजू न्यू साइडिंग के लिए चला था।

लेकिन चल रहे धंधे के अनुसार कोयले को साइडिंग में न लेजाकर स्थानीय एक फैक्ट्री में गिराया गया। उसी फैक्ट्री में कोयले की जगह मिट्टी पत्थर लादकर साइडिंग में गिराया जा रहा था। उसी दौरान सुरक्षा कर्मियों की नजर पड़ी। मौके की नजाकत को देखते हुए हाइवा चालक भागने में सफल रहा। परंतु उक्त हाइवा को जब्त कर कुजू पुलिस के हवाले कर दिया गया। सूत्र बताते हैं कि कुजू न्यू साइडिंग से प्रतिदिन 10-12 हाइवा कोयले को मुरपा व बुढ़ाखाप स्थित फैक्ट्री में गिराया जा रहा है। इस कोयले के बदले सस्ते दाम पर कोयला ट्रांसपोर्टिंग में लगे ठेकेदार द्वारा कोयले के चूर्ण व कोयला नूमा पत्थर को साइडिंग में गिराकर रैक लोडिंग के माध्यम से पॉवर प्लांट में भेजा जा रहा है। यह सब सारा खेल स्थानीय पुलिस व सीसीएल के चंद कोयला कर्मियों की मिलीभगत से हो रहा है।

एक नजर में

पंचायत वासियों के लिए सुविधाएं उपलब्ध कराना हमारा कर्तव्य : सिकंदर राणा

बरही। बेंदगी पंचायत के मुखिया सिकंदर राणा ने मुखिया के कार्यकाल के लगभग डेढ़ वर्षो में विकास की एक नई कहानी लिखी है। मुखिया पद के शपथग्रहण के साथ इन्होंने पंचायत के लगभग सभी लोगो के मूलभूत आवश्यकताओं को पूर्ण करने का प्रयास किया। उन्होंने बताया कि पोडैया में आंगनबाड़ी की चाहरदीवारी,व 100 फीट पीसीसी रोड, कोयली शिवमंदिर में हैंड वॉश, कोयली मस्जिद में हैंड वॉश, कोयली में चबूतरा निर्माण सहित कई जगहों पर हैंड वॉश, चबूतरा का निर्माण, उज्जैना स्कूल में चाहरदीवारी निर्माण, पंचायत भवन का रंग रोगन, नाली का निर्माण, उनके पहल कर डीवीसी से 1300 फिट का पीसीसी बेंदगी में, डीवीसी द्वारा पोडेया में 1200 फीट का पीसीसी, पीएचईडी से 20 सोखता, पीएचईडी से गोबर खाद, रूर्बन मिशन से 40 सोलर लाइट लगवाया है। दर्जनों सार्वजनिक स्थलों पर हैंड वॉश एवं चबूतरा का निर्माण करवाया है। उन्होंने बताया कि शिक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी हमने पंचायत में कई कार्य करवाए है।

पुत्र के जन्मदिन पर पिता ने सूर्य मंदिर में दिया इन्वर्टर व बैटरी

बरही। बरही निवासी तिरुपति भारत गैस के प्रोपराइटर उमेश ठाकुर ने छोटे पुत्र रिशान ठाकुर के जन्मदिन के अवसर पर सूर्य मंदिर के लिए इन्वर्टर के साथ बैटरी दान किया। उन्होंने बताया कि हमें अपनी आय का एक निश्चित अंश सामाजिक सेवाओं में खर्च करना चाहिए। मान्यता के अनुसार ऐसा करने वालों की जेब कभी खाली नहीं होती। इस बात का हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि हमारा हर काम ईश्वर की नजर में है। इस बाबत उन्होंने कहा कि बरही के अधिकांश मंदिरों में उन्होंने बैटरी व इन्वर्टर उपलब्ध कराया है ताकि हर मंदिर रौशन हो सकें। उमेश ठाकुर की पत्नी किरण कुमारी ने कहा कि दान करने से न सिर्फ पुण्य मिलता है बल्कि भगवान की कृपा भी बरसती है। मौके पर प्रोपराइटर उमेश ठाकुर,किरण कुमारी, पूर्व मुखिया प्रतिनिधि रमेश ठाकुर, राजकुमार केशरी, पिंटू ठाकुर, मुकेश सिंह, भोली पासवान, पंचम चंद्रवंशी सहित अन्य श्रद्धालु मौजूद थे।

प्रखंड मुख्यालय में सीपीआइ ने किया प्रदर्शन

कटकमसांडी। मंगलवार को कटकमसांडी प्रखंड मुख्यालय में सीपीआइ के अंचल कमिटी ने अपने नौ सूत्री मांगो को लेकर किया प्रदर्शन। पूर्व सांसद भुवनेश्वर प्रसाद मेहता ने कहा कि सीपीआई ही एक ऐसी पार्टी है, जो मजदूरों, किसानों, बेरोजगार युवाओं व महिलाओं के विरुद्ध शोषण हमेशा आवाज उठाने का काम किया है। उन्होने भाजपा पर तंज कसते हुए कहा कि विगत नौ वर्षो मे बेरोजगारी चरम पर पहुंच गया है। उन्होंने कहा कि जहां बीडीओ मनरेगा व आवास योजना में लूट मचा रखा है। वहीं सीओ पांच वर्षों से एक ही जगह रहकर म्यूटेशन, एलपीसी व जमीन बंदोबस्ती में करोड़ों रूपए बटोरने का काम किया है। वहीं सीपीआई के राज्य सचिव महेंद्र पाठक ने कहा कि न्याय व समता मूलक समाज बनाने में सीपीआई की अहम भूमिका रही है। अपने हक व अधिकार पाने के लिए तमाम जनता को लाल झंडे के बैनर तले एकजुट होना होगा। कार्यक्रम के बाद सीपीआई अंचल कमिटी के एक प्रतिनिधिमंडल ने मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के नाम बीडीओ को ज्ञापन सौंपा। इस मौके पर धरने में अशोक मेहता, मो. हकीम, विजय मिश्रा, राजू मेहता, जहीर खान, बबलू मेहता, किशोरी प्रसाद मेहता सहित सैकड़ों समर्थक व महिला पुरुष शामिल थे।

20 सूत्री अध्यक्ष ने सुनी ग्रामीणों की समस्या

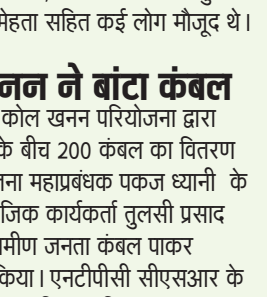

बड़कागांव। विधायक अंबा प्रसाद का व्यस्त कार्यक्रम होने के कारण प्रखंड सह अंचल कार्यालय में साप्ताहिक जनता दरबार में 20 सूत्री प्रखंड अध्यक्ष हाजी तबस्सुम लोगों की समस्या सुनी। 20 सूत्री अध्यक्ष द्वारा समस्या एकत्रित कर संबंधित विभाग को प्रेषित किया गया। तबस्सुम ने कहा कि विधायक अंबा प्रसाद की व्यस्त कार्यक्रम के कारण प्रखंड सह अंचल कार्यालय वे नहीं पहुंच पाए। साप्ताहिक जनता दरबार में आए ग्रामीणों की समस्या एवं आवेदन मेरे द्वारा लिया गया एवं संबंधित विभाग को समाधान के लिए प्रेषित की गई। मौके पर विधायक प्रशासनिक प्रतिनिधि जगत नंदन प्रसाद गुप्ता, मुखिया तकरीमुल्ला खान, बीरबल प्रजापति,प्रेमचंद महतो,निर्मल बेदिया, जागेश्वर महतो,शमशेर आलम,छोटे खान,मोहम्मद तसलीम सहित कई ग्रामीण उपस्थित थे।

ग्रामीणों से मिली विधायक अम्बा प्रसाद

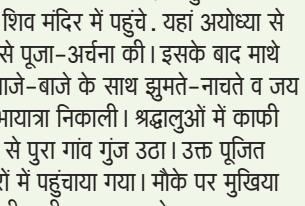

बड़कागांव। विधायक अंबा प्रसाद ने मंगलवार को प्रखंड के ग्राम हाहे, रूददी गाली समेत कई जंगली हाथी प्रभावित क्षेत्र का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने सोमवार की रात हाथी द्वारा नष्ट किए गए फसल और मकानों को जायजा लिया। विधायक गोंदलपुरा,हाहे,रूददी के अलावे अन्य गांव में जाकर किसानों से मिली,क्षतिग्रस्त मकानों और उनके खेतों तक जाकर नष्ट की गई फसल का जायजा लिया। ग्रामीणों ने बताया कि लगभग 35 हाथियों का झुंड क्षेत्र के विभिन्न गांव में घूम रहे है। विधायक ने खेतों की स्थिति देखते हुए मौके पर उपस्थित वन विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिया कि ग्रामीण व किसानों की समस्या को गंभीरता से लेते हुए उचित कार्रवाई कर जल्द से जल्द इन्हें मुआवजा दिलाए। मौके पर जिप सदस्य सुनीता देवी,मुखिया वासुदेव यादव,कांग्रेस प्रखंड अध्यक्ष विशेश्वर नाथ चौबे,विधायक प्रतिनिधि सुरेश महतो,युवा कांग्रेस प्रखंड अध्यक्ष आनंद मेहता सहित कई लोग मौजूद थे।

पकरी बरवाडीह कोल खनन ने बांटा कंबल

हजारीबाग। एनटीपीसी पकरी बरवाडिह कोल खनन परियोजना द्वारा ओदरना में परियोजना प्रभावित ग्रामीणों के बीच 200 कंबल का वितरण किया गया।कम्बल वितरण कोल परियोजना महाप्रबंधक पकज ध्यानी के दिशा निर्देश में किया गया।साथ ही सामाजिक कार्यकर्ता तुलसी प्रसाद कुशवाहा का सहयोग सराहनीय रहा। ग्रामीण जनता कंबल पाकर एनटीपीसी के प्रति अपना आभार व्यक्त किया। एनटीपीसी सीएसआर के अधिकारी रजनीश के उपस्थिति में कंबल का वितरण किया गया।

मुखिया ने रामभक्तों को दिया अक्षत व कलश

टाटीझरिया। प्रखंड के नारायणपुर गांव में मंगलवार को राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा को लेकर अयोध्या से आए पूजित अक्षत को घर घर पहुंचाया गया। कार्यक्रम के पूर्व नारायणपुर के सैकडो की संख्या में महिला पुरुष जय श्री राम का जयघोष लगाते हुए खैरा के शिव मंदिर में पहुंचे. यहां अयोध्या से आए पूजित अक्षत की विधि-विधान से पूजा-अर्चना की। इसके बाद माथे पर कलश लेकर पूजित अक्षत को गाजे-बाजे के साथ झुमते-नाचते व जय श्री राम का जयकारा लगाते हुए शोभायात्रा निकाली। श्रद्धालुओं में काफी उत्साह रहा जय श्री राम के जयघोष से पुरा गांव गुंज उठा। उक्त पूजित अक्षत और निमंत्रण पत्र को सभी घरों में पहुंचाया गया। मौके पर मुखिया कुमारी माधुरी, पूर्व मुखिया सरिता देवी, प्रवील प्रसाद, सुरेश प्रसाद, प्रभु प्रसाद, अरविंद केसरी, प्रेम प्रकाश, सुनिल पांडेय, विजय पांडेय, किशुन ठाकुर, मनोज प्रसाद, मोहन प्रसाद, गणेश प्रसाद, महेन्द्र प्रसाद, जगन्नाथ प्रसाद, महादेव प्रसाद, महरू पासवान, सोनी देवी, बबीता देवी, मालो देवी, कोलैश्वरी देवी, शांति देवी, सहित सैकडो रामभक्त शामिल थे।

अयोध्या देश ही नहीं, संपूर्ण विश्व को दिशा देगी

गोपाल शर्मा

अयोध्याधाम में श्रीराम मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा की घड़ी नजदीक है। भारत ही नहीं दुनियाभर के देशों में उत्साह है। उत्साह हो भी क्यों न। प्रभु श्रीराम की जन्मभूमि पर 500 वर्षों से भी ज्यादा के संघर्ष और बलिदान के बाद भगवान का मंदिर पुनः साकार रूप लेने जा रहा है। सौभाग्यशाली हैं कि यह क्षण हमारे जीवन में आया है। हम 22 जनवरी को अपने घरों में श्रीराम ज्योति जलाएं और दीपावली मनाएं। भारत के स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त) की तरह 22 जनवरी 2024 की तारीख पीढ़ियों के अखंड तप, त्याग और संकल्प के प्रतीक के रूप में युगों-युगों तक जाना जाएगा। प्रभु श्रीराम एक राजा या आराध्य ही नहीं, भारत की आत्मा हैं । सांस्कृतिक पहचान हैं। अस्मिता हैं।

प्रभु श्रीराम की शक्ति देखिए। इमारतें नष्ट कर दी गईं, अस्तित्व मिटाने का कुत्सित प्रयास किया गया लेकिन श्रीराम जनमानस के मन में बसे रहे। श्रीराम का जीवन चरित्र भारत ही नहीं भारत की सीमाओं को लांघकर मानवता को प्रेरणा देता है। विश्व की सर्वाधिक मुस्लिम जनसंख्या वाले देश इंडोनेशिया के साथ कंबोडिया, ईरान, श्रीलंका, थाईलैंड आदि में भी श्रीराम और रामायण के कई रूप देखने को मिलते हैं।

रमणे कणे कणे इति श्रीरामह्न अर्थात, जो कण-कण में बसा है वही श्रीराम है। आज भी समाज जीवन का कोई ऐसा पहलू नहीं है जो श्रीराम नाम से प्रेरित न हो। श्रीराम सबके हैं, सबमें श्रीराम हैं। श्रीराम की यही सर्वव्यापकता भारत की विविधता का चरित्र दिखाती है। श्रीराम मंदिर प्राण-प्रतिष्ठा को लेकर जनजातीय क्षेत्रों में खुशी और उमंग है। झारखंड के जनजातीय समाज के संत प्राण-प्रतिष्ठा समारोह में शामिल होने जा रहे हैं। जनजातीय समाज के 20 संतों को प्राण-प्रतिष्ठा में आने का निमंत्रण मिला है। वे स्वयं को परम सौभाग्यशाली मान रहा हैं कि प्रभु श्रीराम के मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा में उन्हें शामिल होने का अवसर मिल रहा है।

असम से लेकर गुजरात और विंध्यांचल से लेकर नीलगिरि तक में रहने वाले असंख्य जनजातीय समाज जो मयार्दा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के जीवन आदर्शों को अपना प्रेरणापुंज मानता है। भगवान श्रीराम 14 साल तक वन में रहे। इस दौरान वनवासियों के अपार समर्थन के बल पर ही उन्होंने रावण पर विजय पाई। श्रीराम चाहते तो रावण से युद्ध के लिए अयोध्या और उसके आसपास मित्र राजाओं की सेना का प्रयोग कर सकते थे। लेकिन ऐसा नहीं किया। भगवान श्रीराम के लिए जनजातीय समाज युद्ध लड़ा। वनवास के समय श्रीराम कोल, भील, निषाद आदि जनजातियों के संपर्क आये। मतंग ऋषि के संपर्क में भीलनी शबरी भगवान श्रीराम की भक्त बन गई। भील, सहरिया आज भी शबरी को अपना पूर्वज मानते हैं। वानर, हनुमान, बाली, सुग्रीव, जटायु, जामवंत वनवासी ही थे जिन्हें श्रीराम ने संगठित किया, सेना बनाई और रावण को समाप्त किया। इसे कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि वनवासियों अथवा जनजातीय समाज के बिना श्रीराम अधूरे हैं।

मुगल आक्रांता बाबर ने 1528 में अपने सेनापति मीर बाकी को अयोध्या के भव्य श्रीराम मंदिर को तोड़ने का आदेश दिया था। इतिहासकार कनिंघम के अनुसार, श्रीराम मंदिर को बचाने के लिए हिंदुओं ने जान की बाजी लगा दी थी। 1 लाख 74 हजार हिंदू वीरों के बलिदान के बाद ही मुगल श्रीराम मंदिर को तोड़ने में सफल हो सके। मंदिर इतना मजबूत था कि इसे तोड़ने के लिए तोपों का इस्तेमाल करना पड़ा। मंदिर को नष्ट करने के बाद जलालशाह ने हिंदुओं के खून के गारा बनाकर लखौरी ईंटों से बाबरी मस्जिद का निर्माण कराया। श्रीराम मंदिर जन्म भूमि के लिए हिंदू समाज ने 78 धर्म युद्ध लड़े, जिनमें 3 लाख 50 हजार से ज्यादा हिंदू वीरों ने अपने प्राणों की आहुति दी थी। इतिहासकार कनिंघम अपने 'लखनऊ गजेटियर' में लिखता है कि 1,74,000 हिन्दुओं की लाशें गिर जाने के पश्चात मीर बकी अपने मंदिर ध्वस्त करने के अभियान में सफल हुआ।

साल 1885 में महंत रघुबीर दास ने फैजाबाद जिला अदालत में याचिका दायर की। इसके तहत उन्होंने श्रीराम की मूर्ति स्थापित करने की अर्जी लगाई, जो खारिज हो गई। इसके बाद 23 दिसंबर साल 1949 को विवादित ढांचे में श्रीरामलला की मूर्ति मिली थी। हिंदू पक्ष का कहना था कि श्रीराम प्रकट हुए हैं, जबकि मुस्लिमों ने आरोप लगाया था कि किसी ने रातों-रात मूर्तियां रख दीं। इसके बाद इसे विवादित ढांचा मानकर ताला लगवा दिया गया था। वर्ष 1950 में फैजाबाद सिविल कोर्ट में दो याचिकाएं दाखिल की गईं। पहली याचिका में गोपाल सिंह विशारद ने पूजा के अधिकार को लेकर अर्जी दाखिल की, तो दूसरी याचिका में विवादित ढांचे में भगवान श्रीराम की मूर्ति रखे रहने की इजाजत मांगी। साल 1959 में निमोर्ही अखाड़ा ने तीसरी याचिका दाखिल कर श्रीरामलला स्थल का अधिकार मांगा। 1986 में कोर्ट ने सरकार को आदेश दिया कि हिन्दू श्रद्धालुओं के लिए जगह खोली जाए। यूसी पांडे की याचिका पर जिला जज केएम पांडे ने आदेश दिया। इसके बाद विवादित ढांचे का ताला खोला गया और श्रद्धालुओं को पूजा करने की इजाजत दे दी गई। 1989 में विश्व हिंदू परिषद (विहिप) के नेतृत्व में श्रीराम जन्म भूमि का शिलान्यास हुआ। अनुसूचित समाज के नेता कामेश्वर चौपाल के हाथों श्रीराम मंदिर की पहली ईंट रखी गई।

30 अक्टूबर 1990 को हजारों श्रीराम भक्तों ने तत्कालीन मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव द्वारा खड़ी की गई तमाम बाधाओं को पार कर अयोध्या में प्रवेश किया और विवादित ढांचे के ऊपर भगवा ध्वज फहरा दिया। लेकिन 2 नवंबर 1990 को मुलायम सिंह यादव ने कारसेवकों पर गोली चलाने का आदेश दिया, जिसमें सैकड़ों श्रीरामभक्तों ने अपने जीवन की आहुति दीं। कोठारी बंधुओं के बलिदान को कौन भूल सकता है। इसके बाद छह दिसंबर 1992 में कारसेवकों ने विवादित ढांचे को को गिरा दिया।

अदालत में श्रीराम मंदिर पर हिन्दू पक्ष को पहली सफलता 2010 में मिली। हाई कोर्ट की लखनऊ बेंच ने फैसला सुनाते हुए विवादित जमीन को तीन हिस्सों सुन्नी वक्फ बोर्ड, निमोर्ही अखाड़ा और श्रीरामलाला के बीच बांट दिया। लेकिन फैसला मंजूर नहीं था, फिर सुप्रीम कोर्ट का रुख किया। अंततः वो दिन आ गया। नौ नवंबर 2019 को सुप्रीम कोर्ट ने पूरी विवादित जगह को श्रीरामलला को सौंपने का आदेश दिया। पांच जजों की बेंच ने ऐतिहासिक फैसला सुनाया और विवादित जमीन हिंदू पक्ष को देने का आदेश दिया। सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद केंद्र की नरेन्द्र मोदी सरकार ने मंदिर के निर्माण के लिए श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट का गठन किया। इसके बाद भव्य श्रीराम मंदिर का निर्माण कार्य प्रारंभ हुआ।

अयोध्या में श्रीराम मंदिर की प्राण- प्रतिष्ठा के साथ ही देश का गौरव और पहचान वापस लौट रही है। श्रीराम प्राचीनता और आधुनिकता के समागम हैं। श्रीराम न सिर्फ भारत के अतीत हैं बल्कि वर्तमान और भविष्य भी हैं। मयार्दा पुरुषोत्तम प्रभु श्रीराम भारत की आत्मा और सांस्कृतिक पहचान हैं। लौकिक धरातल पर रहकर भगवान श्रीराम ने धर्म एवं मयार्दा का पालन, असत्य से सत्य की ओर, अधर्म से धर्म की ओर तथा अन्याय से न्याय की ओर चलने की प्रेरणा दी। कर्तव्य की वेदी पर स्वयं चढ़कर अपने व्यक्तिगत सुख-प्रलोभनों की आहुति प्रभु श्रीराम के जीवन की कहानी का सार है। आज के भारत का मन अयोध्यामय हो चुका है। एक तरफ प्रगति का उत्सव है तो दूसरी तरफ परंपरा का उत्साह भी है। विकास की भव्यता और विरासत की दिव्यता भी दिखाई दे रही है। विकास और विरासत की संयुक्त शक्ति से 21वीं सदी में भारत विश्वगुरु के पद पर पुनर्प्रतिष्ठित होगा। अयोध्या देश ही नहीं संपूर्ण विश्व को दिशा देगी।

(लेखक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, झारखंड के प्रांत प्रचारक हैं।)

एक महान योद्धा और धर्मात्मा

17 जनवरी गुरु गोबिंद सिंह जयंती पर विशेष .....

मनोज कुमार सिन्हा।

गुरु गोबिंद सिंह ने अपने जीवन के दौरान अद्वितीय साहस, उद्दीपन और सच्चे धर्म के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के लिए प्रसिद्ध हुए हैं। वे सिख धर्म के दसवें गुरु थे और उनका योगदान भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण योगदान के रूप में जाना जाता है। गुरु गोबिंद सिंह ने अपने जीवन के दौरान वीरता, धर्म रक्षा, और साहस की भावना को बढ़ावा दिया और उन्होंने सिखों को एक सशक्त और स्वतंत्र समाज की ओर मुख करने के लिए प्रेरित किया।

गुरु गोबिंद सिंह का जन्म सन् 1666 को पटना, बिहार में हुआ था। उनके पिता का नाम गुरु तेग बहादुर था, जो अपने पूर्वजों के लिए धर्म और स्वतंत्रता की रक्षा करने में जाने जाते थे। गुरु गोबिंद सिंह का बचपन और युवावस्था उनके पिता गुरु तेग बहादुर जी के संग में बिता। उन्होंने अपने पिता की शिक्षा का पालन करते हुए बहादुरशाह के खिलाफ उनके अधिकारों की रक्षा के लिए खड़ा होने का भी सामना किया।

गुरु गोबिंद सिंह ने अपने पिता की शिक्षा और मार्गदर्शन में अपनी प्रबल प्रतिबद्धता के बावजूद भी, उनके पिता की शहादत के बाद सिख धर्म के गुरु बने। वे बहुत बुद्धिमान, योद्धा और धार्मिक व्यक्ति थे, और उनका मुख्य उद्देश्य सिख समुदाय को सशक्त और स्वतंत्र बनाना था।

गुरु गोबिंद सिंह ने सिख धर्म के दसवें गुरु के रूप में 1675 में अपनी पधारा ली। उन्होंने अपने पिता के उदार और साहसी आचरण का आदान-प्रदान करते हुए अपने अनुयायियों को भी उननति और धर्म के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया।

गुरु गोबिंद सिंह ने अपने जीवन के विभिन्न पहलुओं में एक सच्चे नेता की भूमिका निभाई, और उन्होंने सिख समुदाय को साहस, उत्साह, और एकता के साथ समृद्धि की दिशा में मार्गदर्शन किया। उनका संदेश था कि सिख धर्म के अनुयायियों को समृद्धि और सुख भरा जीवन जीने का हक है और उन्हें अपने धर्म के प्रति पूरी तरह से समर्पित रहना चाहिए।

गुरु गोबिंद सिंह का एक अद्वितीय और इतिहासपूर्ण क्षण है खालसा पंथ की स्थापना। 1699 में, उन्होंने अनंगपूर साहिब में आयोजित एक समागम में पांच सिख योधाओं को खालसा पंथ में शामिल करने के लिए बुलाया और उन्हें अमृत दान किया। इसके बाद, उन्होंने सिख समुदाय को एक मजबूत और संघटित सेना बनाने का प्रेरणा दिया, जिसे उन्होंने 'खालसा' कहा। गुरु गोबिं सिंह ने यहां तक कहा कि खालसा सेना का एक अब्बूल बक्र (अलगाव) और एक बीर (बहादुर) होना चाहिए, जो धर्म रक्षा के लिए सदैव तैयार रहे।

गुरु गोबिंद सिंह का यह निर्णय एक महत्वपूर्ण परिवर्तन था जो सिख समुदाय को सशक्त करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था। खालसा सेना ने उस समय के राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों का सामना करने में सिख समुदाय को साहस और उत्साह का सामर्थ्य प्रदान किया और उन्हें अपने धर्म के प्रति पूर्ण समर्पण के साथ जीने का साहस दिया।

खालसा पंथ की स्थापना:

1699 में वैसाखी के पावन पर्व पर गुरु गोबिंद सिंह जी ने पंज प्यारे - दया राम, धर्म दास, हिरा सिंह, मोहकम सिंह और साहिब राम को अमृत छकाकर खालसा पंथ की स्थापना की। उन्होंने पांचों प्यारे को केश, कंघा, कच्छा, करा और कृपाण धारण करने का आदेश दिया और उन्हें ₹सिंह₹ की उपाधि प्रदान की। इस प्रकार खालसा पंथ ने जन्म लिया, जो निडरता, बलिदान, भाईचारे और ईश्वर भक्ति के सिद्धांतों पर आधारित था।

वीरता के किस्से:

गुरु गोबिंद सिंह जी का जीवन वीरता के गाथागीतों से भरा पड़ा है। मुगल बादशाह औरंगजेब के अत्याचार के खिलाफ उन्होंने कई युद्ध लड़े। आनंदपुर की दूसरी लड़ाई में चारों साहिबजादों (अजीत सिंह, जुझार सिंह, जोरावर सिंह और फतेह सिंह) का बलिदान सिख इतिहास का सबसे मार्मिक अध्याय है। वहीं चमकौर की लड़ाई में गुरु जी स्वयं मैदान में उतरे और शौर्य का प्रदर्शन किया। ये युद्ध भले ही हार मिली, लेकिन गुरु जी का दृढ़ संकल्प और मुगलों के अत्याचार के खिलाफ विद्रोह का भाव अमर हो गया।

गुरु जी की कविता और लेखन:

गुरु गोबिंद सिंह जी न केवल एक योद्धा थे, बल्कि एक महान कवि और लेखक भी थे। उन्होंने दशम ग्रंथ की रचना की, जिसमें उनके भजन, कविता, युद्ध वर्णन और उपदेश शामिल हैं। उनका लेखन शक्ति, भक्ति और नैतिकता का सम्मिश्रण है। ₹जफरनामा₹ नामक पत्र, जो उन्होंने औरंगजेब को लिखा था, साहित्य जगत में अद्वितीय रचना है, जिसमें शौर्य और नैतिकता की गजब मिसाल पेश की गई है।

एक समाज सुधारक के रूप में:

गुरु गोबिंद सिंह जी ने समाज सुधार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने जाति-पात के भेदभाव को मिटाने का प्रयास किया और महिलाओं को समान अधिकार दिए। उन्होंने सती प्रथा का विरोध किया और विधवाओं के पुनर्विवाह को प्रोत्साहित किया। शिक्षा पर भी उन्होंने बल दिया और गुरुद्वारों को शिक्षा केंद्र के रूप में स्थापित किया।

गुरु गोबिंद सिंह ने अपने जीवन में योद्धा के रूप में भी अपनी पहचान बनाई। उन्होंने अपने समय के सबसे शक्तिशाली राजा और सेनापति के रूप में कार्य किया और उन्होंने अपनी योद्धा रूप से देश की सुरक्षा के लिए अपनी शक्ति का उपयोग किया।

गुरु गोबिंद सिंह का एक और महत्वपूर्ण पहलु था उनका साहित्यिक योगदान। उन्होंने गुरु ग्रंथ साहिब को पूरा किया और उसे सिख समुदाय के लिए सच्चे धर्म का स्रोत बनाया। उनकी रचनाएं भागवत धर्म, शस्त्र, कविता, और राजनीति पर आधारित थीं, और उन्होंने इन रचनाओं के माध्यम से लोगों को धर्म और नैतिकता की महत्वपूर्ण बातें सिखाईं।

गुरु गोबिंद सिंह की महानता उनके आदर्शवाद, धर्मरक्षा, साहस और एकता के सिद्धांतों में छिपी है। उन्होंने अपने जीवन के दौरान अपने अनुयायियों को एक सकारात्मक और समृद्धि भरा जीवन जीने के लिए प्रेरित किया।

भारतीय कृषि का ड्रोन क्षण

डॉ मनसुख मांडविया
केंद्रीय रसायन और उर्वरक मंत्री

पंजाब के हरे-भरे खेतों की हरियाली से गुजरते हुए, मेरा ध्यान कहीं दूर गूंजती एक आवाज ने आकर्षित किया। स्वाभाविक मानवीय जिज्ञासा हुई कि इस आवाज का स्रोत क्या है। उतरते ही मेरा स्वागत दो किसानों ने किया। वे ड्रोन के जरिए नैनो यूरिया का छिड़काव कर रहे थे। देश के एक ग्रामीण क्षेत्र में किसानों द्वारा एक नई तकनीक को इतने उत्साहपूर्वक स्वीकार किए जाने को देखकर मुझे सुखद अनुभूति हुई। मुझे लगा कि यह भारत के कृषि क्षेत्र के लिए वह 'ड्रोन क्षण' था, जिसने हमारे देश में 'ड्रोन आंदोलन' की शुरूआत की। किसानों ने मुझे बताया कि उन्हें कृषि-ड्रोन के बारे में जानकारी उनके गांव में 'विकसित भारत संकल्प यात्रा' के दौरान मिली और यह नई तकनीक उनके खेतों में सबसे कुशल तरीके से तरल उर्वरकों और कीटनाशकों के छिड़काव के लिए बेहद उपयोगी है।

भारतीय कृषि ने पहले ही पारंपरिक रूप से बैलगाड़ी आधारित होने से ट्रैक्टर आधारित होने तक का सफर तय किया है। मैं अब कृषि कार्यों में ड्रोन के उपयोग को कृषि क्रांति की तीसरी लहर के रूप में देख रहा हूं। कृषि-ड्रोन तकनीक हमारी कृषि पद्धतियों को आधुनिक बनाने और बदलने में एक वास्तविक सफलता साबित हो रही है। हैंड पंपों के माध्यम से कीटनाशकों और तरल उर्वरकों के थकाऊ और समय लेने वाले हाथ से छिड़काव के दिन चले गए। अब इसकी जगह ड्रोन के माध्यम से छिड़काव की अधिक कुशल और उत्पादक तकनीक ले रही है। कृषि क्षेत्र की दक्षता और उत्पादकता में सुधार के लिए कृषि पद्धतियों का आधुनिकीकरण आवश्यक और अपरिहार्य है ताकि खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके, जो कि विकसित और आत्मनिर्भर भारत का एक महत्वपूर्ण तत्व है।

1960 के दशक की हरित क्रांति में नए कृषि उपकरण, एचवाईवी (उच्च उत्पादकता किस्में) बीज, कीटनाशक और रासायनिक उर्वरकों के उपयोग की शुरूआत देखी गई। पिछले कुछ वर्षों में हमारे पर्यावरण, मिट्टी के स्वास्थ्य और मिट्टी की उर्वरता की दीर्घकालिक स्थिरता बनाए रखने के लिए, उर्वरकों के अधिक संतुलित उपयोग को सुनिश्चित करने की तत्काल आवश्यकता महसूस की गई। खुद प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने इसका आह्वान 2019 में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर लाल किले की प्राचीर से किया। इससे प्रेरित होकर सरकार ने जैव, नैनो और जैविक उर्वरक जैसे वैकल्पिक उर्वरकों को बढ़ावा देने के लिए पीएम प्रणाम और गोबरधन जैसी कई पहल शुरू की हैं। इन नई पहलों के बारे में जागरूकता बढ़ाने और किसानों को एक ही छत के नीचे एकीकृत समाधान प्रदान करने के लिए प्रधान मंत्री किसान समृद्धि केंद्र (पीएमकेएसके) की

स्थापना की गई है।

स्वदेशी रूप से विकसित नैनो उर्वरक बेहतर हैं क्योंकि वे पारंपरिक रासायनिक उर्वरकों का पर्यावरण-अनुकूल और प्रभावी विकल्प प्रदान करते हैं। अब पारंपरिक यूरिया की 45 किलोग्राम की बोरी की जगह नैनो यूरिया की आधा लीटर की बोतल ने ले ली है। इससे मिट्टी की गुणवत्ता बनाए रखने और फसल की उपज में सुधार करने में सहायता मिल रही है। साथ ही बेहतर पोषक तत्व उपयोग दक्षता और आसान प्रबंधन जैसे कई फायदे भी हैं। इसकी व्यापक स्वीकार्यता सुनिश्चित करने में अगली चुनौती कुशल अनुप्रयोग प्रणाली की एक विधि विकसित करना, आसानी से अपनाने के लिए एक इको-सिस्टम का निर्माण करना और कृषक समुदाय को लाभों को प्रभावी ढंग से संप्रेषित करना था।

भारत के युवा और गतिशील स्टार्टअप्स द्वारा किसान ड्रोन का विकास तरल उर्वरकों के इस्तेमाल के लिए एक प्रभावी और कुशल तकनीक प्रदान करता है। मिनटों में एक एकड़ कृषि भूमि पर छिड़काव करने की क्षमता अपने खेतों में घंटों मेहनत करने वाले किसानों के लिए वरदान साबित हुई। अपने पास अधिक खाली समय होने से, किसान अपनी कमाई बढ़ाने और अपने जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए अधिक उत्पादक कार्यों में लग सकते हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का लक्ष्य महिलाओं को सशक्त बनाना और देश के विकास में महिलाओं की हिस्सेदारी बढ़ाना है। उन्होंने 30 नवंबर को विकसित भारत संकल्प यात्रा में लाभार्थियों के साथ बातचीत के दौरान नमो ड्रोन दीदी का प्रारंभ स्वयं किया। इसका उद्देश्य आसान वित्तीय समाधान प्रदान करके कृषि उद्देश्यों के लिए किसानों को किराये पर ड्रोन उपलब्ध कराना है। इसके लिए नमो ड्रोन दीदी के तहत 15,000 चुनिंदा महिला स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) को ड्रोन प्रदान किया जा रहा है। यह अनूठी पहल न केवल किसानों को तरल उर्वरक और कीटनाशकों के छिड़काव के लिए ड्रोन आसानी से उपलब्ध कराएगी, बल्कि महिला सशक्तिकरण और ग्रामीण समृद्धि में भी योगदान देगी। यह भारत के ड्रोन वैमानिकी को बढ़ावा देगा और ड्रोन निर्माण स्टार्टअप को विनिर्माण सुविधाएं स्थापित करने में मदद करेगा। यह देश के दूरदराज के इलाकों में ड्रोन पायलटों और ड्रोन मैकेनिकों के लिए रोजगार उद्यम बनाकर महिलाओं और युवाओं के लिए रोजगार के अवसर बढ़ाएगा और साथ ही ग्रामीण और शहरी अर्थव्यवस्था को भी बढ़ावा देगा।

प्रभावी संवाद किसी भी नई पहल के सफल क्रियान्वयन के लिए सबसे महत्वपूर्ण है। 15 नवंबर, 2023 से शुरू हुई देशव्यापी विकसित भारत संकल्प यात्रा में ड्रोन एक प्रमुख आकर्षण बन गए हैं। यात्रा के दौरान सभी राज्यों में 50,000 से अधिक ड्रोन प्रदर्शन हुए हैं। इन प्रदर्शनों ने किसानों के भीतर अपनी खेती में इस नई उच्च स्तर तकनीक को अपनाने के लिए रुचि जगाई है।

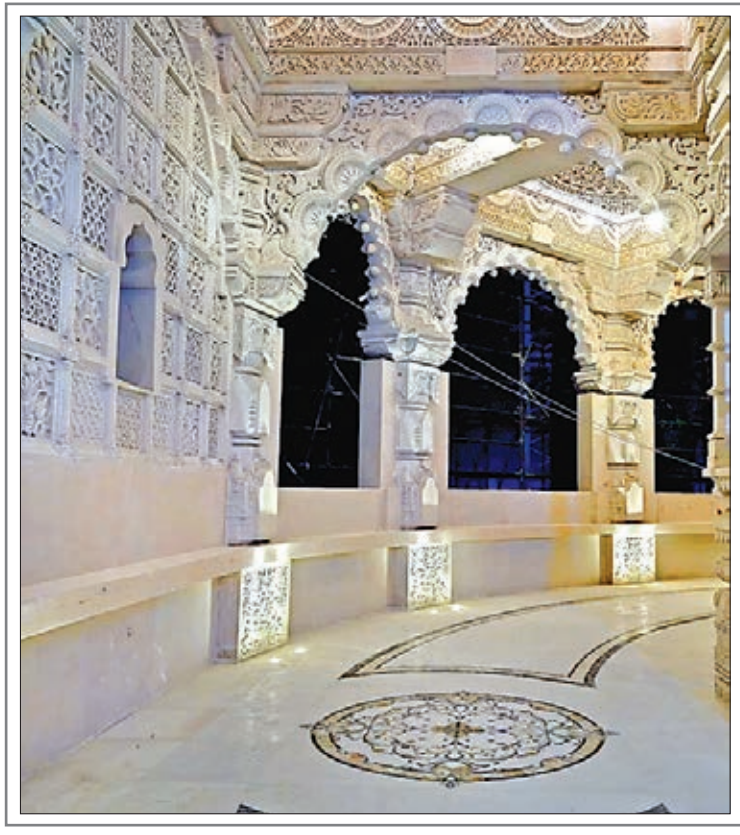

अयोध्याधाम में प्राण प्रतिष्ठा समारोह के व्यापक मीडिया कवरेज की सरकारी तैयारी

अयोध्या धाम में 22 जनवरी को आयोजित श्रीराम मंदिर के प्रतिष्ठापना समारोह के सुचारू और सफल संचालन के लिए अत्यधिक सावधानी के साथ व्यवस्था की जा रही है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी निर्धारित अनुष्ठानों के अनुसार 'प्राण प्रतिष्ठा' करेंगे। 8,000 से अधिक अतिथि उस दिन मंदिर में आएंगे। इसके बाद 23 जनवरी से लाखों भक्त आएंगे।

सीधा प्रसारणः श्रीरामलला के प्राण प्रतिष्ठापना समारोह के सीधे प्रसारण के लिए व्यापक व्यवस्था की गई है। दूरदर्शन पूरे कार्यक्रम का डीडी न्यूज और डीडी नेशनल चैनलों पर 4के गुणवत्ता में सीधा प्रसारण करेगा। 23 जनवरी को दूरदर्शन आरती और जनता के लिए श्रीराम मंदिर खुलने का भी सीधा प्रसारण करेगा।

दूरदर्शन 22 जनवरी को एएनआई और पीटीआई के साथ अयोध्या में कार्यक्रम की क्लीन फीड साझा करेगा। अन्य राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रसारकों के लिए क्लीन फीड की कुंजी के साथ एक यू-ट्यूब लिंक तैयार किया जा रहा है। यह लिंक संबंधित प्रसारकों के अनुरोध पर उनके साथ साझा किया जाएगा। यू-ट्यूब लिंक प्राप्त करने के लिए, घरेलू प्रसारक पत्र सूचना कार्यालय के पास अपना अनुरोध भेज सकते हैं। अंतरराष्ट्रीय टीवी चैनलों को अपना अनुरोध सीधे प्रसार भारती से करना होगा। यदि क्लीन फीड की आवश्यकता नहीं है, तो चैनलों के पास डीडी न्यूज से पैचिंग का भी विकल्प होगा। पीआईबी अंग्रेजी, हिंदी और राज्य की भारतीय भाषाओं में कार्यक्रम की तस्वीरें और प्रेस विज्ञप्ति जारी करेगा।

अयोध्या मीडिया सेंटरः सरकारी स्तर पर अयोध्याधाम के राम कथा संग्रहालय में सीमित क्षमता के साथ एक मीडिया सेंटर स्थापित किया जा रहा है। वहां प्रसारण देखने की सुविधा के लिए बड़े एलईडी टीवी लगाए जाएंगे। मीडियाकर्मियों को अपनी स्टोरी भेजने के लिए मीडिया सेंटर में वाई-फाई की सुविधा उपलब्ध रहेगी।

मीडिया पास के लिए पोर्टलः

योध्याधाम से इस कार्यक्रम को कवर करने के इच्छुक मीडिया संगठन पीआईबी के केन्द्रीकृत पोर्टल के माध्यम से 17 जनवरी शाम 6 बजे तक आवेदन कर सकते हैं। इसके आधार पर राज्य प्रशासन के माध्यम से सुरक्षा पास जारी किए जाएंगे।

स्पीड न्यूज

विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यक्रम का आयोजन

चतरा। जिले के इटखोरी प्रखंड क्षेत्र के इटखोरी और मलकपुर पंचायत भवन में मंगलवार को विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में ग्रामीणों ने भारत को विकसित बनाने का संकल्प लिया। लोगों को केंद्र की योजनाओं की जानकारी दी गयी। इसके बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का संबोधन सुनाया गया। कार्यक्रम में गर्भवती महिलाओं के बीच गोद भराई रस्म और अन्नप्राशन कार्यक्रम किया गया। कार्यक्रम में लोगों ने वर्ष 2047 तक भारत को आत्मनिर्भर और विकसित राष्ट्र बनाने का संकल्प लिया। इस दौरान केंद्र सरकार की विभिन्न महत्वाकांक्षी योजनाओं के लाभुकों ने अपनी सफलता की कहानी साझा की।इस मौके पर भाजपा किसान मोर्चा जिला मंत्री टुन्नी सिंह, निरंजन सिंह, सुजीत भारती, रंजय भारती समेत अन्य लोग मौजूद थे।

दो दिवसीय पुस्तक मेला की तैयारी को लेकर डीडीसी ने की बैठक

कोडरमा। प्रखंड मुख्यालय में जिला प्रशासन द्वारा 20-21 जनवरी को आयोजित होने वाले दो दिवसीय पुस्तक मेले की तैयारी को लेकर डीडीसी ऋतुराज की अध्यक्षता में बैठक हुई। बैठक में मेले को लेकर प्रतिनियुक्त नोडल पदाधिकारियों से आयोजन की तैयारी को लेकर जानकारी ली, साथ ही उन्होंने कोडरमा सीओ और नगर प्रशासक झुमरीतिलैया को ब्लॉक मैदान की साफ सफाई, मैदान का समतलीकरण, टेंट, लाइट आदि से सम्बंधित कार्यों को जल्द से जल्द पूर्ण करने का निर्देश दिया। डीडीसी ने अधिकारियों को कहा कि आयोजन स्थल पर पेयजल और शौचालय का समुचित व्यवस्था करें, मेले में बुक डोनेशन को लेकर अलग से स्टॉल लगाने आदि का निर्देश दिया। डीडीसी ने कहा कि जिले में पहली बार वृहत रूप से पुस्तक मेला का आयोजन किया जा रहा है, इस मेले में जिलेवासी अधिक से अधिक संख्या में शामिल होकर, इसे सफल बनाने में सहयोग करें। उन्होंने कहा कि इच्छुक संस्था, व्यक्ति, प्रकाशक, पुस्तक विक्रेता पुस्तकों का दान भी कर सकते हैं। उन्होंने कहा की मेले में प्रवेश पूर्णतयः निःशुल्क है, दो दिवसीय मेले में दो दर्जन से अधिक प्रकाशकों के द्वारा विभिन्न प्रकार के पुस्तकें यथा पाठ्यक्रम से सम्बंधित व प्रतियोगिता परीक्षाएं, कहानी, उपन्यास व पत्रिकाओं का प्रदर्शनी लगाया जाएगा। साथ ही स्कुली छात्र छात्राओं के द्वारा विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जाएगा। मौके पर डीएसओ अविनाश पुरेन्दु, डीएसडब्ल्यूओ शिप्रा सिन्हा आदि मौजूद थे।

बैट्री चोरी मामले का पुलिस ने किया उद्भेदन

कोडरमा। तिलैया थाना क्षेत्र से अज्ञात चोरों द्वारा जेसीबी बैट्री की चोरी की घटना को अंजाम दिया गया था। जिसे लेकर एसपी अनुदीप सिंह ने प्रेस व्यान जारी कर मामले का उद्भेदन किया। उन्होंने बताया कि 15 जनवरी को यह सूचना प्राप्त हुई थी कि तिलैया थाना क्षेत्र से अज्ञात चोरों द्वारा एक जेसीबी की बैट्री चोरी कर ली गई है। इस घटना के उद्भेदन के लिए एसपी द्वारा पु.नि. विनोद कुमार थाना प्रभारी, तिलैया के नेतृत्व में एक टीम का गठन किया गया। गठित टीम द्वारा गुप्त सूचना के आधार पर त्वरित कार्रवाई करते हुए दो अभियुक्तों को चोरी की गई बैट्री, बैट्री खोलने में इस्तेमाल किये जाने वाले औजार, घटना में प्रयुक्त दो मोटरसाईकिल एवं दो मोबईल के साथ गिरफ्तार किया गया। जिसमें 23 वर्षीय अखलाख अंसारी पिता मो. इनाम मल्लाहटोली थाना बरही जिला हजारीबाग एवं 25 वर्षीय मो. शमशेर पिता मो. सदीक कोन्द्रा थाना बरही जिला हजारीबाग निवासी के नाम शामिल हैं। इस संदर्भ में तिलैया थाना में कांड सं. 09/24 के तहत दर्ज कर अग्रेत्तर कार्रवाई की जा रही है। गिरफ्तार अभियुक्त में से अखलाख अंसारी का पूर्व में भी अपराधिक इतिहास रहा है। इसके विरूद्ध हजारीबाग जिले के बरही थाना में चोरी के दो मामले में कांड संख्या 466/19 एवं 452/23 एवं लोहसिंघना थाना में चोरी का एक मामला में कांड संख्या 92/20 दर्ज है। छापेमारी दल में पु.नि. द्वारिका राम, प्रभारी कोडरमा थाना, पु.नि. राम नरायण ठाकुर, कोडरमा, पु.अ.नि ऋषिकेश सिन्हा, स.अ.नि. सुजीत सिंह, तिलैया थाना व तिलैया एवं कोडरमा थाना पैंथर एवं सशस्त्र बल के जवान शामिल थे।

ग्रिजली विद्यालय में ओपन-डे 21 जनवरी को

कोडरमा। ग्रिजली चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित तिलैया डैम स्थित ग्रिजली विद्यालय में ओपन डे का आयोजन आगामी 21 जनवरी को विद्यालय परिसर में आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर जानकारी देते हुए ग्रिजली विद्यालय के सीईओ प्रकाश गुप्ता, उप प्राचार्या अंजना कुमारी ने बताया कि यह कार्यक्रम उन अभिवावकों के लिए है जो अपने बच्चे की शिक्षा के लिए ग्रिजली विद्यालय को एक अवसर के तौर पर रखते है। यह कार्यक्रम छात्रों तथा उनके माता-पिता एवं अभिवावकों को शिक्षकों के साथ जुड़ने, स्कूल की सुविधाओं का पता लगाने और अपने बच्चे की शैक्षणिक यात्रा के बारे में जानकारी हासिल करने का एक अनूठा अवसर प्रदान करता है। मौके पर अशरफ खान, विजय कुमार सिंह, जितेंद्र चैधरी, बीडी नस्कर, अनुराग कुमार सिंह, तुषार रॉय चैधरी, प्रीति जगनानी, सुधांशु कुमार, पंकज उपाध्याय, सुनील साव आदि मौजूद थे।

गोली शरीर की हत्या कर सकता है, लेकिन विचारों को कभी नही मार सकती : रामधन

जननायक कॉमरेड महेंद्र सिंह का 19वां शहादत दिवस मनाया गया

खबर मन्त्र संवाददाता

डोमचांच (कोडरमा)। राइजिंग पब्लिक स्कूल, पुरनाडीह में मंगलवार को भाकपा माले प्रखंड कमेटी ने कॉमरेड महेंद्र सिंह का 19वां शहादत दिवस मनाया गया। शहादत दिवस पर कॉमरेड महेंद्र सिंह की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दी गयी। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला सचिव राजेन्द्र मेहता व संचालन विनोद पांडेय ने किया। कार्यक्रम में जिप अध्यक्ष सह राजद जिलाध्यक्ष रामधन यादव मुख्य रूप से मौजूद रहे। वहीं कॉमरेड महेंद्र सिंह को याद करते हुए जिप अध्यक्ष रामधन यादव ने कहा कि कॉमरेड महेंद्र सिंह गरीब-गुरबों और अन्याय के खिलाफ सड़क से लेकर सदन तक लड़ने वाले योद्धा के रूप में पहचान बनाई थी। कॉमरेड महेंद्र सिंह संयुक्त बिहार और झारखण्ड निर्माण के बाद खेतिहर मजदूर से लेकर आम अवाम के लिए संघर्ष का रास्ता प्रशस्त किया। लेकिन उनकी हत्या कर दी गयी, ताकि उनकी आवाज सदन में नही गूंज पाए। लेकिन बुलेट शरीर की हत्या कर सकता है, लेकिन विचारों को कभी नही मार सकती। उन्होंने कहा कि कॉमरेड महेंद्र सिंह की विचारधारा से झारखंड की तस्वीर बदलेगी। वहीं जिला सचिव राजेन्द्र मेहता ने कहा कि लाल झंडा का बुलन्द आवाज कॉमरेड महेंद्र सिंह ने विचारधारा से कोई समझौता नही किया। उन्होंने कहा कि कॉमरेड महेंद्र सिंह गरीब, शोषितों और समाज के अंतिम पायदान पर खड़े आम जनमानस के अधिकार के लिए हमेशा जनपक्षीय संघर्ष के रास्ते से लोकतंत्र को मजबूत बनाया। मौके पर भागीरथ सिंह घटवार, कृष्ण कांत मेहता, राजेन्द्र साव, सेराज उद्दीन, सरोज मेहता, जगदीश यादव, लाल बिहारी मेहता, बबन मेहता, मो. अबदुल्ला, विनोद सिंह घटवार, प्रकाश पासवान, भुनेशवर ठाकुर, संजय तिवारी, सुरज कुमार रजक आदि मौजूद थे।

जैविक खेती से संबंधित तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

खबर मन्त्र संवाददाता

गिद्धौर। प्रखंड कार्यालय परिसर स्थित सिंगल विंडो सेंटर में मंगलवार को संध्या महाशक्ति सेवा केंद्र भोपाल एवं जैविक जीवन प्रा ०लि० भोपाल व कृषि चौधरी चरण सिंह राष्ट्रीय कृषि विकास एवं वीपाटन संस्थान जयपुर के तत्वाधान में तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। जहां जैविक खेती से संबंधित प्रशिक्षण दिया गया। जहां जैविक खेती का लाभ तथा जैविक खाद बनाने से संबंधित प्रशिक्षण सुधांशु शर्मा के द्वारा बताया गया, जहां खेती में रासायनिक खाद का प्रयोग नहीं करना चाहिए रासायनिक खाद का प्रयोग करने से कई प्रकार की बीमारी हो सकती है तथा संध्या लकड़ा ने बताया कि जैविक खाद का प्रयोग करना चाहिए इससे कोई भी बीमारियों को रोका जा सकता है मौके पर उपस्थित अखिलेश श्रीवास्तव, बिटीएम अरविंद पांडेय, एटीएम दीनदयाल प्रसाद, पूर्व मुखिया योगेंद्र सिंह, पूर्व पंचायत समिति प्रतिनिधि पर प्रसादी पासवान, नीलम कुमारी आदि उपस्थित थे।

184 बिरहोरों को आयुष्मान कार्ड का मिला लाभ

कोडरमा। पीएम जनमन प्रोग्राम के तहत जिले के विभिन्न क्षेत्रों के 184 बिरहोरों (आदिम जनजाति) को आयुष्मान भारत मुख्यालय जन आरोग्य योजना का लाभ दिया गया। इन बिरहोरों के लिए योजना के तहत 184 आयुष्मान कार्ड राज्य सरकार की ओर से उपलब्ध कराया गया। इसमें डोमचांच प्रखड के 44, कोडरमा के 41 चंदवारा के 2, सतगावां के 20, जयनगर के 17 और मरकच्चो प्रखंड के 51 बिरहोर शामिल हैं। आयुष्मान मित्रों के द्वारा बिरहोरों के बीच इन आयुष्मान कार्डों का वितरण किया जा रहा है। गौरतलब हो कि आयुष्मान भारत मुख्यमंत्री जन आरोग्य योजना के तहत 5 लाख तक का स्वास्थ्य बीमा मुफ्त किया जाता है, लाल, पिला और हरा कार्ड के योजना के तहत उपचार में आने वाले खर्च बीमा से वहन होता है, मरीज या उसके परिजनों से किसी प्रकार की राशि नही ली जाती है।

मुखिया संघ की बैठक में विभिन्न मुद्दों पर चर्चा, कई प्रस्ताव पारित

खबर मन्त्र संवाददाता

सिमरिया। अनुमंडल मुख्यालय के किसान भवन परिसर में मंगलवार को मुखिया संघ की एक बैठक हुई। बैठक की अध्यक्षता संघ के प्रखंड अध्यक्ष सुधीर कुमार सिंह ने की। जबकि संचालन शकुंतला देवी ने किया। बैठक में विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की गई और कई प्रस्ताव पारित किए गए। जिसमें जल नल योजना में बरती जा रही अनियमितताओं की शिकायत चतरा उप विकास आयुक्त से की जाएगी। डीएमएफटी मद की दो करोड़ रुपए की योजना प्रत्येक वर्ष पंचायतों को उपलब्ध कराना, इस बाबत संघ के एक प्रतिनिधि मंडल चतरा उपायुक्त को ज्ञापन सौंपकर मांग करेगा और समस्त पंचायत प्रतिनिधियों का मानदेय 26 जनवरी से पूर्व भुगतान करने की मांग शामिल है। बैठक में पुरण राम, चंदा देवी, बीना देवी, सुनीता कुमारी, उमेश राम, कविता देवी, मनोरंजन सिंह, चोपे मुखिया प्रतिनिधि संजय कुमार भोगता, मुखिया प्रतिनिधि करम साहू, प्रतिनिधि सुरेश महतो सहित संघ के सदस्य मौजूद थे।

राहुल की यात्रा से गरीबों को न्याय मिलेगी : गीता कोड़ा

जमशेदपुर/चाईबासा। भारत जोड़ो न्याय यात्रा को लेकर जिला कांग्रेस कमिटी प०सिंहभूम की बैठक मंगलवार को हुई । कांग्रेस भवन , चाईबासा में आयोजित जिला कांग्रेस कमिटी के अध्यक्ष चंद्रशेखर दास की अध्यक्षता में हुई बैठक में भारत जोड़ो न्याय यात्रा को कैसे सफल बनाया जाय, इस पर चर्चा हुई है । भारत जोड़ो न्याय यात्रा झारखंड के तेरह जिलों में पहुँचेगी । बैठक में मुख्य रुप से उपस्थित सिंहभूम की सांसद सह झारखंड प्रदेश कांग्रेस कार्यकारी अध्यक्ष गीता कोड़ा ने कहा कि भारत जोड़ो न्याय यात्रा में उन गरीब, गांव के नौजवानों, किसानों, दबे-कुचले लोगों, व्यापारियों, जिनके साथ केंद्र सरकार के द्वारा कहीं न कहीं अन्याय हुआ हो, उन्हें यात्रा में शामिल करवाने का लक्ष्य है। उनकी आवाज को सड़क से सदन तक पहुंचाने के लिए उनसे संपर्क स्थापित कर समन्वय करने के लिए कार्य करना है। यह यात्रा न सिर्फ कांग्रेसजनों की यात्रा है, बल्कि यह यात्रा उन जवानों के लिए है, जो भयंकर बेरोजगारी का दंश झेल रहे ह और सड़कों पर ठोकरे खा रहे है। यह यात्रा उन महिलाओं के लिए है, जो कहीं ना कहीं से अत्याचार की शिकार हुई है। झारखंड राज्य से पलायन कर अन्य राज्यों में खास कर भाजपा शासित राज्यों में शोषित हुई है, उनकी आवाज भी इस यात्रा तक पहुँचानी है। महंगाई की वजह से बुझते हुए चूल्हे, यहां तक की रोजमर्रा की जिंदगी चलाना भी जिनके लिए मुश्किल हुआ है, ऐसे लोगों की आवाज इस यात्रा तक पहुंचाना अनिवार्य है। राहुल गांधी की यह यात्रा से आर्थिक न्याय , सामाजिक न्याय , राजनीतिक न्याय मिलेगी ।

केंद्र की नीतियों से आम जनता त्रस्त : दीपांकर

खबर मन्त्र संवाददाता

गिरिडीह। बगोदर में कॉमरेड महेंद्र सिंह का शहादत दिवस मनाया गया. भाकपा माले के महासचिव दीपांकर भट्टाचार्य ने कहा कि केंद्र में आदिवासी महिला को राज्यपाल बनाया गया है, लेकिन आज झारखंड में आदिवासी की जमीन की हकमारी हो रही है। उनके जंगल को कॉरपोरेट घरानों द्वारा रौंदा जा रहा है। उन्होंने कहा कि आज देश में धर्म की राजनीति चल रही है। केंद्र में मोदी सरकार दस साल से है, लेकिन पूरे देश में जनता परेशान है। वह यहां एक जनसभा में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि भाकपा माले जनता के सभी मुद्दों को लेकर लड़ाई जारी रखेगी। कोडरमा लोकसभा में लाल झंडा फहराने की अपील की गयी। एक बार फिर महेंद्र सिंह के बताए रास्ते पर चलने का संकल्प लिया गया।

दीपांकर भट्टाचार्य ने आज जननायक महेंद्र सिंह के आंदोलन

कामरेड महेंद्र सिंह की शहादत दिवस पर केंद्र पर माले नेता बोला हमला

फिर से याद किया जा रहा है। जनता के हित को लेकर महेंद्र सिंह लड़ते रहे और जहां सत्ता और जनता के बीच लड़ाई होती है, वहां जनता की जीत होती है। भाकपा माले जन संकल्प अभियान चलायेगी। जनता को पूरा न्याय मिलेगा। उन्होंने कहा कि मौजूदा दौर में सरकार की नीतियां ऐसी हैं कि आपके पास जीने लायक वेतन नहीं है। आज देश की जनता भाजपा से सवाल पूछ रही है। आज कोयला, माइका भी बंद होने के कगार पर है। रोजगार देने के वादे के साथ सत्ता में आयी केंद्र सरकार ने रोजगार तक लोगों से छिनने का काम कर रही है। यू कहें कि रोजगार भी सुरक्षित नहीं है। सेना में चार साल की नौकरी लायी, उसके बाद की उम्र में युवा क्या करेंगे? ये बड़ा सवाल है।

केंद्र सरकार कर रही तानाशाही : विनोद सिंह

शहीद महेंद्र सिंह के पुत्र व बगोदर के विधायक विनोद कुमार सिंह ने कहा कि जल, जंगल और जमीन को लूटा जा रहा है। केंद्र की सरकार उसे कॉरपोरेट घरानों को बेच रही है। आज ऐसी स्थिति में महेंद्र सिंह को याद करते हैं क्योंकि उनके नेतृत्व में अपने हक-अधिकार के लिए जनता ने लड़ना सीखा। गलत के खिलाफ हमें लड़ने के लिए प्रेरित किया। एक समय था जब गांव में जंगल और जमीन पर खास लोगों की दबंगई थी। उनके खिलाफ आवाज बुलंद की गयी। अभी जो हुकूमत है, वो हुकूमत देश की संपत्तियों को लूटने में लगी हुई है। केंद्र की सरकार कानून बदल रही है। नदी-जंगल आप बचाएं, लेकिन कानून आपके खिलाफ बन रहे हैं। आप नदी से बालू नहीं ले सकते हैं। गांव में ग्राम सभा की बिना अनुमति के ही जंगल को काटा जा रहा है।

नवलशाही थाना परिसर में शांति समिति की बैठक

खबर मन्त्र संवाददाता

मरकच्चो (कोडरमा)। नवलशाही थाना परिसर में थाना प्रभारी सोनी प्रताप की अध्यक्षता में शांति समिति की बैठक मंगलवार को की गई। बैठक में निर्णय लिया गया कि अगामी 22 जनवरी को अयोध्या में होने वाले भगवान रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा एवं 26 जनवरी गणतंत्रता दिवस सौहार्दपूर्ण मनाने की अपील करते हुए थाना प्रभारी ने कहा कि कोई भी पर्व खुशी और आनंद बांटने के लिए होता हैं। 22 जनवरी को होने वाले कार्यक्रमों को शांति से मनाये ऐसा कोई काम ना करें, जिससे किसी दूसरे को परेशानी हो। मौके पर बेदु साव, एसआई रंजीत कुमार, शिवम कुमार, विनय प्रसाद यादव, किशोर यादव, देवनारायण यादव, कमलेश ठाकुर, वासुदेव पाण्डेय, संजय साव, कलीमउद्दीन अंसारी, असरफ अंसारी एवं थाना के कई जवान मौजूद थे।

प्री-बोर्ड परीक्षा में शामिल हुए दशवीं और बारहवीं के परीक्षार्थी

कोडरमा। आगामी मैट्रिक और इंटर बोर्ड परीक्षा को ध्यान में रखते हुए जिला प्रशासन के द्वारा प्रोजेक्ट रेल 3 .0 के तहत जिले के सभी सरकारी स्कूलों में मंगलवार को प्री बोर्ड परीक्षा का आयोजन किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में छात्र छात्राऐं शामिल हुए। जिले सभी सरकारी स्कूलों में आयोजित परीक्षा में 10वीं के छात्र छात्राओं ने विज्ञान और 12वीं के छात्र छात्राओं ने अंग्रेजी विषय की परीक्षा दिए।

झारखण्ड सरकार, गृह, कारा एवं आपदा प्रबंधन विभाग

झारखण्ड आन्दोलनकारी चिन्हितीकरण आयोग।

62वीं औपबंधिक सूची
जिला:–गुमला

क्र0	आवेदनकर्ता की विवरणी	काण्ड/वाद सख्या	झारखण्ड आन्दोलन के सेनानी पुस्तक में नाम अंकित है अथवा नही	आन्दोलनकारी होने का संक्षिप्त कारण	गृह, कारा एवं आपदा प्रबंधन विभाग, झारखण्ड, रांची के संकल्प संख्या–1938, दिनांक– 20.04.2021 के आलोक में प्रदत्त कडिका
1.	1. आवेदन क्र0–01/24 2. आवेदक–भागीरथी साहु 3. पिता–स्व0 राम प्रसाद साहु 4. ग्राम–भागीडेरा, कोनबीर पोस्ट–कोनबीर 5. थाना–बसिया प्रखण्ड–बसिया 6. लिंग–पुरूष आयु–56 वर्ष 7. पहचान चिन्ह–बॉये ओर मस्सा।	नहीं	नहीं	कारण:–जिला स्तरीय पार्टी बैठक से संबंधित अखबार कतरन मे नाम अंकित। पार्टी का नाम–झामुमो	2(ix)
2.	1. आवेदन क्र0–02/24 2. आवेदक–जुबैर अन्सारी 3. पिता–स्व0 इदन अंसारी 4. ग्राम–करकरी पोस्ट–करकरी 5. थाना–सिसई प्रखण्ड–सिसई 6. लिंग–पुरूष आयु–51 वर्ष 7. पहचान चिन्ह–दाहिने पैर में घाव का निशान।	नहीं	नहीं	कारण:–i. पार्टी बैठक पंजी में नाम अंकित। ii. आयोग के सदस्य श्री भुवनेश्वर महतो के समक्ष दिये गये बयान के आधार पर पार्टी का नाम–झामुमो	2(ix)
3.	1. आवेदन क्र0–03/24 2. आवेदक–महमुद आलम अंसारी 3. पिता–स्व0 जहीरूद्दीन अंसारी 4. ग्राम–लोहंजरा पोस्ट–सहीजाना 5. थाना–सिसई प्रखण्ड–सिसई 6. लिंग–पुरूष आयु–50 वर्ष 7. पहचान चिन्ह–सिर के दाहिने ओर घाव का निशान।			कारण:–i. अभिप्रमाणित पार्टी सदस्यता रसीद ii. आयोग के सदस्य श्री भुवनेश्वर महतो के समक्ष दिये गये बयान के आधार पर पार्टी का नाम–झामुमो	2(ix)

नोट :– 1. सूची में किसी भी प्रकार की त्रुटि यथा नाम, पिता का नाम, पूरा पता, लिंग, आयु, पहचान चिह्न, केस/वाद सं0, झा0 आंदोलन के सेनानी पुस्तिका, कारण, जेल अवधि आदि में पाये जाने पर दस (0) दिनों के अन्दर आयोग को आपत्ति कर सकते हैं और यदि जेल गये हैं तो उसका प्रमाण पत्र/आश्रित होने पर मृत्यु प्रमाण पत्र उपलब्ध करावें।
2. जिन आवेदकों का चिन्हितीकरण अखबार कतरन/बैठक पंजी/सदस्यता प्रमाण पत्र के आधार पर किया गया है, वे सम्पुष्टिकरण से पूर्व उक्त कागजात को सक्षम पदाधिकारी से अभिप्रमाणित कर, इसमें नाम होने के आशय का शपथ पत्र अवश्य रूप से उपलब्ध करावें।

(मुवनेश्वर महतो) सदस्य | (नरसिंह मुर्मू) सदस्य | (दुर्गा उराँव) अध्यक्ष

PR 316161 (Home) 23-24 (D)

हजारीबाग नगर निगम, हजारीबाग।

बन्दोबस्ती हेतु आम सूचना

एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि हजारीबाग नगर निगम, हजारीबाग द्वारा निम्नांकित तालिका में क्रमांक 1 से 21का वित्तिय वर्ष 2024–2025 (01.04.2024 से 31.03.2025 तक) एवं क्रमाक 22 वित्तिय वर्ष 2024–2025 से 2026–2027 तक के लिए बन्दोवस्ती हेतु खुला डाक का आयोजन दिनांक 10.02.2024 को 12:00 बजे पुर्वाहन से नगर निगम सभागार में आयोजित की जायेगी इच्छुक व्यक्ति दिनांक 18.01.2024 से 08.02.2024 तक नगर निगम कार्यालय में आवेदन के साथ शुल्क जमा कर फार्म प्राप्त कर सकते है:–

क्र.स.	सैरात का नाम	अवधि	बन्दोवस्ती की राशि	जमानत की राशि
1	स्टेडियम के निकट स्थित टैक्सी स्टैण्ड की निलामी।	2024–2025	8,62,000	86,200
2	सदर थाना के सामने दोपहिया वाहन पडाव की निलामी।	2024–2025	4,07,000	40,700
3	मालवीय मार्ग दक्षिण मुख्य नाला स्लैब पर टैम्पु वाहन पडाव की निलामी।	2024–2025	1,16,000	11,600
4	खिरगाँव डम्पिंग ग्राउण्ड में स्थित वाहन पडाव की निलामी।	2024–2025	4,74,000	47,400
5	गुरू गोविन्द सिंह पार्क के सामने दोनो तरफ वाहन पडाव की निलामी।	2024–2025	1,31,000	13,100
6	बैंक ऑफ बडौदा के समाने दो पहिया वाहन पडाव की निलामी।	2024–2025	75,000	7,500
7	कुणाल नर्सिंग होम से सरदार चौक तक ट्रैक्टर वाहन पडाव की निलामी।	2024–2025	25,35,500	2,53,550
8	इन्द्रपूरी चौक से कल्लू चौक तक ट्रैक्टर वाहन पडाव की निलामी।	2024–2025	7,75,000	77,500
9	सब्जी बाजार की निलामी।	2024–2025	55,80,000	5,58,000
10	सरकारी बस स्टैण्ड की निलामी।	2024–2025	4,72,000	47,200
11	स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया मुख्य शाखा के सामने वाहन पडाव की निलामी।	2024–2025	1,79,000	17,900
12	कचहरी रोड/वकालत खाना रोड में वाहन पडाव की निलामी।	2024–2025	2,79,000	27,900
13	आनन्दा कॉलेज गेट से गिरधारी साव के घर तक वाहन पडाव की निलामी।	2024–2025	2,80,000	28,000
14	बैंक ऑफ इण्डिया के समीप वाहन पडाव की निलामी।	2024–2025	69,000	6,900
15	इन्द्रपूरी से पुलिस लाईन के बीच पश्चिम तरफ की वाहन पडाव निलामी।	2024–2025	1,18,000	11,800
16	समहरणालय से पश्चिम बगोदर रोड एवं उतर झील रोड बी.एड कॉलेज तक वाहन पडाव की निलामी।	2024–2025	2,63,000	26,300
17	गुरू गोविन्द सिंह रोड उर्दू स्कुल के सामने दो पहिया एवं टेम्पू वाहन पडाव की निलामी।	2024–2025	5,75,000	57,500
18	पोस्ट ऑफिस के सामने दो पहिया की वाहन पडाव की निलामी।	2024–2025	62,500	6,250
19	काली बाडी मीठा तालाब सब्जी बाजार की निलामी।	2024–2025	13,51,000	1,35,100
20	त्रिमूर्ति चौक के पास वाहन पडाव की निलामी।	2024–2025	1,23,500	12,350
21	शेख भिखारी मेडिकल कॉलेज अस्पताल (सदर) परिसर में वाहन पडाव की निलामी।	2024–2025	4,01,000	40,100
22	छडवा डैम की निलामी।	2024–2025 से 2026–2027	8,11,000	81,100

–डाक में भाग लेने वाले इच्छुक डाक वक्ता के द्वारा जमानत की राशि बैंक ड्राफ्ट जो नगर आयुक्त नगर निगम, हजारीबाग के पदनाम से भारतीय स्टेट बैंक के मुख्य शाखा हजारीबाग में भुगतेय हो, डाक की तिथि से एक दिन पूर्व जमा करना होगा।
–किसी भी डाक को अस्वीकृत या बिना कारण बताये रद्द करने का अधिकार नगर निगम को सुरक्षित रहेगा एव किसी प्रकार का दावा मान्य नही होगा।
–सफल डाक वक्ता द्वारा बिना निगम कार्यालय के सहमति के स्वीकृत डाक की संपूर्ण राशि जमा नही करने या बन्दोबस्ती लेने से इन्कार करने पर कार्यालय द्वारा उनके विरूद्ध कडी कानूनी कार्रवाई करते हुए उनका नाम काली सूची में दर्ज की जायेगी।
–डाक की शेश नियम एवं शर्तो की विस्तृत जानकारी नगर निगम, हजारीबाग कार्यालय के सूचना पट्टपर में देखा जा सकता है।

PR 316228 Urban Development and Housing(23-24)D

नगर आयुक्त–सह–प्रशासक नगर निगम, हजारीबाग।

अफगानिस्तान का सूपड़ा साफ करने उतरेगा भारत

एजेंसी

बेंगलुरू। श्रृंखला जीत चुकी भारतीय टीम अफगानिस्तान के खिलाफ बुधवार को तीसरे और आखिरी टी20 मैच में इस लय को बरकरार रखते हुए 'क्लीन स्वीप' के इरादे से उतरेगी और कप्तान रोहित शर्मा के फॉर्म में लौटने की भी उम्मीद कर रही होगी। जून में होने वाले विश्व कप से पहले यह भारत का आखिरी टी20 मैच है। मोहाली और इंदौर में मिली जीत के बाद टीम प्रबंधन कोई कोताही बरतना नहीं चाहेगा। दोनों मैचों में छह विकेट से मिली जीत में पहली ही गेंद से आक्रमण की भारत की रणनीति अहम रही। भारत ने पहले मैच में 159 रन का लक्ष्य 17.3 ओवर में और दूसरे में 173 रन का लक्ष्य 15.4 ओवर में हासिल कर लिया। इससे पहले टी20 में भारतीय टीम शुरू में सावधानी से खेलकर आखिरी ओवरों में हाथ खोलने की रणनीति अपनाती आई है। लेकिन अब बल्लेबाज पहली गेंद से ही आक्रामक खेल रहे हैं और शिवम दुबे तथा विराट कोहली ने इसकी बानगी पेश की। करीब 14 महीने बाद पहला टी20 खेल रहे कोहली ने इंदौर में 16 गेंद में 29 रन बनाए। उन्होंने अफगानिस्तान के स्पिनर मुजीबुर रहमान का बखूबी सामना किया और उनकी सात गेंदों में 18 रन बनाए। आम तौर पर कोहली स्पिनरों के खिलाफ धीमा खेलते हैं लेकिन इस मैच में उलटा देखने को मिला। वहीं दुबे पिछले साल डबलिन में आयरलैंड के खिलाफ टी20 श्रृंखला के लिये तीन साल बाद भारतीय टीम में लौटे। उसके बाद उन्होंने एशियाई खेलों में भाग लिया लेकिन ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ टीम में जगह नहीं मिली। अपने स्टार स्पिनर राशिद खान के बिना खेल रही अफगानिस्तान के खिलाफ उन्होंने दो आक्रामक अर्धशतक लगाए। सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल ने भी अर्धशतक जड़ा। भारत की नजरें इन दोनों युवाओं पर फिर रहेंगी। कप्तान रोहित का बल्ला अभी तक नहीं चला है। पहले मैच में शुभमन गिल के साथ गलतफहमी होने पर वह रन आउट हो गए जबकि दूसरे मैच में फजलहक फारूकी की गेंद को भांप नहीं सके और सस्ते में विकेट गंवा दिया। दो मैचों में दो ही रन बना सके रोहित के फॉर्म से टीम प्रबंधन चिंतित नहीं होगा लेकिन आखिरी मैच में उनसे बड़ी पारी की उम्मीद जरूर होगी। इस मैच में बल्लेबाजी क्रम में भले ही बदलाव नहीं किया जाए लेकिन कुलदीप यादव और आवेश खान को मौका मिल सकता है। कुलदीप को रवि बिश्नोई या वॉशिंगटन सुंदर की जगह और आवेश को मुकेश कुमार की जगह उतारा जा सकता है। विकेटकीपर बल्लेबाज जितेश शर्मा रायपुर में पिछले साल ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ चौथे मैच के बाद से टी20 खेल रहे हैं। उन्हें आराम देने का विचार होने पर संजू सैमसन को उतारा जा सकता है। दूसरी ओर अफगानिस्तान को सलामी बल्लेबाज रहमानुल्लाह गुरबाज से बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद होगी जो दोनों मैचों में नाकाम रहे हैं।

पिच बल्लेबाजी होगी आसान

इस सीरीज के ट्रेंड को देखते हुए तीसरे टी20 में पिच बल्लेबाजी के लिए आसान हो सकती है। पेस गेंदबाजों के लिए भले ही मदद हो लेकिन स्पिनर के लिए शायद ही कुछ हो। ऐसे में बड़े स्कोर बना सकते हैं। भारतीय टीम के बल्लेबाज लय में चल रहे हैं। पिच बल्लेबाजी के लिए आसान हुई तो अफगानिस्तान के लिए मुश्किल खड़ी हो जाएगी।

कैसी होगी चिन्नास्वामी की पिच?

बेंगलुरु की एम चिन्नास्वामी स्टेडियम को बल्लेबाजों के लिए आईपीएल में स्वर्ग माना जाता है। यहां किस भी स्कोर सेफ नहीं माना जाता। लेकिन टी20 इंटरनेशनल में स्थिति अलग है। इस मैदान पर अभी तक 9 टी20 इंटरनेशनल मैच हुए हैं और सिर्फ एक ही बार कोई टीम 200 से ज्यादा रन बना पाई है। दिसंबर में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टी20 मुकाबले में यहां भारतीय टीम ने 160 का स्कोर डिफेंड कर लिया था।

दोनों टीमें इस प्रकार हैं:

भारत : रोहित शर्मा (कप्तान), शुभमन गिल, यशस्वी जायसवाल, विराट कोहली, तिलक वर्मा, रिंकू सिंह, जितेश शर्मा, संजू सैमसन शिवम दुबे, वाशिंगटन सुंदर, अक्षर पटेल, रवि बिश्नोई, कुलदीप यादव, अर्शदीप सिंह, आवेश खान, मुकेश कुमार।

अफगानिस्तान : इब्राहिम जदरान (कप्तान), रहमानुल्लाह गुरबाज, इकराम अलीखिल, हजरतुल्लाह जजई, रहमत शाह, नजीबुल्लाह जादरान, मोहम्मद नबी, करीम जनत, अजमतुल्लाह उमरजई, शराफुद्दीन अशरफ, मुजीब उर रहमान, फजलहक फारूकी, फरीद अहमद , नवीन उल हक, नूर अहमद, मोहम्मद सलीम, कैस अहमद, गुलबदीन नायब, राशिद खान।

सुमित नागल ने ऑस्ट्रेलियन ओपन में किया बड़ा उलटफेर

नागल का कमाल

- 2013 के बाद पुरुष एकल के दूसरे राउंड में पहुंचने वाले पहले भारतीय
- 1989 के बाद एकल मैच में वरीयता प्राप्त खिलाड़ी को हराने वाले पहले भारतीय
- दूसरी बार किसी ग्रैंड स्लैम के मुख्य दौर में जीत हासिल की

एजेंसी

मेलबर्न। भारतीय टेनिस खिलाड़ी सुमित नागल ने बड़ा उलटफेर किया है। उन्होंने ऑस्ट्रेलियन ओपन में पुरुष एकल के दूसरे राउंड में जगह बना ली है। मुख्य दौर के पहले राउंड में उन्होंने 27वीं रैंकिंग वाले एलेक्सजेंडर बबलिक को हराया है। नागल ने यह मैच सीधे सेटों में 6-4, 6-2, 7-6 से जीता। एलेक्सजेंडर को इस टूनार्मेंट में 31वीं वरीयता मिली है। नागल 2013 के बाद एकल के दूसरे राउंड में पहुंचने वाले पहले भारतीय पुरुष खिलाड़ी हैं। सोमदेव देवबर्मन ने 2013 में दूसरे दौर में जगह बनाई थी। 1989 के बाद पहली बार किसी भारतीय खिलाड़ी ने ऑस्ट्रेलियन ओपन के एकल मैच में वरीयता प्राप्त खिलाड़ी को हराया है। 1989 में रमेश कृष्णन ने ऐसा किया था। तब उन्होंने दूसरे दौर में स्वीडन के मैट्स विलेंडर को हराया था। विलेंडर तब टेनिस रैंकिंग में दुनिया के शीर्ष खिलाड़ी थे। सुमित ने दूसरी बार किसी ग्रैंड स्लैम के मुख्य दौर में जीत हासिल की है। इससे पहले 2020 यूएस ओपन में वह मुख्य ड्रॉ में एक मैच जीतने में सफल रहे थे। उन्होंने सातवीं बार टेनिस रैंकिंग में शीर्ष 100 में शामिल खिलाड़ी को हराया है। वहीं, विपक्षी खिलाड़ी की रैंकिंग के लिहाज से यह सुमित की दूसरी बड़ी जीत है।

स्विएटेक ने जीत के साथ की शुरूआत

मेलबर्न। विश्व की नंबर 1 महिला टेनिस खिलाड़ी इगा स्विएटेक ने मंगलवार को रॉड लेवर एरेना में ऑस्ट्रेलियन ओपन के शुरूआती दौर में पूर्व चैंपियन सोफिया केनिन को 7-6(2) 6-2 से हराकर जीत के साथ अपने अभियान की शुरूआत की। यह मुकाबला स्विएटेक की साख की कड़ी परीक्षा साबित हुआ, केनिन की मजबूत शुरूआत के बावजूद, जिन्होंने पहले सेट में दो बार स्विएटेक की सर्विस तोड़ी, स्विएटेक ने वापसी की, जिससे मैच टाई-ब्रेक तक गया और अंततः स्विएटेक ने सेट पर कब्जा कर लिया।

विराट कोहली को मिला प्राण प्रतिष्ठा का न्योता

एजेंसी

नयी दिल्ली। पूर्व भारतीय कप्तान और क्रिकेटर विराट कोहली को रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का निमंत्रण मिला है। 22 जनवरी को अयोध्या में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा को लेकर भव्य तैयारियां की जा रही हैं। जानकारी के मुताबिक, मंदिर परिसर में 8000 कुर्सियां लगाई गई हैं। इस बीच श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र, आरएसएस और विश्व हिंदू परिषद के नेता प्रमुख हस्तियों को रामलला की प्राण प्रतिष्ठा पर आमंत्रित करने में जुटे हैं। विराट कोहली और अनुष्का शर्मा को मंगलवार को रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का न्योता मिला है। इसकी तस्वीर सामने आई है। निमंत्रण पाकर दोनों काफी खुश नजर आ रहे हैं।

इटली को 5-1 से हराकर भारत सेमीफाइनल में

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। एफआइएच हॉकी ओलंपिक क्वालीफायर्स में मंगलवार को इटली को 5-0 से शिकस्त देकर भारत ने सेमीफाइनल में प्रवेश किया। 18 जनवरी को फाइनल में जगह बनाने के लिए भारत का मुकाबला वर्ल्ड नंबर 5 की टीम जर्मनी से होगा। मंगलवार को भारत और इटली के बीच आखिरी लीग मैच खेला गया जिसमें भारत ने 5-0 से जीत दर्ज की। मुकाबले के 45 वें सेकंड में भारत ने गोल कर इटली पर दबाव बना दिया। अपना 100वां अंतराष्ट्रीय मुकाबला खेल रही उदिता ने पेनाल्टी कॉर्नर को गोल में बदलकर भारत को 1-0 की लीड दिलाई। पहले हॉफ का खेल खत्म होने तक भारत ने 1-0 की लीड लेकर इटली पर दबाव बनाए रखा। मुकाबले में इटली ने वापसी की कोशिश की, लेकिन नाकाम रहीं। मुकाबले का दूसरा गोल 41 वें मिनट में आया। भारत को मिले पेनाल्टी स्ट्रोक को दीपिका ने लिया और गोल कर लीड को 2-0 किया। झारखंड की सलीमा टेटे ने मुकाबले का तीसरा गोल किया। इटली की डिफेंस को छकाते हुए 45 वें मिनट में फील्ड गोल कर भारत को मजबूत स्थिति में ला खड़ा किया। भारत ने आक्रामक रवैया अपनाते हुए चौथा गोल दागा। नवनीत कौर ने 53 वें मिनट में शानदार फाइल गोल कर लीड को 4-0 कर भारत की जीत सुनिश्चित कर दी। भारत के लिए पांचवा गोल पेनाल्टी कॉर्नर के रूप में आया। उदिता ने दिन का दूसरा गोल कर लीड को 5-0 पहुंचा दिया। इटली के लिए एकमात्र गोल केमिला माकिन ने 60वें मिनट में पेनल्टी कॉर्नर पर किया।

दोस्त ने महेंद्र सिंह धोनी को अदालत में घसीटा, किया मानहानि का केस

रांची। चेन्नई सुपर किंग्स के पूर्व कप्तान और भारत के महान क्रिकेटर महेंद्र सिंह धोनी पर उनके पूर्व बिजनेस पार्टनर मिहिर दिवाकर और पत्नी सौम्या दास ने मानहानि का केस दायर किया है। इस जोड़ी ने गलत आरोप लगाकर उनकी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाने का आरोप लगाया है। धोनी ने बीते दिनों ही अपने 2 पुराने बिजनेस पार्टनर के खिलाफ धोखाधड़ी का आरोप लगाया था। धोनी ने शिकायत में लिखा था कि उन्हें क्रिकेट एकेडमी खोलने का कॉन्ट्रैक्ट दिया था, लेकिन उन्होंने इसे पूरा नहीं किया और 15 करोड़ रुपए हड़प लिए। अब दिवाकर और दास की शिकायत के अनुसार- धोनी द्वारा कथित तौर पर 15 करोड़ रुपए लेने के लगाए गए आरोप झूठे हैं। इस मामले की सुनवाई 18 जनवरी को हाईकोर्ट में होनी है।

प्रणय दूसरे दौर में, चोउ टीएन चेन को दी शिकस्त

नयी दिल्ली। दुनिया के नौवें नंबर के खिलाड़ी एचएस प्रणय ने मंगलवार को यहां केडी जाधव इंडोर हॉल में असाधारण बैडमिंटन कौशल का प्रदर्शन करते हुए चीनी ताइपे के चोउ टीएन चेन पर सीधे गेम में शानदार जीत के साथ इंडिया ओपन सुपर 750 टूनार्मेंट के दूसरे दौर में प्रवेश कर लिया है। प्रणय ने 13वें स्थान पर मौजूद चेन को 42 मिनट तक चले मुकाबले में 21-6, 21-19 के स्कोर से हराया। प्रणय ने मैच के बाद कहा, पहले गेम में योजना बिल्कुल सही थी। मैं कोर्ट के पीछे से अच्छे शॉट लगा रहा था। उसकी लंबाई ठीक से नहीं आ रही थी, इसलिए मुझे पहला गेम जल्द खत्म करने में आसानी हुई। दूसरे गेम में, वह गति बढ़ा रहा था, लेकिन मैं 11-16 से वापसी करने पर खुश था और अंत तक, मैं सही गेम खेल रहा था। उन्होंने आगे कहा, मैच को दो गेम में बंद करना महत्वपूर्ण था क्योंकि अगर मैच तीसरे गेम में जाता, तो यह हमेशा कठिन होता है क्योंकि वह (चेन) अपने अनुभव से आगे बढ़ता है। एचएस प्रणय का अगला मुकाबला दूसरे दौर के मुकाबले में लक्ष्य सेन और प्रियांशु राजावत के बीच होने वाले मैच के विजेता से होगा।

पंत ने दिए वापसी के संकेत, नेट्स पर 20 मिनट तक की बल्लेबाजी

नयी दिल्ली। भारत के ऋषभ पंत आइपीएल से पेशेवर क्रिकेट में वापसी कर सकते हैं। पंत दिसंबर 2022 में हुई कार दुर्घटना के बाद से फिटनेस पर काम कर रहे हैं। पंत ने मंगलवार को बेंगलुरु के चिन्नास्वामी स्टेडियम की नेट्स पर 20 मिनट तक बल्लेबाजी की। अभ्यास करके अपनी बेहतर फिटनेस का एक और संकेत दिया। उन्होंने इसके बाद टीम इंडिया के खिलाड़ियों से मुलाकात भी की। पंत को कोहली से लंबे समय तक बात करते हुए देखा गया। भारतीय टीम के अभ्यास के लिए पहुंचने से पहले ऋषभ ने राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी के स्टाफ की थ्रोडाउन पर बल्लेबाजी की।

67वीं राष्ट्रीय स्कूली खेल 2023-24 का खोलगांव में आज होगा आगाज

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। स्कूल गेम्स फेडरेशन ऑफ इंडिया (एसजीएफआइ) की ओर से स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग झारखंड की मेजबानी में रांची में 17 जनवरी से 19 फरवरी तक 67वीं राष्ट्रीय स्कूली खेल 2023-24 का आयोजन होगा। झारखंड में पहली बार ऐसा होगा जब इतने प्रतिष्ठित खेल प्रतियोगिता की मेजबानी शिक्षा विभाग कर रहा है। 17 जनवरी को बिरसा मुंडा एथलेटिक्स स्टेडियम में औपचारिक खेल मंत्री हफीजुल हसन इसका उद्घाटन करेंगे। इस दौरान बच्चों के द्वारा ही सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए जाएंगे। झारखंड में फुटबॉल, स्केटिंग, खो- खो, वुशु जैसे खेलों का आयोजन होगा। मंगलवार को खेलगांव में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में झारखंड शिक्षा परियोजना परिषद् (जेईपीसी)के प्रशासी पदाधिकारी जयंत कुमार मिश्र ने बताया कि रांची को 6 खेलों की मेजबानी मिली है। 17 से 21 जनवरी तक होने वाले फुटबॉल अंडर 14 बालक एवं बालिका प्रतियोगिता के लिए देश भर से 620 बालक एवं 500 बालिका खिलाड़ी, झारखंड फुटबॉल संघ एवं झारखंड ओलम्पिक संघ से 117 तकनीकी पदाधिकारी खेल गांव पहुंच चुके हैं। उन्होंने कहा कि शिक्षा विभाग की ओर से सभी को उनके झारखंड आगमन पर पारंपरिक तरीके से स्वागत किया गया। खिलाड़ियों के ठहरने की व्यवस्था खेलगांव परिसर और इसके आसपास ही की गई है। प्रतियोगिता को सफल बनाने के लिए शिक्षा विभाग के 200 से अधिक शारीरिक शिक्षा शिक्षक एवं 50 से अधिक पदाधिकारियों की ड्यूटी लगाई गई है। उन्होंने बताया कि फुटबॉल के अलावे राँची में कबड्डी, वुशु, खो-खो, सायकलिंग और स्केटिंग की प्रतियोगिता होंगी.इसकी सारी तैयारियां पूरी कर ली गयी हैं। प्रेस कॉन्फ्रेंस में आयोजन सचिव धीरसेन सोरेंग, झारखंड ओलिंपिक संघ के शिवेंदु दुबे, झारखंड फुटबॉल संघ के तकनीकी निदेशक नवीन सुंडी, एसजीएफआई प्रतिनिधि कनिका भी मौजूद थीं। इस दौरान नवीन सुंडी ने जानकारी दी कि प्रतियोगिता के बालिका वर्ग के मैच विकास विद्यालय, रांची में एवं बालक वर्ग के मैच खेल गांव प्रैक्टिस ग्राउंड, बिरसा मुंडा फुटबॉल स्टेडियम मोरहाबादी एवं मंदिर मैदान मोरहाबादी में खेले जाएंगे।

- झारखंड में पहली बार शिक्षा विभाग कर रहा एसजीएफआई का आयोजन, खेल मंत्री करेंगे उद्घाटन

आइसीसी प्लेयर ऑफ द मंथ बने दीप्ति, कमिंस

नयी दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आइसीसी) ने दिसंबर 2023 के लिए पुरुष और महिला प्लेयर ऑफ द मंथ पुरस्कार विजेताओं की घोषणा कर दी है। पाकिस्तान के खिलाफ अपनी टीम की विजयी टेस्ट श्रृंखला में बेहतरीन गेंदबाजी करने वाले ऑस्ट्रेलियाई तेज गेंदबाज व कप्तान पैट कमिंस ने दिसंबर के लिए आइसीसी मेन्स प्लेयर ऑफ द मंथ का पुरस्कार जीता। दीप्ति शर्मा ने अपना पहला आइसीसी महिला प्लेयर ऑफ द मंथ पुरस्कार जीता। दिसंबर में पाकिस्तान पर ऑस्ट्रेलिया की टेस्ट सफलता में कमिंस सबसे आगे थे।

एग्नेस नगेटिच ने 10 किमी दौड़ में विश्व रिकॉर्ड तोड़ा, 29 मिनट से भी कम समय में पूरी की रेस

स्पेन। केन्या की एग्नेस नगेटिच ने स्पेन में वालेंसिया इबरकाजा रोड रेस जीतकर 29 मिनट से कम समय में 10 किमी दौड़ने वाली पहली महिला बन गईं हैं। 22 वर्षीय खिलाड़ी ने 28 मिनट 46 सेकंड में रेस पूरी की और इथियोपिया के यालेमजर्फ येहुआलाव के 2022 रोड वर्ल्ड रिकॉर्ड को तोड़ दिया। हमवतन इमैक्युलेट आन्यांगो ने भी 29 मिनट से कम समय में दौड़ लगाई और 28:57 में दूसरे स्थान पर रहे। नगेटिच ने महिलाओं की एकमात्र दौड़ में बीट्राइस चेबेट के 5 किमी के 14:13 के विश्व रिकॉर्ड की बराबरी भी की जिसे उन्होंने दो सप्ताह पहले बनाया था। नगेटिच के 10 किमी के समय ने महिलाओं के 10,000 मीटर ट्रैक के 29:01.03 के विश्व रिकॉर्ड को तोड़ा जो इथियोपिया की लेटेसेनबेट गिडी के पास था। नगेटिच ने सितंबर में महिलाओं की एकमात्र दौड़ में 29:24 के समय के साथ 10 किमी का विश्व रिकॉर्ड बनाया था। नगेटिच ने कहा, मैं बहुत खुश हूं। ईमानदारी से कहूं तो, मेरा स्पष्ट लक्ष्य विश्व रिकॉर्ड तोड़ना था लेकिन 28:46 किसी भी उम्मीद से परे है। जब मैंने आधे रास्ते में 14:13 देखा तो मैं डरी नहीं, इसने मुझे अंत तक प्रयास जारी रखने के लिए बहुत प्रेरित किया। अब वह मार्च में विश्व एथलेटिक्स क्रॉस कंट्री चैंपियनशिप बेलग्रेड 24 और फिर पेरिस 2024 ओलंपिक खेलों पर ध्यान केंद्रित करेंगी, जहां अगस्त में एथलेटिक्स नंबर 1 खेल होगा। उन्होंने कहा, 'मैं बेलग्रेड के लिए केन्याई ट्रायल करूंगी, जहां मैं पिछले साल के अपने कांस्य पदक में सुधार करना चाहूंगी।

जर्मनी ने चेक गणराज्य को दी करारी शिकस्त, 10-0 से जीता मैच

एफआइएच हॉकी ओलंपिक क्वालीफायर्स

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। रांची के मारंग गोमके जयपाल सिंह एस्ट्रोटर्फ हॉकी स्टेडियम में हॉकी ओलंपिक क्वालीफायर मैच में मंगलवार का दिन काफी अहम रहा है। पहला मैच जर्मनी और चेक गणराज्य के बीच खेला गया। मैच में जर्मनी के खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन किया। जर्मनी ने एकतरफा मुकाबले में चेक गणराज्य को हरा दिया। जर्मनी के तरफ से 10 गोल दागे गए जबकि चेक गणराज्य की टीम एक गोल भी नहीं कर सकी। जर्मनी और चेक रिपब्लिक के बीच खेले गए मैच में जर्मनी लगातार चेक रिपब्लिक पर भारी रहा। जर्मनी ने पहला गोल मैच शुरू होते ही दाग दिया। पहले गोल के तुरंत बाद तुरंत दूसरा गोल भी जर्मनी ने दाग दिया। हाफ टाइम से पहले ही जर्मनी 2-0 की बढ़त चेक रिपब्लिक से लिए हुए था। हाफ टाइम के बाद जब मैच शुरू हुआ उसके बाद जर्मनी को पेनाल्टी कार्नर भी मिल गया मिला, जिसके बाद जर्मनी ने तीसरा गोल दाग दिया। चेक गणराज्य से जर्मनी लगातार आगे रहा और जर्मनी ने अपना पांचवां गोल भी कर दिया। चेक गणराज्य को संभालने का भी मौका जर्मनी ने नहीं दिया, उसके बाद छठा गोल भी जर्मनी ने दाग दिया। इसी तरह एक के बाद एक कुल दस गोल जर्मनी ने किए और मैच को जीत लिया। चेक गणराज्य के खिलाड़ी अपनी टीम का खाता भी खोल नहीं सके।

जापान ने चिली को 2-0 से हराकर सेमीफाइनल में किया प्रवेश

रांची। एफआइएच हॉकी ओलंपिक क्वालीफायर में मंगलवार को जापान ने चिली को 2-0 से हराकर सेमीफाइनल में जगह बना लिया। पूल ए में जर्मनी के बाद जापान सेमीफाइनल में प्रवेश करने वाली दूसरी टीम बनी। जापान और चिली के खिलाफ मुकाबला खेला गया। जापान ने आक्रामक खेल दिखाते हुए मुकाबले के एक मिनट में पेनाल्टी कॉर्नर जीतकर चिली पर दबाव बना दिया। जापान की काना उराता ने पेनाल्टी को गोल में बदलकर जापान 1-0 से लीड दिला दी। जापान के लिए दूसरा गोल मियु हसेगवा ने किया। चिली के डिफेंस को भेदकर मुकाबले के 23 वें मिनट में फाइल गोल दागकर स्कोर 2-0 कर दिया। मुकाबले के बाकी समय में जापान हावी रहा लेकिन मुकाबले के अंत तक स्कोर 2-0

न्यूजीलैंड को 1- 0 से हराकर यूएसए सेमीफाइनल में

रांची। एफआइ एच हॉकी ओलंपिक क्वालीफायर में यूएसए ने मंगलवार को न्यूजीलैंड को 1-0 से हराकर सेमीफाइनल में प्रवेश किया। पूल बी में सभी मैच जीतकर यूएसए सेमीफाइनल में पहुंची।मुकाबले का एकमात्र गोल यूएसए ने मुकाबले के 17वें मिनट में किया। 17वें मिनट पर एलिजाबेथ यीगर ने पेनाल्टी कॉर्नर को गोल में तब्दील किया। न्यूजीलैंड ने आखिरी मिनट तक वापसी की कोशिश की लेकिन वो नाकाम रहे। मैच में तीन पेनाल्टी कॉर्नर यूएसए जबकि चार पेनाल्टी कॉर्नर न्यूजीलैंड ने हासिल किया थे।

मेस्सी 8वीं बार बने फीफा के सर्वश्रेष्ठ पुरूष खिलाड़ी

लंदन। अर्जेंटीना के सुपरस्टार लियोनेल मेसी ने बैलन डी'ओर का ताज पहनने के दो महीने बाद यहां सर्वश्रेष्ठ फीफा पुरुष खिलाड़ी का पुरस्कार बरकरार रखा है। 36 वर्षीय मेसी लंदन में आयोजित समारोह से अनुपस्थित थे, जबकि पेप गार्डियोला, जिन्होंने बार्सिलोना में मेसी को प्रशिक्षित किया था, सर्वश्रेष्ठ कोच की ट्रॉफी लेने के लिए आए थे। स्पेन के गार्डियोला ने मैनचेस्टर सिटी को पिछले सीजन में प्रीमियर लीग खिताब, एफए कप और पहली चैंपियंस लीग दिलाई। इसके अलावा, इंग्लैंड की मैनेजर सरीना विगमैन को महिला सर्वश्रेष्ठ कोच का ताज पहनाया गया, जबकि स्पेन और बार्सिलोना की मिडफील्डर एताना बोनमती को सर्वश्रेष्ठ महिला खिलाड़ी का पुरस्कार मिला। बोनमती महिला बैलन डी'ओर का पुरस्कार भी जीत चुकी हैं। मार्टा को उनके उत्कृष्ट करियर उपलब्धियों के लिए फीफा विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। 37 वर्षीय ब्राजीलियाई ने छह विश्व कप टूनार्मेंटों में 23 मैचों में 17 गोल किए हैं। उन्हें छह बार दुनिया की सर्वश्रेष्ठ महिला खिलाड़ी का पुरस्कार भी मिल चुका है।

मनाया गया शहीद महेंद्र सिंह की 19वीं शहादत दिवस

खबर मन्त्र संवाददाता

बेरमो। शहीद महेंद्र सिंह के शारीरिक रूप से बिछड़े 19 साल हो गये लेकिन आज भी वे लाखों लाख मेहनती जनता के अरमानों में जिंदा हैं। उक्त बातें विस्थापित नेता काशीनाथ केवट ने मंगलवार को चलकरी में भाकपा माले द्वारा आहूत श्रद्धांजलि सभा में कही। उन्होंने कहा कि शहीद महेंद्र सिंह का नाम जेहन में उभरते ही जनसंघर्षों का एक क्रांतिकारी योद्धा की छवि सामने आती है। जनवादी सवाल देश के किसी भी हिस्से की जनता का हो उसे महेंद्र सिंह अपनी बुलंद आवाज जरूर देते थे। सड़क से लेकर सदन तक

जनता की वाजिब सवालों को कड़कती आवाज में उठाने की नायाब कला महेंद्र सिंह जानते थे। महेंद्र सिंह शोषित जनता के सच्चे रहनुमा थे। उन्होंने महेंद्र सिंह का बोकारो जिले में किये गए संघर्षों को विस्तार से चर्चा की। माले नेता बालेश्वर गोप ने कहा कि आज देश में धार्मिक उन्माद फैलाकर नफरत की राजनीतिक के बल पर केन्द्र सरकार शासन कर रही है और देश के लोकतंत्र व संविधान को कमजोर कर रही है। इसलिए देश व राज्य के लोकतंत्र संविधान पसंद लोगो को एकजुट होकर लोकतंत्र बचाओ देश बचाओ आंदोलन को मजबूत करना होगा। पंचानन मंडल ने कहा कि चलकरी को केंद्र कर बोकारो जिले में महेंद्र सिंह और काशीनाथ केवट ने आईपीएफ का विस्तार किया था। इन्हीं नेताओं के मार्गदर्शन में हमलोगों ने विस्थापितों के बड़े बड़े आंदोलन संचालित किये। अलका मिश्रा ने बगोदर के श्रद्धांजलि कार्यक्रम में पारित तीन प्रस्ताव को पढ़ा और देश बचाओ संविधान व लोकतंत्र बचाओ मुहिम में भाकपा माले के साथ जुड़ने का आवाहन किया। बालगोबिन्द मंडल ने केंद्र सरकार की आलोचना करते कहा कि मोदी सरकार फासिस्ट नक्शेकदम पर चल रही है। रघुवीर राय ने कहा कि केंद्र की सरकार दो करोड़ नौकरी देने के वायदे से मुकर गई। बेरोजगार के लिए लड़ना होगा। राजदेव चौहान, माधो मंडल, अर्जुन महतो, अजय रविदास, कामेश्वर गिरी, बैजनाथ सिंह, समेत दर्जनों नेताओं ने संबोधित किया। श्रद्धांजलि सभा की अध्यक्षता राज केवट ने की जबकि संचालन नारायण केवट ने किया।

स्पीड न्यूज

शिक्षिका का पितृ शोक, हुआ शोक सभा का आयोजन

बेरमो। बेरमो अनुमंडल स्थित सीसीएल एडेड स्कूल शिशु विकास विधालय संडे बाजार लम्बी सेन्टर की शिक्षिका पूजा कुमारी वर्णवाल के 70 वर्षीय पिता विजय लाल वर्णवाल का निधन रांची में सोमवार को अहले सुबह हो गई । स्व वर्णवाल का ईलाज रांची के डाक्टर अमीत कुमार के नर्सिंग होम में चल रहा था। स्व वर्णवाल अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गए है। इसी को मंगलवार को शिशु विकास विधालय में शोक सभा आयोजित कर दो मिनट का मौन रहकर दिवंगत आत्मा के शांति के लिए प्रार्थना की गई। मौके पर प्राचार्य आर ए सिंह, शिक्षक संजीव कुमार, वरीय शिक्षिका शशिबाला शर्मा, रम्भा सिंह, ममता सिन्हा, तनुजा खातुन, भावना कुमारी, पूजा कुमारी सहित कई लोग उपस्थित थे।

श्री कृष्णा स्ट्रीट कॉलोनी के अध्यक्ष बने कुमार आभास

बेरमो। फुसरो नगर परिषद अंतर्गत ब्लॉक कॉलोनी में अवस्थित श्री कृष्णा स्ट्रीट के निवासियों ने मंगलवार को कुमार आभास को सर्वसम्मति से माला पहनाकर अध्यक्ष चुन लिया है। कुमार आभास ने कहा की कॉलोनी वालो ने जिस विश्वास के साथ कॉलोनी वासियों ने मुझे अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी प्रदान की है। मैं अपनी पूरी कोशिश करूंगा की हर प्रकार की समस्या का समाधान कर सकू। साथ ही साथ उन्होंने यह भी बतलाया की हर महीने एक बैठक की जाएगी। जिसमे कॉलोनी के सभी सुख दुख पर चर्चा होगी। मौके पर कॉलोनी की संरक्षिका डॉ शकुंतला कुमार, बालेश्वर पांडेय, राजेंद्र अग्रवाल, मदन वर्णवाल, मुन्ना बरनवाल, शंकर शर्मा, रोहित मित्तल, राकेश मालाकार, शंकर अग्रवाल, पिंकू वर्मा, मोहित नंदन, अमित नंदन, विजय अग्रवाल, रविंद्र शर्मा, विजय मालाकार, युगल अग्रवाल, अरुण बरनवाल, मोहन गुप्ता सहित कॉलोनी के कई लोग उपस्थित थे।

जंगली हाथी ने घर को किया क्षतिग्रस्त

बोकारो/कसमार। जरीडीह प्रखंड अंतर्गत भस्की पंचायत के ग्राम लिपु टोला जारा टांड रेनाघुटू में जंगली हाथी सोमरी देवी पति सोहन माझी के घर का दरवाजा तोड़कर करीब दो क्विंटल धान खा गये। घर पर सो रहे सोमरी देवी तथा सोमर मांझी डरकर हल्ला करने लगे तो गांव वाले घर से बाहर निकले और मशाल जलाकर हाथी को जंगल की ओर खदेड़ दिया। सुबह घटना की जानकारी मिलने पर मुखिया प्रतिनिधि सह वन अधिकार समिति के अध्यक्ष राहुल कुमार महतो मौके पर पहुचे और घटना की जानकारी वन विभाग को दी। जानकारी मिलते ही वन विभाग के कर्मी ठाकुर दास महतो पहुंचे तथा वन से क्षतिपूर्ति का मुआवजा दिलाने की बात कही। इस दौरान मंटू कुमार सुभाष चन्द्र महतो फुलचंद हेम्ब्रम सोमर मांझी आदि उपस्थित थे।

एक नजर में

उर्दू शिक्षक का पद मरणशील घोषित किया जाना दुर्भाग्यपूर्ण

बेरमो। झारखंड सरकार के शिक्षा निदेशालय द्वारा उर्दू शिक्षक के पद को मरणशील घोषित किया जाना दुर्भाग्यपूर्ण है। अगर झारखण्ड सरकार ने शिक्षा विभाग के इस प्रारूप को मंजूरी दे दी तो यह उर्दू जबान के साथ सौतेला व्यवहार होगा। उपरोक्त बाते यूनाइटेड मिल्ली फोरम फुसरो नगर प्रभारी मो मेराज अंसारी ने कही। कहा कि झारखंड सरकार को अविलंब इस प्रारूप को रद्द करना चाहिए।

बोकारो के मुख्य चौराहों पर सड़क सुरक्षा जागरूकता का विशेष अभियान

बोकारो। बोकारो स्टील सिटी के मुख्य चौराहों पर सुरक्षा अभियंत्रण विभाग के द्वारा जनमानस के लिए सड़क सुरक्षा जागरूकता का विशेष अभियान चलाया गया। बोकारो स्टील सिटी के चार प्रमुख चौराहों बीजी एच गाँधी चौक पत्थर कट्टा तथा राम मंदिर चौराहे पर एनसीसी के लगभग 60 बच्चों के द्वारा दो पहिया और चार पहिया वाहन चालकों के माथे पर तिलक लगा कर और टॉफी देकर वहां चालकों से सड़क सुरक्षा समबन्धित नियमों का पालन करने का अनुरोध किया गया। मौके पर बच्चों के साथ एनसीसी ऑफिसर जेपी पांडेय एसएस यादव सुरक्षा अभियंत्रण विभाग बीएसएल सिक्योरिटी विभाग के अधिकारीगण तथा कर्मचारी मौजूद थे। सुरक्षा अभियंत्रण विभाग के जीएम विकास गुप्ता वरीय प्रबंधक प्रमोद कुमार सिंह के नेतृत्व में बोकारो नगर में सड़क सुरक्षा रथ का परिचालन भी किया गया।

22 जनवरी को फुसरो नप क्षेत्र मे बाइक रैली निकाली जाएगी : राजन

बेरमो। 22 जनवरी को फुसरो नप क्षेत्र मे बाइक रैली निकाली जाएगी। रैली के पश्चात विशाल भंडारा का आयोजन किया जायेगा। उक्त बाते एसोसिएशन के अध्यक्ष राजन साव ने मंगलवार को अमलो स्थित एसोसिएशन कार्यालय मे कही। कहा कि रामलला मंदिर प्राण.प्रतिष्ठा महोत्सव को लेकर पूरे देश में उत्साह है। इस महोत्सव की तैयारियां जोर-शोर से चल रही है। 22 जनवरी को सुबह फुसरो शहर में भी भगवान राम नाम के जयकारों के साथ नगर परिक्रमा के रूप में विशेष बाइक रैली निकलेगीए जो घर-घर में इस उत्सव का संदेश देगी। मौके पर धर्मेंद्र सिंह, सत्येंद्र सिंह, धर्मेंद्र यादव, नवीन सिंह, छोटे सिंह, पंकज सोनी, कुंदन सोनी, सुनील दुबे, बैकुंठ सिंह, अखिलेश प्रसाद साहू, मनीष यादव, बंटी सिंह, सुरेंद्र प्रसाद सोनी, राजीव कुमार सिंह, मेघी महतो, संतु ठाकुर, रामेश्वर मिश्रा, टप्पू मिश्रा, अंकित मिश्रा, टिंकू महतो, शिवलाल, बीरेंद्र साहू, रूपलाल महतो, पिंटू महतो, दिनेश यादव, सुनील दुबे, जितेंद्र सिंह नाजू आदि मुख्य रूप से उपस्थित हुए।

फुटलाही में सलखू ओहदार टुसू परब पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन

बोकारो/कसमार। कसमार प्रखंड के फुटलाही खांजो नदी किनारे आयोजित सलखू ओहदार टुसू मेला में कसमार ओरमो मधुकरपुर सुरजुडीह चंडीपुर बरईकला हंसलता कुलागूजू बेमरोटांड़ समेत आसपास के गांवों के लोग उमड़ पड़े।

एसएमएस एवं सीसीएस में सड़क सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

खबर मन्त्र संवाददाता

बोकारो। बोकारो स्टील प्लांट के एसएमएस टू एवं सीसीएस विभाग में 20 जनवरी तक सड़क सुरक्षा जागरूकता पर एक विशेष अभियान के रूप में चलने वाले वाले कार्यक्रम का शुभारम्भ ईडी संकार्य बीके तिवारी द्वारा सीजीएम सुरक्षा व अग्निशमन बीके सरतापे व सीजीएम एसएमएस टू एवं सीसीएस अरविन्द कुमार जीएम एवं डीएसओ अशोक कुमार वरीय अधिकारी तथा विभाग के कर्मचारियों की उपस्थिति में किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों ने सुरक्षा शपथ ली उसके बाद उन्हें सड़क सुरक्षा के विभिन्न पहलुओं के बारे में विस्तृत रूप से बताया गया। आज से शुरू किये गए इस कार्यक्रम में अलग अलग दिन विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जायेगा।

गरीब असहाय की सेवा करना पुण्य का काम : राकेश

- समाजसेवी ने किया कंबल का वितरण

खबर मन्त्र संवाददाता

गढ़वा। शहर के सोनपुरवा स्थित एसएनसी होटल के प्रांगण में मकर संक्रांति के अवसर पर 500 जरूरतमंदों के बीच कंबल, चूड़ा व गुड़ का वितरण किया गया। यह कंबल, चूड़ा व गुड़ का वितरण एसएनसी होटल के संचालक राजीव चैबे व युवा समाजसेवी सह प्रतिष्ठित व्यवसायी राकेश पाल के सहयोग से किया गया। इस अवसर पर युवा समाजसेवी सह प्रतिष्ठित व्यवसायी राकेश पाल ने कहा कि वर्तमान समय मे ठंड का प्रकोप बढ़ गया है। ऐसे में गरीब व असहाय लोगों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता

कार्यक्रम में उपस्थित राकेश पाल एवं राजीव चैबे।

है। गरीब व असहाय लोगों की परेशानी को देखते हुए आज उक्त कार्यक्रम के तहत जरूरतमंद के बीच कंबल वितरण किया गया। ताकि गरीब व असहाय लोगों को राहत मिल सके। उन्होंने कहा कि गरीब व असहाय लोगों की मदद करने से पुण्य मिलता है। एसएनसी होटल के संचालक राजीव चैबे ने कहा कि वर्तमान समय में जिला मुख्यालय सहित विभिन्न क्षेत्रों में ठंड का प्रकोप बढ़ गया है। जिले का न्यूनतम तापमान पांच डिग्री सेल्सियस पर पहुंच गया है। ऐसे में गरीब व असहाय लोगों को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। गरीब व असहाय लोगों की परेशानी को देखते यह कंबल वितरण किया गया। उन्होंने कहा कि चार वर्ष पूर्व यह कार्यक्रम शुरू की गई थी। इस कायर्क्रम का मुख्य उद्देश्य जरुरतमंद को राहत पहुंचाना है। कार्यक्रम के दौरान रामनाथ गौड़, सुषमा देवी, लालती देवी, उपेंद्र पासवान, कुमारी देवी, देवंती कुंवर, अनिल गौड़, अनीता देवी, लक्ष्मी देवी, मुन्नी देवी, दीनानाथ गौड़, पूनम देवी सहित 500 लोगों के बीच कंबल, चूड़ा व गुड़ का वितरण किया गया। मौके पर बैजनाथ सिंह, संतोष मिश्रा, गौरव कुमार, हिमांशु मिश्रा, मयंक कुमार, दिनेश कुमार, सुमित कुमार सहित कई लोग उपस्थित थे।

सफल वार्ता के बाद 19 घंटो से चल रहा धरना हुआ समाप्त

- मृतक के आश्रितों को मिलेगा नौकरी और मुआवजा

खबर मन्त्र संवाददाता

बेरमो/गोमिया। इंटेक टावर में पंप ऑपरेटर के पद पर कार्यरत कृष्ण कुमार बेसरा, 40 वर्षीयद्ध की रविवार रात ड्यूटी जाने के दौरान सड़क हादसे में मौत हो गयी थी। इसके बाद परिजन और ग्रामीण कंपनी से रोजगार और मुआवजे की मांग को लेकर इंटेक टावर के निकट शव के साथ धरना पर बैठ थे। आईपीईएल बारूद कंपनी के प्रबंधक ने 15 जनवरी की रात धरने पर बैठे लोगों के साथ त्रिपक्षीय वार्ता की। जिसमें नौकरी और मुआवजे को लेकर लिखित आश्वासन दिया गया। इसके बाद 19 घंटे से जारी धरना समाप्त हो गया। त्रिपक्षीय समझौता वार्ता में प्रबंधन के रोशन सिन्हाए सीओ प्रदीप कुमार महतो, बीडीओ महादेव महतो, इंस्पेक्टर

महेश प्रसाद सिंह, थाना प्रभारी देवानंद कुमार एवं जनप्रतिनिधि शामिल थे। मौके पर गोमिया विधायक डॉ लंबोदर महतो, दर्जा प्राप्त मंत्री सह पूर्व विधायक योगेंद्र प्रसाद, सीओ प्रदीप कुमार महतो, जिला परिषद सदस्य डॉ सुरेंद्र राज, गोमिया थाना प्रभारी राजेश रंजन, कथारा ओपी प्रभारी प्रिंस कुमार, मुखिया बंटी उरांव, मुखिया शांति देवी, पंसस प्रतिनिधि धनेश्वर रविदास, पूर्व प्रमुख गुलाब हांसदा, वार्ड सदस्य राजकुमारी देवी, समाजसेवी सोना राम बेसरा, मृतक कृष्ण कुमार बेसरा की पत्नी शीला बेसरा को वेतन का 90% जो कि लगभग 13500 प्रति महीना ताउम्र एम्प्लोयी स्टेट इंश्योरेंस कॉरपोरेशन, के नियमों व प्रावधानों के अनुसार मिलने वाले पेंशन को यथाशीघ्र निर्गत कराने में कंपनी सहायता करेगी। वही एम्प्लाइज डिपॉजिट लिंक्ड इंश्योरेंस स्कीम के तत्वाधान में लगभग 4 लाख भुगतान नियम एवं प्रावधानों के अंतर्गत करवाया जायेगा।

किराना दुकान से अवैध अंग्रेजी शराब बरामद, दुकानदार गिरफ्तार

प्रेस कान्फ्रेंस करते प्रशिक्षु डीएसपी।

मेराल। गढ़वा जिला अंतर्गत मेराल थाना की पुलिस ने गोंदा मेन रोड स्थित एक किराना दुकान से भारी मात्रा में अंग्रेजी शराब जप्त किया है। पुलिस ने अवैध रूप से अंग्रेजी शराब बेचते हुए दुकान संचालक सुजीत कुमार को गिरफ्तार कर लिया। उसके दुकान से पुलिस ने विभिन्न कंपनियों के 24 बोतल विदेशी शराब, 20 पीस केन बियर तथा 7 बोतल देसी शराब बरामद किया है। मेराल थाना में पदस्थापित प्रशिक्षु डीएसपी चिरंजीवी मंडल ने मंगलवार को पत्रकार वार्ता कर यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सोमवार की शाम मिली गुप्त सूचना की सत्यापन के लिए तत्काल सशस्त्र बल के साथ पुलिस पदाधिकारियों की टीम गठित कर छापामारी की गई। सूचना के अनुसार किराना दुकान से भारी मात्रा में अवैध देषी तथा विदेशी शराब जप्त किया गया। साथ ही मौके पर संचालक सुजीत कुमार को गिरफ्तार कर लिया गया। श्री मंडल ने बताया कि जप्त शराब और गिरफ्तार सुजीत कुमार के खिलाफ थाना में कांड दर्ज करते हुए न्यायिक हिरासत में भेजा दिया गया है। प्रशिक्षु डीएसपी चिरंजीवी मंडल के नेतृत्व में गठित छापामारी दल में पुलिस अवर निरीक्षक नीतीश कुमार, सुरजीत चैधरी, सुमन कुमार शर्मा, संजय हेंब्रम, सअनि रामायण सिंह, हवलदार मनोज राम तथा रिजर्व गार्ड के आरक्षी जितेंद्र कुमार शामिल थे।

यज्ञ को लेकर प्रचार वाहन रवाना

खबर मन्त्र संवाददाता

बेरमो/गोमिया। गोमिया प्रखंड अंतर्गत स्वांग महावीर स्थान के शिव मंदिर में विश्व कल्याण के लिए श्रीश्री 108 रुद्र महायज्ञ को लेकर प्रचार-प्रसार शुरू कर दिया गया है। इस पांच दिवसीय धार्मिक कार्यक्रम को लेकर सहायतार्थ राशि संग्रह के लिए वाहनों को रवाना किया गया। मंगलवार को मंदिर परिसर में पूजन के बाद मंदिर कमेटी सदस्यों ने महायज्ञ प्रचार वाहनों को रवाना किया। वाहन कई गांवों का भ्रमण कर महायज्ञ सहायतार्थ लोगों से राशि संग्रह करने के साथ धार्मिक कार्यक्रम का प्रचार करेगा। वैदिक यज्ञ निर्देशक पंडित श्री चंदन

शास्त्री, श्री कृष्णानंद शास्त्री, यज्ञ आचार्य पूज्य श्री संजय पाण्डेय, मंदिर पुजारी श्री आदित्य पाण्डेय सहित अनेक ब्राह्मण शामिल होंगे। यह अनुष्ठान 12 से 16 मार्च तक चलेगा। मौके पर आदित्य पाण्डेय निर्मल निषाद, गुड्डू केवट, विकास रवानी, रवि चौहान, संजय सिंह, विनोद चौहान, करु चौहान, विक्की कुमार, करण वर्मा तथा शिव मंदिर समिति एवं एमबीएस क्लब सहित अनेक महिला-पुरुष श्रद्धालु मौजूद थे।

भाजपा के कुमार अमित ने टूनार्मेंट के विजेताओं को किया सम्मानित

खबर मन्त्र संवाददाता

बोकारो। स्थानीय सेक्टर नौ बड़ा खटाल के जय माता दी मैदान में आयोजित सात दिवसीय सूरज मेमोरियल क्रिकेट टूनार्मेंट के फाइनल मैच में बमबम एलेवन टीम ने केएसपी इलेवन को छह विकेट से पराजित कर टूनार्मेंट को जीता। टूनार्मेंट में कुल सोलह टीमों ने हिस्सा लिया। फाइनल मैच के मुख्य अतिथि भाजपा के प्रदेश कार्यसमिति सदस्य कुमार अमित ने विजेता और उपविजेता टीम को ट्रॉफी और खिलाड़ियों को मेडल देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर कुमार अमित ने कहा कि बोकारो क्रिकेट के क्षेत्र में आगे

बढ़ रहा है। बोकारो के खिलाड़ी आदित्य सिंह और कुमार कुशाग्र का क्रमश रणजी और आइपीएल में चयन हुआ है जो बोकारो के लिए गर्व का विषय है। इस टूनार्मेंट का मैन ऑफ द सिरीज श्री रसल हुए जबकि मैन ऑफ द मैच सन्नी को दिया गया। मौके पर टूनार्मेंट के आयोजक विक्रम यादव नवल यादव धर्मेन्द्र यादव नितिश कुमार पिंटू मुकेश रवि यादव संजय यादव बैद्यनाथधाम यादव आनंद लालबाबू चंद्रप्रकाश शंकर सत्येन्द्र गुप्ता अमित गिरि जानकी यादव आदि एवं बड़ी संख्या में दर्शक उपस्थित थे।

विधायक ने किया 61 लाख रुपये की लागत से बनने वाली सड़क निर्माण कार्य का शिलान्यास

खबर मन्त्र संवाददाता

कांडी। प्रखंड अंतर्गत भंडरिया गांव स्थित भीम बराज एप्रोच रोड निर्माण कार्य का षिलान्यास विश्रामपुर-मझिआंव विधानसभा क्षेत्र के विधायक रामचंद्र चंद्रवंशी ने मंगलवार को पूजा अर्चना कर व नारियल तोड़कर किया। जिला अनाबद्ध योजना अंतर्गत भंडरिया मुख्य पथ से भीम बराज तक लगभग 700 मीटर लम्बी सड़क 61 लाख 15 हजार रुपए की लागत से बनाया जाना है। ज्ञात हो कि कांडी,

मंचासीन विधायक।

बरडीहा एवं मझिआंव प्रखंड को पलामू के मोहम्मदगंज रेलवे स्टेशन से जोड़ने वाली भीम बराज एप्रोच रोड वर्षों से बदहाल पड़ी है। बारिश के मौसम में उक्त रोड में गड्ढा व कीचड़ भर जाने के कारण लोगों का आना जाना मुश्किल हो जाता है। उक्त सड़क में लगातार लोग दुर्घटनाग्रस्त भी होते रहे हैं। भीम बराज एप्रोच रोड बनने की खबर से लोग काफी उत्साहित हैं। उक्त सड़क के बन जाने से कांडी, बरडीहा एवं मझिआंव प्रखंड सहित इर्दगिर्द के हजारों लोगों को मोहम्मदगंज रेलवे स्टेशन पहुंचने में काफी सहूलियत होगी। वार्ड सदस्य सत्यम सिंह ने विधायक को फूल माला पहनाकर एवं अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया।

मौके पर विधायक श्री चंद्रवंशी ने कहा कि क्षेत्र के कई सड़कें बनवाने का काम किया हूं और शेष कई छोटे मोटे सड़कों का टेंडर होने वाला है। विधायक ने भंडरिया गांव का एक और सड़क जो गांव का मुख्य सड़क को बनवाने का आष्वाशन दिया। मौके पर राणाडीह मुखिया ललित बैठा, जिप सदस्य नेहा कुमारी, वार्ड सदस्य सत्यम सिंह, भाजपा नेता रामलाला दुबे, शशिरंजन दुबे, मणिकांत सिंह, रविंद्र चंद्रवंशी, सीताराम तिवारी, राजेंद्र पांडेय, संतोष सिंह, सुदामा सिंह, गिरवर सिंह, लव सिंह, सिद्धि सिंह, ललन सिंह, धन्नजय सिंह सहित अन्य कई लोग उपस्थित थे।

पेज 1 का शेष

इडी के नाम पर...

उन्होंने कहा कि संशय को खत्म करना जरूरी है। ईडी को क्या-क्या पूछना है, यह बताना होगा। उन्होंने कहा कि कैबिनेट के फैसले के हिसाब से मंगलवार को सीएम के प्रेस सलाहकार अभिषेक प्रसाद इडी दफ्तर नहीं गये। सुप्रीयो भट्टाचार्य ने कहा कि राजनीतिक कार्यकर्ता के रूप में इडी काम कर रही है। ऐसे में हमें भी ईडी का मुकाबला राजनीतिक रूप से ही करना होगा। अगर राजनीतिक लड़ाई भाजपा की जगह इडी लड़ेगी तो हमें भी वही करना होगा। ऐसे नहीं चलेगा। लोगों में आक्रोश है। यह आक्रोश कहीं वीभत्स रुप ना ले ले। इससे पहले यह जरूरी है कि इडी की विश्वसनीयता बनी रही। उसे तथ्यपरक बने रहना होगा। उनसे पूछा गया कि आप इडी को चेतावनी दे रहे हैं या सलाह। जवाब में सुप्रीयो ने कहा कि हमारा सलाह है कि उन्हें पारदर्शी होना चाहिए। उनसे पूछा गया कि क्या 20 जनवरी को लोगों का आक्रोश दिखेगा, जवाब में उन्होंने कहा कि मैं भविष्यवक्ता नहीं हूं।

प्रसिद्ध कोयला कारोबारी...

एक साथ कई ठिकानों पर रेड : इडी उनके रामगढ़ जिले के सांडी बोंगाबार हार्ड कोक फैक्ट्री में भी जांच करने के लिए पहुंची। मेसर्स ओम कोक इंडस्ट्रीज भी पहुंची। इडी की टीम ने वहां कागजातों का खंगाला। ओम कोक इंडस्ट्रीज के प्रबंधक हरिनाथ महतो से पूछताछ की गयी। सूचना के मुताबिक, इडी इंडस्ट्रीज से दस्तावेजों को अपने कब्जे में लिया है। मंगलवार को उनके रामगढ़ के अलावा हजारीबाग के ठिकानों पर भी इडी ने छापेमारी की। इजहार अंसारी के पेलावल थाना इलाके में मौजूद उनके आवास पर भी इडी की टीम ने दस्तक दी।

हाइकोर्ट ने केंद्र से पूछा...

वहीं प्रतिवादियों की ओर से कहा गया था कि सेना की ओर से जिस गाइडलाइन का हवाला दिया जा रहा है, वह वर्ष 2022 का है, जो इसमें अप्लाई नहीं होता है। वर्ष 2016 का गाइडलाइन इसमें अप्लाई होता है। जिसमें कहा गया है कि सेना की जमीन से 10 मीटर की दूरी पर किसी बिल्डिंग का निर्माण कार्य हो सकता है। जो बिल्डिंग का निर्माण कार्य हो रहा है वह सेना की जमीन से 45 मीटर से ज्यादा दूरी पर है।

अयोध्या पहुंची 108 फीट...

खबर पाकर ननिहाल से लौटे भरत प्रभु श्रीराम को चित्रकूट से अयोध्या वापस लाने की मनुहार की इच्छा असफल रहने पर श्रीराम जी की चरण-पादुका (खड़ाऊँ) को शीर्ष पर रखकर वापस अयोध्या लौटे। उसी चरण-पादुका को राज्य सिंहासन पर विराजमान कर 14 वर्षों तक अयोध्या की सत्ता चलाने का काम किया था। यात्रा मंगलवार को मंझनपुर, कौशाम्बी से गुजरते हुए रात्रि प्रवास प्रयागराज में करेगी। जहाँ भव्य, दिव्य प्रस्तुतियाँ संस्कृति विभाग की विख्यात कलाकारों द्वारा करायी जायेगी। 17 जनवरी को राम भक्तों एवं सांस्कृतिक कलाकारों, साधु सन्तों एवं स्वयंसेवकों के साथ हजारों की संख्या में यह यात्रा प्रयागराज नगर भ्रमण करती हुई सायंकाल ऐतिहासिक रामकेवट स्थल श्रृंग्वेरपुर पहुंचेगी। 19 जनवरी को अपने अन्तिम पड़ाव नन्दीग्राम अयोध्या शाम छह बजे पहुँचेगी। इस यात्रा का समापन प्रदेश के पर्यटन एवं संस्कृति जयवीर सिंह द्वारा किया जायेगा। समापन कार्यक्रम के बाद श्रीराम गमन पथ यात्रा की चरण-पादुका को श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास के पदाधिकारियों को सौंप दी जायेगी।

बिहार में 94 लाख गरीब परिवारों को मिलेंगे दो-दो लाख

एजेंसी

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की अध्यक्षता में मंगलवार शाम मंत्रिमंडल की बैठक में राज्य सरकार ने लोकसभा चुनाव के मद्देनजर बड़ा दाव खेला है। बिहार सरकार गरीबी रेखा से नीचे रह रहे 94 लाख परिवारों में एक-एक सदस्य को दो लाख रुपये अनुदान देगी। बिहार कैबिनेट ने इस पर मुहर लगा दी है। दो वित्तीय वर्ष के लिए 1250 करोड़ रुपये की स्वीकृति भी दे दी गई है। जाति आधारित गणना के अनुसार बिहार में गरीब परिवारों की संख्या 94 लाख से अधिक है। बिहार सरकार अगले 5 वर्षों में प्रत्येक गरीब परिवार को कम से कम एक सदस्य को रोजगार के लिए प्रेरित करेगी। इसके लिए अधिकतम दो लाख अनुदान की राशि तीन किस्तों में दी जाएगी, जिससे वे लघु उद्योग स्थापित कर सकें। इससे उनके परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। नीतीश कैबिनेट ने बिहार लघु उद्यमी योजना के प्रस्ताव पर सहमति प्रदान की है। यह योजना अगले पांच वर्षों के लिए दी गई है। वित्तीय वर्ष 2023-24 में ढाई सौ करोड़ रुपये, 2024-25 में 1000 करोड़ रुपये यानी कुल 1250 करोड़ रुपये की राशि की प्रशासनिक स्वीकृति दी गई है। दिल्ली स्थित बिहार निवास का पुनर्विकास होगा। इसके लिए 121 करोड़ 83 लाख रुपये की राशि की स्वीकृति दी गई है। बिहार उद्यान अधीनस्थ सेवा के प्रखंड उद्यान पदाधिकारी भर्ती, प्रोनत्ति एवं सेवा शर्त नियमावली 2024 की स्वीकृति दी गई है। दुर्गावती जलाशय परियोजना का पंचम पुनरीक्षित राशि 1263 करोड़ 30 लाख रुपये की प्रशासनिक स्वीकृति दी गई है। एनएच प्रमंडल मोतिहारी के तत्कालीन सहायक अभियंता मोहम्मद गजनफर को लगातार अनुपस्थित रहने के आरोप में सेवा से बर्खास्त किया गया है। सरकार के स्वामित्व वाले बीमा रहित मोटर वाहनों से हुई दुर्घटना में मृतक के आश्रितों को पांच लाख तथा गंभीर रूप से घायलों को ढाई लाख रुपये मुआवजा दिया जाएगा।

कैबिनेट का फैसला

- गरीबी रेखा से नीचे रह रहे लोगों को दो लाख रुपये अनुदान देगी सरकार
- लघु उद्यमी योजना को भी मंत्रिमंडल ने दी मंजूरी
- दिल्ली स्थित बिहार निवास का होगा पुनर्विकास

किडनी प्रत्यारोपण के बाद मिलेंगे 16 हजार

किडनी प्रत्यारोपण के बाद मरीज के दवा सेवन के लिए पहले साल में दो लाख 16,000 रुपये मिलेंगे। चिकित्सीय अनुदान की स्वीकृति दी गई है। प्रथम वर्ष के लिए 6-6 महीने पर दो किस्तों में इस राशि का भुगतान होगा।

कैबिनेट ने इस पर मुहर लगा दी है इसके अलावा 19 अगस्त, 2020 को कैबिनेट में स्वीकृत बिहार काश्त आधारित उद्योग अध्यादेश 2020 के प्रस्ताव को वापस लिया गया है। राज्य के गरीब परिवारों के आर्थिक विकास के लिए बिहार लघु उद्यमी योजना की स्वीकृति दी गई है। मोकामा नगर परिषद क्षेत्र से जल निकासी के लिए 40 करोड़ 56 लाख 15 हजार 100 रुपये की स्वीकृति दी गई है। इसके लिए बुड़को को कार्यकारी एजेंसी नियुक्त किया गया है। जल संसाधन विभाग के मुख्य अभियंता संजय कुमार ओझा 31 जनवरी को सेवानिवृत हो रहे हैं उन्हें एक साल के लिए मानदेय पर रखा गया है। मुख्यमंत्री अत्यंत पिछड़ा वर्ग सिविल सेवा प्रोत्साहन योजना के तहत पूर्व में सम्मिलित परीक्षाओं के अलावा अब यूपीएससी, केंद्रीय कर्मचारी चयन आयोग, विभिन्न राज्य के लोक सेवा आयोग, विभिन्न बैंकिंग सेवा भर्ती बोर्ड, आईबीपीएस तथा विभिन्न रेलवे भर्ती बोर्ड द्वारा आयोजित प्रतियोगिता (प्रारंभिक) परीक्षा को सम्मिलित किया गया है। इस परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले राज्य के अत्यंत पिछड़ा वर्ग के अभ्यर्थियों को निर्धारित दर के अनुसार प्रोत्साहन राशि दी जाएगी। इसके लिए 9 करोड़ 79 लाख 50 हजार रुपये के अनुमानित वार्षिक व्यय की स्वीकृति दी गई है। बिहार राज्य पिछड़ा वर्ग वित्त एवं विकास निगम में कुल वार्षिक व्यय 71 लाख 61 हजार 240 रुपये पर 7 नए पदों के सृजन एवं प्रशासनिक संरचना के पुनर्गठन की स्वीकृति दी गई है। बिहार सरकार की गाड़ी से दुर्घटना होने पर मृतकों के आश्रितों और घायलों को मुआवजा देने का फैसला लिया गया है। कैबिनेट की बैठक में कहा गया कि जिन गाड़ियों की मालिक राज्य सरकार होती है, उसका बीमा नहीं होता है। इस स्थिति में राज्य सरकार के स्वामित्व वाले वाहन से दुर्घटना होने की स्थिति में मृतकों के आश्रितों या घायल को मुआवजा भुगतान किये जाने में कठिनाई होती है। अब सरकार ने फैसला लिया है कि सरकारी गाड़ी से दुर्घटना होने पर तत्काल मुआवजा दिया जायेगा। राज्य सरकार ने फैसला लिया है कि सरकारी स्वामित्व वाले मोटर वाहनों से हुई दुर्घटना में मृत्तक के आश्रितों को तत्काल 5 लाख रुपये दिया जायेगा। वहीं, ऐसी दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल पीड़ितों या उनके आश्रितों को 2 लाख 50 हजार रुपये का मुआवजा दिया जायेगा।

अयोध्या में आतंकी हमले का खतरा, यूपी पुलिस हुयी अलर्ट

एजेंसी

- होटल, गेस्ट हाउस और ढाबा में हो रही है चेकिंग
- अयोध्या में तीन डीआइजी, 17 आइपीएस,100 पीपीएस स्तर के अधिकारी तैनात

लखनऊ। अयोध्या में श्रीरामलला की प्राण प्रतिष्ठा को लेकर मंगलवार से अनुष्ठान के कार्यक्रम शुरू कर दिए गए हैं। इसी बीच देश की सुरक्षा जांच एजेंसियों ने राम मंदिर के उद्घाटन से पहले आतंकी हमले की साजिश को लेकर यूपी पुलिस को अलर्ट किया है।

पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी के मुताबिक खुफिया एजेंसियों की तरफ से जारी अलर्ट में कहा गया है कि आतंकवादी अयोध्या में कोई बड़ी आतंकी घटना को अंजाम देने की साजिश रच रहे हैं। आतंकी यहां पर किसी भी वेशभूषा में आ सकते हैं, लिहाजा कार्यक्रम स्थल और आसपास के क्षेत्र में सुरक्षा व्यवस्था का व्यापक इंतजाम किया जाए।

खुफिया एजेंसी की इस सूचना के बाद यूपी पुलिस और यहां की लोकल जांच एजेंसी, एटीएस, एसटीएफ, एलआईयू अलर्ट मोड पर आ गयी है। अयोध्या या फिर उससे सटे जनपद, सुलतानपुर, बाराबंकी, गोंडा, बस्ती और लखनऊ में पुलिस सतर्क है। होटल, गेस्ट हाउस, ढाबा में चेकिंग की जा रही है। अयोध्या आने वाले सभी मार्गों पर सघन वाहनों की चेकिंग की जा रही है। अयोध्या रेंज के आईजी प्रवीण कुमार ने बताया कि अयोध्या में सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम हैं। जिले में चप्पे-चप्पे पर नजर रखी जा रही है।

यूपी पुलिस की तरफ से तीन डीआईजी, 17 आईपीएस,100 पीपीएस स्तर के अधिकारी तैनात किए गए हैं। इनके साथ ही 325 इंस्पेक्टर, 800 सब इंस्पेक्टर और एक हजार से अधिक सिपाही की ड्यूटी लगायी गई है। पीएसी की चार कंपनियों को लगाया गया है। इसके लिए 10 हजार से अधिक स्थानों पर सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं। जिन लोगों के दुकान, घर में सीसीटीवी कैमरा लगा है उसे भी पुलिस कंट्रोल रूम से जोड़ा गया है। ड्रोन कैमरे का भी इस्तेमाल किया जाएगा। एसपीजी की निगरानी में सब काम होगा।

विश्व में किसी देश का मोहताज नहीं है भारत

अर्थव्यवस्था में दुनिया की पांचवीं महाशक्ति होना कोई छोटा काम नहीं : उपराष्ट्रपति

जयपुर। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने कहा है कि भारत आज राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से इतना बदल गया है कि वह अब विश्व में किसी देश का मोहताज नहीं रहा और अर्थव्यवस्था में दुनिया की पांचवीं महाशक्ति होना कोई छोटा काम नहीं है। श्री धनखड़ ने मंगलवार को विधानसभा में राजस्थान के नवनिर्वाचित विधायकों के लिए आयोजित एकदिवसीय प्रबोधन कार्यक्रम के उद्घाटन के बाद अपने संबोधन में यह बात कही। उन्होंने कहा कि भारत का दुनियां में नाम हो गया हैं और वह जिस मुकाम पर पहुंचा हैं, इन सब का निर्माण सदन करती है। इस बहुत बड़े हवन में जनप्रतिनिधि, नेतृत्व , नीति और आम आदमी का योगदान है। उन्होंने कहा कि आपके सामने चुनौती ज्यादा है क्योंकि जिस गति से भारत आगे बढ़ रहा है, दुनिया अचंभित है, दुनिया सोच नहीं पाई की क्या भारत में कभी ऐसा हो सकता था। कभी सोचा नहीं कि भारत का इंफ्रास्ट्रक्चर, टेक्नोलॉजिकल डेवलपमेंट

विकास स्तर का होगा। यह हर भारतीय के खून और पसीने का नतीजा है। नीतियां और समर्पण की भावना से है।

उन्होंने कहा कि किसी भी विकास की गंगा की शुरूआत विधायिका से होती है। विधायिका का सबसे प्रमुख कर्तव्य है कि विधायिका कार्यपालिका और न्यायपालिका दोनों को सही दृष्टिकोण में रखें। कार्यपालिका को सही रास्ता दिखाने में एवं कार्यपालिका नियम के अनुसार काम करें, यह सदन का कर्तव्य है। अगर सरकार को आइना दिखाया जाएगा तो सरकार के लिए बहुत लाभकारी होगा।

विकसित राष्ट्र बनने के लिए महिला सशक्तिकरण जरूरी

महिलाओं के अच्छे कार्यों पर सराहना की आवश्यकता : राष्ट्रपति

एजेंसी

नयी दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने मंगलवार को कहा कि देश को वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने के सपने को साकार करने के लिए सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और आध्यात्मिक क्षेत्रों में महिलाओं का सशक्तिकरण आवश्यक है।

श्रीमती मुर्मु ने मंगलवार को मेघालय के तुरा में बलजेक हवाई अड्डे पर स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों के साथ बातचीत की। उन्होंने तुरा में नए एकीकृत प्रशासन परिसर की आधारशिला भी रखी। राष्ट्रपति ने कहा कि देश को वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने के सपने को साकार करने के लिए सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और आध्यात्मिक क्षेत्रों में महिलाओं का सशक्तीकरण आवश्यक है। देश की महिलाएं

- मेघालय के तुरा में स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों से द्रौपदी मुर्मू ने की बात

अपनी पहचान बना रही हैं और प्रत्येक क्षेत्र में अन्य महिलाओं के लिए मार्ग प्रशस्त कर रही हैं। चाहे वह क्षेत्र रक्षा, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, खेल, शिक्षा, उद्यमिता, कृषि या कोई अन्य कोई भी क्षेत्र हो। महिलाओं को केवल कुछ प्रेरक शब्दों, प्रोत्साहन और अच्छे कार्यों पर सराहना की आवश्यकता है।

श्रीमती मुर्मु ने कहा कि महिला नेतृत्व-विकास का विचार तभी लागू किया जा सकता है जब महिलाओं को अपनी पसंद का चयन करने की स्वतंत्रता मिले। आर्थिक स्वतंत्रता के साथ, यह कुछ हद तक संभव हो पाया है। आर्थिक आत्मनिर्भरता से महिलाओं में आत्मविश्वास बढ़ता है। राष्ट्रपति ने कहा कि सरकार यह सुनिश्चित करने के लिए हर संभव प्रयास कर रही है कि महिलाएं देश के सामाजिक-आर्थिक विकास में सक्रिय रूप से और बड़ी संख्या में योगदान दें। कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी में सुधार के लिए कई कार्य किए गए हैं। सरकार ने न केवल महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए कई प्रयास किए हैं, बल्कि उनकी राजनीतिक भागीदारी सुनिश्चित करने की दिशा में भी बड़े कदम उठाए हैं। हालांकि, महिला सशक्तीकरण की दिशा में अभी भी एक लंबा रास्ता तय करना बाकी है। उन्होंने लोगों से आग्रह किया कि वे अपने आसपास की महिलाओं के नैतिक मूल्यों और गुणों को पहचानना शुरू करें और उनका समर्थन करें।

मुर्मु ने स्वयं-सहायता समूहों के सदस्यों से कहा कि वे विकास के मार्ग पर आगे बढ़े और अन्य महिलाओं को भी आगे बढ़ाएं। उन्होंने कहा कि यह अकेले उनकी यात्रा नहीं है, बल्कि देश में बड़ी संख्या में महिलाओं की यात्रा है, जिन्हें अभी भी अपने घरों की चारदीवारी से परे अवसरों का पता लगाना बाकी है। उन्हें अपने क्षेत्र और देश की अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणा बनना चाहिए।

एक नजर में

यूक्रेनी ड्रोन हमले के बाद रूस के वोरोनिश में इमरजेंसी का एलान

मास्को। यूक्रेन की ओर से किये गये ड्रोन हमले के बाद रूस के वोरोनिश शहर में मंगलवार को आपातकाल की स्थिति घोषित कर दी गई। मेयर वादिम कस्टेनिन ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा कि हमले से प्रभावित लोग, क्षतिग्रस्त मकान और चल संपत्ति को हुए नुकसान का आकलन एक आयोग करेगा।श्री कस्टेनिन ने कहा कि प्रभावित क्षेत्र के लोगों को पास के एक स्कूल में शरण दी गयी है और उन्हें सभी अनिवार्य सुविधाएं मुहैया करायी जा रही हैं।

इजरायल ने मिस्र की सीमा पर गोलीबारी की

यरूशलेम। इजरायल डिफेंस फोर्सेज (आईडीएफ) ने मंगलवार को कहा कि उसके सैनिकों ने मिस्र की सीमा पर नित्जाना क्रॉसिंग के पास हथियारबंद लोगों के एक समूह पर गोलियां चलाईं। आईडीएफ ने टेलीग्राम पर एक बयान में कहा कि थोड़ी देर पहले लगभग 20 संदिग्ध मिस्र के क्षेत्र से इजरायल के साथ सीमा के क्षेत्र की ओर पहुंचे। क्षेत्र में सक्रिय आईडीएफ सैनिकों ने सशस्त्र व्यक्तियों की ओर गोलीबारी की।

छत्तीसगढ़ में पांच लाख का इनामी नक्सली ढेर

रायपुर/दंतेवाड़ा। बारसूर थाना क्षेत्र के मंगनार क्षेत्र में सुरक्षाबलों और नक्सलियों के बीच मंगलवार शाम को हुई मुठभेड़ में पुलिस ने एक इनामी नक्सली ढेर कर दिया गया। मामले की पुष्टि अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक आरके बर्मन ने की है। दंतेवाड़ा पुलिस के अनुसार मुठभेड़ में जवानों ने एरिया कमांडर रतन को ढेर किया है। एरिया कमांडर रतन पर 5 लाख रुपये का इनाम घोषित था। एरिया कमांडर रतन कई बड़ी वारदातों को अंजाम देने का मास्टर माइंड था।

अब जनता के दरवाजे तक पहुंच रहा है योजनाओं का लाभ : राजनाथ सिंह

एजेंसी

अब भारत को ताकतवर देश माना जाता है : रक्षा मंत्री

लखनऊ। रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने मंगलवार को कहा कि जनता के दरवाजे तक सरकारी योजनाओं का लाभ पहुंचाने का काम प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में किया जा रहा है। कोई परिवार ऐसा नहीं होगा जिसे किसी न किसी योजना का लाभ ना मिला हो। राजनाथ सिंह लखनऊ के सीतापुर रोड स्थित मान लॉन में विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि पूरी दुनिया में पहले भारत को कमजोर माना जाता था। कहा जाता था कि ये गरीबों का देश है। अब भारत को मजबूत और ताकतवर

देश माना जाता है। इसका श्रेय प्रधानमंत्री मोदी को दिया जाना चाहिए। अपने संसदीय क्षेत्र लखनऊ के लोगों से प्रश्न करते हुए राजनाथ ने कहा कि मैं जो कुछ कर सकता था, उसे लखनऊ के लोगों के लिए किया है। मेरे काम से आप लोग संतुष्ट हैं या नहीं हैं। आप सभी लोग मुझे बताइये। ये देश मजबूत रहेगा और देशवासी मजबूत रहेंगे तो हम भी मजबूत रहेंगे।रक्षामंत्री ने कहा कि मोदी जब प्रधानमंत्री बने थे तब अर्थव्यवस्था के मामले में भारत 10वें स्थान पर था। अर्थव्यवस्था के मामले में भारत अब पांचवें स्थान पर पहुंच गया है। राजनाथ ने कहा कि देश-दुनिया के अर्थशास्त्री पूछते हैं कि प्रधानमंत्री मोदी क्या करिश्मा करते हैं। वो दिन दूर नहीं है, जब भारत टॉप थ्री देशों की सूची में भी शामिल हो जाएगा।

नायडू की याचिका पर सुप्रीम कोर्ट की बड़ी पीठ करेगी फैसला

नयी दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने आंध्र प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू की कौशल विकास केंद्रों की स्थापना में 3,300 करोड़ रुपये के कथित घोटाले के मामले में दर्ज प्राथमिकी रद्द करने की उनकी याचिका पर मंगलवार को विभाजित फैसला सुनाया। न्यायमूर्ति अनिरुद्ध बोस और न्यायमूर्ति बेला एम त्रिवेदी की पीठ ने वर्ष 2018 के भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम की धारा 17 ए की प्रयोज्यता पर निर्णय लेने के लिए एक बड़ी पीठ गठित करने के लिए मामले को शीर्ष अदालत के मुख्य न्यायाधीश के समक्ष भेजने करने का आदेश दिया।

डीप फेक पर सरकार सख्त

एजेंसी

अगले एक हफ्ते में नए संशोधित आईटी नियम जारी करेगा केंद्र

नयी दिल्ली। डीप फेक को रोकने के लिए केन्द्र सरकार ने सख्त कदम उठाते हुए नए संशोधित आईटी नियम लाने जा रही है। मंगलवार को इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री राजीव चंद्रशेखर ने कहा कि केंद्र सरकार अगले सात से आठ दिनों में नए संशोधित आईटी नियम जारी करने जा रही है। इसे जल्दी ही अधिसूचित किया जाएगा। मंगलवार को आयोजित संवाददाता सम्मेलन में राजीव चंद्रशेखर ने कहा कि हमने सभी सोशल मीडिया प्लेटफार्म को स्पष्ट रूप से कहा है कि उनके प्लेटफार्म पर अगर कोई डीप फेक सामग्री साझा की जाती है तो उसके लिए जिम्मेदारी उनकी है और अगर वे गलत सूचनाओं पर कार्रवाई नही करते तो सरकार सख्त कदम उठा सकती है। उन्हें ब्लॉक भी किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि सभी स्टेकहोल्डर के साथ डिजिटल इंडिया वार्ता के दो दौर किए हैं। हमने उनको मौजूदा नियमों से अवगत करवाया है। राजीव चंद्रशेखर ने कहा कि देश में मौजूदा समय में लाख स्टार्टअप बन चुके हैं और 112 यूनिकॉर्न बने हैं। आने वाले समय में स्टार्टअप की संख्या 10 लाख की जायेगी। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के 'गरीबी हटाओ' के खोखले नारे के 65 वर्षों के बाद, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने केंद्रित, मेहनती, दृढ़ और भ्रष्टाचार मुक्त शासन और कल्याण नीतियों के माध्यम से 25 करोड़ भारतीयों को गरीबी रेखा से बाहर निकाला है।

RDBA RANCHI ELECTION FOR THE SESSION -2024-26
Please cast your valuable
VOTE
for the post of
GENRAL SECRETARY
In favour of
ANIL KUMAR KANTH

Sl. No. 1

Chamber :- NEW BAR BHAWAN
Chamber No. S13 Third floor,
Civil Court, Ranchi, Jharkhand
Phone No. 9852219763,9304401200

ब्रेन डेड महिला ने दिया चार लोगों को नया जीवन

नयी दिल्ली। दिल्ली के सफदरजंग अस्पताल में दिमागी तौर पर मृत घोषित 62 वर्षीय महिला के परिवार ने उनके अंगदान का फैसला लिया, जिससे चार लोगों को नया जीवन मिलेगा। सफदरजंग अस्पताल की चिकित्सा अधीक्षक प्रोफेसर डॉ. वंदना तलवार ने बताया कि अस्पताल में लगभग साढ़े छह साल के अंतराल के बाद 16 जनवरी को दिमागी तौर पर मृत महिला के अंग प्राप्त हुए। 62 वर्षीय महिला कामिनी दिल्ली के तहखंड इलाके की रहने वाली थी। 13 जनवरी को ब्रेन हेमरेज के कारण होली फैमली अस्पताल में भर्ती कराया गया था, वहां से उसे सफदरजंग अस्पताल में रेफर कर दिया गया। महिला को डायबिटीज और उच्च रक्तचाप भी था। सोमवार को ब्रेन डेड घोषित होने के बाद महिला के बेटे और

मृत घोषित महिला के परिवार ने उनके अंगदान को दिया दान

बेटी ने उसके अंगों को दान करने का फैसला किया, जिसके बाद वह दिल्ली के सफदरजंग अस्पताल में कैडवेरिक मल्टी ऑर्गन डोनर बन गई। मृतक के बेटे ने बताया कि 15 जनवरी को उनकी मां का जन्मदिन था । बेटे ने बताया कि मां के अंगों को दान करने का निर्णय इसलिए लिया गया, क्योंकि वे चाहते थे कि उसकी मां को हमेशा याद किया जाए। वे आज इस दुनिया में नहीं है लेकिन उनके जन्मदिन के मौके पर उन्होंने चार अन्य लोगों को नया जीवन दिया है। मृतक के अंगों को चार 4 लोगों को दिया जाएगा। इसमें दो प्राप्तकर्ताओंको एक-एक कॉर्निया और 2 अन्य प्राप्तकताओं को किडनी और लीवर मिलने से उन्हें नया जीवन मिलेगा।

ऐश्वर्या राय की संपत्ति 800 करोड़

मुंबई। बॉलीवुड की टॉप अभिनेत्रियों में से एक ऐश्वर्या दौलत के मामले में भी टॉप पर आ गई हैं। ऐश्वर्या बच्चन ने संपत्ति के मामले में प्रियंका चोपड़ा, अनुष्का शर्मा, करीना कपूर, माधुरी दीक्षित को भी पीछे छोड़ दिया है। भारत की टॉप 10 सबसे अमीर अभिनेत्रियों की लिस्ट सामने आ गई है। इस मामले में ऐश्वर्या सबसे आगे हैं। नयनतारा इस लिस्ट में 10वें स्थान पर हैं। नयनतारा 100 करोड़ की मालकिन हैं। बॉलीवुड की सबसे अमीर अभिनेत्री ऐश्वर्या राय बच्चन की कुल संपत्ति 800 करोड़ रुपये है। इस बीच अफवाह थी कि ऐश्वर्या और अभिषेक का ब्रेकअप हो गया है। ऐसी भी अफवाहें थीं कि वे तलाक लेने वाले हैं, लेकिन इसके बाद दोनों को एक पार्टी में साथ देखा गया। इसके बाद इन अफवाहों पर विराम लग गया है।

राजस्थान के पूर्व मंत्री जोशी के ठिकानों पर ईडी ने की छापेमारी

जयपुर। जल जीवन मिशन घोटाले के संबंध में मंगलवार को पूर्व जलदाय मंत्री महेश जोशी और उनसे जुड़े लोगों के ठिकानों पर ईडी ने छापेमारी की। ईडी की टीम ने पूर्व मंत्री जोशी के दो आवासों, जलदाय विभाग के दो ठेकेदारों और दो अधिकारियों के ठिकानों पर छापा मारा है। इस घोटाले पर पिछले छह महीने से ईडी की टीमें जांच कर रही हैं। जयपुर, दिल्ली और गुजरात की दस टीमों ने मंगलवार सुबह छह बजे पांच लोगों के ठिकानों पर दबिश दी। ईडी की कार्रवाई जयपुर और बांसवाड़ा समेत कई इलाकों में चल रही है। इससे पहले भी इस घोटाले के सिलसिले में ईडी की टीम ने राजस्थान में 25 जगह छापा मारा था। इसमें महेश जोशी के कार्यालय और वरिष्ठ आईएएस अधिकारी सुबोध अग्रवाल के ठिकाने भी शामिल थे।

वर्मा प्रेस प्रा० लि० राँची
VERMA PRESS
Verma's® Today®
शृंखला की निम्न पुस्तकें सर्वत्र उपलब्ध हैं—

Class - X		Class - IX	
Hindi	₹ 140	Hindi	₹ 140
English	₹ 140	English	₹ 140
Mathematics	₹ 140	Mathematics	₹ 140
Science	₹ 140	Science	₹ 140
Social Science	₹ 140	Social Science	₹ 140
Sanskrit	₹ 120	Sanskrit	₹ 120
Hindi – B	₹ 140	Hindi – B	₹ 80
Hindi Vyakaran– II	₹ 120	Hindi Vyakaran– II	₹ 120
English Grammar II	₹ 120	English Grammar II	₹ 120
Sanskrit Vyakaran–II	₹ 100	Sanskrit Vyakaran–II	₹ 100
Hindi Practical	₹ 55	Hindi Practical	₹ 55
English Practical	₹ 55	English Practical	₹ 55
Maths. Practical	₹ 65	Maths. Practical	₹ 55
Science Practical	₹ 65	Science Practical	₹ 70
S. Science Practical	₹ 65	S. Science Practical	₹ 65
Sanskrit Practical	₹ 55	Sanskrit Practical	₹ 55
Maths. Practical (Combined)	₹ 90	Maths. Practical (Combined)	₹ 75
Science Practical (Combined)	₹ 90	Science Practical (Combined)	₹ 75
English Medium		English Medium	
Mathematics	₹ 200	Mathematics	₹ 130
Science	₹ 200	Science	₹ 200
Social Science	₹ 200	Social Science	₹ 130
Maths. Practical	₹ 80	Maths. Practical	₹ 80
Science Practical	₹ 80	Science Practical	₹ 80
S. Science Practical	₹ 80	S. Science Practical	₹ 80

मिलते जुलते नाम वाली नकली पुस्तकों से सावधान !